शर्मा हार्डवेयर
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947
70025-06581

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in

हिंदी दैनिक

गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

विकसित भारत समाचार

वर्ष : 09 | अंक : 308 | गुवाहाटी | बुधवार, 7 जून, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/

असम उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के परिणाम घोषित पेज 3
लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा ने तेज किया जनसंपर्क अभियान, बंगाल... पेज 4
अखिलेश यादव ने लखीमपुर से लोक जागरण यात्रा का किया शुभारंभ पेज 5
प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पूरे विश्व में बढ़ी भारत की साख : बिप्लब देव पेज 8

मणिपुर हिंसा : गोलीबारी में बीएसएफ जवान शहीद, दो घायल

सुगनू-सेरो से भारी मात्रा में गोला-बारुद बरामद, 10 जून तक इंटरनेट बैन

इंफाल (हि.स.)। मणिपुर के सेरोउ इलाके में विद्रोहियों और सुरक्षाबलों के बीच रुक-रुक कर हो रही फायरिंग में में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का एक जवान बलिदान हो गया। साथ ही असम राइफल्स के दो जवान घायल हुए है। यह जानकारी सेना ने दी है। मंगलवार को सेना के स्पीयर कॉर्प्स मुख्यालय डिमापुर ने ट्विट कर कहा कि बताया कि असम राइफल्स, बीएसएफ और पुलिस ने मणिपुर के सुगनू/सेरोउ इलाकों में व्यापक तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान सुरक्षाबलों और विद्रोही समूह के बीच 5 व 6 जून की पूरी रात रुक-रुक कर फायरिंग हुई। सुरक्षाबलों ने इसका प्रभावी ढंग से जवाब दिया। विद्रोहियों की फायरिंग में बीएसएफ का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसकी बाद में मौत हो गई। वहीं, असम राइफल्स के दो जवानों को सेरोउ इलाके में गोली लगी। सूत्रों ने बताया कि असम राइफल्स के दोनों घायल जवानों को विमान से मंत्रीपुखरी ले जाया गया। साथ ही इलाके में सघन तलाशी अभियान जारी है। उल्लेखनीय है कि मणिपुर में मैतेई और कुकी जनजातियों के बीच सामुदायिक संघर्ष का सूत्रपात गत 3 मई से आरंभ हुआ, जिसके चलते राज्य के विभिन्न हिस्सों में अभी भी रह रहकर हिंसा की खबरें सामने आ रही हैं। सेना ने आगे बताया है कि प्रारंभिक तलाशी के दौरान सामान्य क्षेत्र से दो एके सीरीज राइफलें, एक 51 मिमी मोर्टार, दो कार्बाइन, गोला-बारूद और युद्ध के सामान बरामद किए गए है। भारतीय सेना के अनुसार, क्षेत्र को साफ करने के लिए अभियान जारी है। हिंसा के बीच मणिपुर की सरकार ने इंटरनेट पर प्रतिबंध को 10 जून तक के लिए बढ़ा दिया है। राज्य में तीन मई से इंटरनेट पर प्रतिबंध लगा हुआ है। आयुक्त (गृह) एच ज्ञान प्रकाश द्वारा जारी एक आदेश में कहा गया है कि ब्रॉडबैंड सहित मोबाइल डेटा सेवाओं का निलंबन 10 जून की दोपहर तीन बजे तक जारी रहेगा। राज्य में एक महीने पहले भड़की जातीय हिंसा में करीब 98 लोगों की जान चली गई थी और 310 अन्य घायल हो गए थे। कुल 37,450 लोग वर्तमान में 272 राहत शिविरों में शरण लिए हुए हैं। मेइती समुदाय -शेष पृष्ठ दो पर

12वीं परीक्षा परिणाम : कला संकाय में संकल्पजीत शीर्ष पर, टॉप टेन में नगांव के रामानुजन स्कूल के आठ छात्र

गुवाहाटी (हि.स.)। असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने असम उच्चतर माध्यमिक अंतिम वर्ष (12वीं) परीक्षा के परिणाम मंगलवार को घोषित कर दिए। कला संकाय में संकल्पजीत सैकिया, विज्ञान संकाय में हाजोर रामदिया के निखिलेश दत्ता और वाणिज्य संकाय में दो छात्रों ने पहला स्थान हासिल किया है। असम हायर सेकेंडरी अंतिम वर्ष की परीक्षा के कला संकाय में टॉप 10 स्थानों में 15 छात्रों स्थान बनाया है। इनमें से आठ छात्र नगांव के रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल के हैं। कला संकाय में रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव संकल्पजीत सैकिया (490) पहला स्थान पर रहे हैं। दूसरे स्थान रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव की दीया महंत (488), तीसरे स्थान इंस्टीट्यूशनल प्राइवेट की श्रेया सरकार (487), चौथे स्थान पर सुक्लेनमुंग चेतिया (486), रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव, पांचवे स्थान पर शेख सानिया तसनीम रहमान (482), रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव, छठे -शेष पृष्ठ दो पर

ट्रेन हादसा : रेलमंत्री की अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक

नई दिल्ली। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को एक साथ कई उच्च स्तरीय बैठकें की। रेल मंत्री ओडिशा के बालेश्वर में ट्रेन हादसे के बाद बचाव और बहाली कार्यों की समीक्षा करके लौटे हैं। इसके बाद उनका बैठकों का दौर जारी है। सूत्रों ने बताया कि रेल मंत्री वैष्णव मंगलवार शाम को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए सभी जोनल रेलवे के महाप्रबंधकों से बात करेंगे। सूत्रों ने कहा कि बैठक रेलवे नेटवर्क में सिग्नलिंग और दूरसंचार पर विशेष ध्यान देने के साथ क्षेत्रों में सुरक्षा अभ्यास -शेष पृष्ठ दो पर

असम-अरुणाचल सीमा पर गोलीबारी के आरोप में पांच गिरफ्तार

इटानगर। अरुणाचल प्रदेश के निचला सियांग जिले में असम से लगी राज्य की सीमा पर गोलीबारी की घटना के सिलसिले में मंगलवार को पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस प्रवक्ता रोहित राजबीर सिंह ने बताया कि आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है और उन्हें लिकाबली पुलिस थाने में रखा गया है। उन्होंने बताया कि उनकी पहचान बागम तासो, इगिप तासो, मिकजोम तासो, बोम्पर तासो और योंगम न्गुबा के रूप में हुई है। उन्होंने कहा कि पुलिस घटना में इस्तेमाल किए गए हथियारों को बरामद करने की कोशिश कर रही है और सच्चाई का पता लगाने के लिए पूछताछ जारी है। असम के धेमाजी जिले में सोमवार को अंतर्राज्यीय सीमा -शेष पृष्ठ दो पर

পূৰ্বাঞ্চল কেশৰী
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

जुनमोनी की मौत : सीआईडी का अभयज्योति राभा, रूपज्योति कलिता को समन

गुवाहाटी। असम पुलिस के दागी अधिकारी अभयज्योति राभा और रूपज्योति कलिता मंगलवार को अपराध जांच विभाग (सीआईडी) के कार्यालय पहुंचे। मोरीकोलॉन्ग सब-इंस्पेक्टर (एसआई) जुनमोनी राभा की मौत की जांच के दौरान दोनों अधिकारियों के नाम सामने आए थे। मिली जानकारी के मुताबिक असम पुलिस की सीआईडी, जिसे मामले की जांच का जिम्मा सौंपा गया है, दोनों अधिकारियों को अपने कार्यालय में पेश होने के लिए तलब किया था। सूत्रों ने बताया कि दोनों अधिकारियों को मृतक जुनमोनी राभा की मां से रू-ब-रू कराया गया। इस बीच, जुनमोनी की मां ने कहा कि मेरा सरकार और पुलिस पर से पूरा भरोसा उठ गया है। पुलिस अधिकारियों की संलिप्तता के कारण निष्पक्ष जांच नहीं हो पा रही है। मेरे दिन वास्तव में कठिन रहे हैं। गौरतलब है कि 16 मई को -शेष पृष्ठ दो पर

सचिन पायलट नई पार्टी की ओर

जयपुर। राजस्थान की सियासत में फिर भूचाल आने वाला है। पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट राजस्थान में कांग्रेस को बड़ा झटका देने वाले हैं। सूत्रों के मुताबिक, सचिन पायलट कांग्रेस पार्टी छोड़ सकते हैं और नई पार्टी का गठन कर सकते हैं। दरअसल, राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोग गहलोत और सचिन पायलट के बीच की दूरी किसी से छिपी नहीं है। दोनों नेता एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करते आए हैं। यह खाई तब और बढ़ गई, जब सचिन पायलट साल 2020 में कुछ विधायकों के साथ गुरुग्राम के एक होटल पहुंच गए थे। तब उनपर आरोप लगा कि वह भाजपा के साथ मिलकर अपनी ही सरकार को गिराना चाहते हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक राजस्थान में दो पार्टियां रजिस्टर्ड हुई हैं। इनमें से एक पार्टी का नाम प्रगतिशील कांग्रेस और दूसरी पार्टी का नाम राज जन संघर्ष पार्टी है। इन दोनों में से किसी एक नाम का एलान सचिन पायलट कर सकते हैं। पायलट अपने इस बड़े एलान से पहले मंदिरों के दर्शन कर -शेष पृष्ठ दो पर

ऐसा कुछ नहीं है : कांग्रेस

नई दिल्ली। राजस्थान में इस साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसको लेकर राजस्थान की राजनीति में जबरदस्त हलचल मची हुई है। यह हलचल कांग्रेस में कुछ ज्यादा ही है। कांग्रेस में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट गुट आमने-सामने हैं और यही कारण है कि कहीं ना कहीं दोनों के टकराव की खबरें भी सामने आती रहती है। पिछले दिनों कांग्रेस आलाकमान की बैठक हुई थी। इस बैठक के बाद दावा किया गया था कि अशोक गहलोत और सचिन पायलट लौटकर चुनाव लड़ेंगे -शेष पृष्ठ दो पर

door graph
Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344

रेल हादसा : तृणमूल का पीड़ितों को दो-दो हजार का नोट

कोलकाता (हि.स.)। ओडिशा के बालासोर के पास कोरोमंडल ट्रेन हादसे में मारे गए और घायल हुए पश्चिम बंगाल के लोगों को राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी ने दो-दो लाख रुपए की वित्तीय मदद दी है। जिन लोगों को रुपए दिए गए हैं, उन्हें दो-दो हजार के नोट दिए गए हैं जिसे लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने मंगलवार को इसका वीडियो ट्विटर पर डाला है। इसमें देखा जा सकता है कि पीड़ित परिवारों के हाथ पर दो-दो हजार का नोट रखा गया है। ट्वीट के साथ सुकांत मजूमदार ने लिखा है ममता बनर्जी -शेष पृष्ठ दो पर

नड्डा, शाह और संतोष की बैठक खत्म, बड़े बदलाव के संकेत

नई दिल्ली। आगामी विधानसभा चुनाव और साल 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा ने चुनावी तैयारियां शुरू कर दी हैं। सूत्रों से खबर मिल रही है कि भाजपा जल्द ही संगठन में बड़े बदलाव कर सकती है। कई राज्यों के प्रभारी बदले जा सकते हैं। कुछ राज्यों के अध्यक्ष भी बदले जा सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि बैठक में केंद्रीय प्रभारियों और प्रभारियों को लेकर चर्चा हुई। बताते चलें कि भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री अमित शाह और संगठन मंत्री बीएल संतोष के बीच अहम बैठक हुई। इससे पहले सोमवार को भी तीनों नेताओं के बीच करीब दो घंटे बैठक हुई। -शेष पृष्ठ दो पर

लायड आस्टिन ने दिखाया आईना तो बौखलाया चीन

बीजिंग। चीन ने खुद को विश्व शांति और समृद्धि में योगदान देने वाला देश बताते हुए अमेरिका पर निशाना साधा है। चीन ने कहा है कि अमेरिका अपना आधिपत्य जमाने के लिए सभी प्रकार के उपायों का सहारा लेता है, लेकिन इसका खामियाजा विकासशील देशों को भुगतना पड़ता है। दरअसल, चीन ने अमेरिकी रक्षा मंत्री लायड आस्टिन के उस बयान पर पलटवार किया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि हमारे सामने चीन की धमकियां और जबरदस्ती, यूक्रेन के खिलाफ रूसी आक्रामकता, आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन जैसी अंतरराष्ट्रीय चुनौतियां हैं। भारत में -शेष पृष्ठ दो पर

सुप्रभात

जो हमारे दिल में रहता है, वो दूर होके भी पास है। लेकिन जो हमारे दिल में नहीं रहता, वो पास होके भी दूर है।

– आचार्य चाणक्य

न्यूज गैलरी

दिल्ली एम्स के सर्वर पर फिर साइबर अटैक

नई दिल्ली (हि.स.)। दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के सर्वर पर मंगलवार को दोपहर को हैक करने की कोशिश की गई। हालांकि इसे विफल कर दिया गया और सेवाएं बहाल कर दी गईं। इस संबंध में एम्स, नई दिल्ली ने ट्वीट करके जानकारी दी कि साइबर सुरक्षा प्रणालियों द्वारा करीब ढाई बजे मैलवेयर हमले का पता चला। प्रयास को सफलतापूर्वक विफल कर दिया गया, और तैनात साइबर सुरक्षा प्रणालियों द्वारा खतरे को निष्प्रभावी कर दिया गया।

कश्मीर में अब आतंकवाद समर्थकों के लिए जगह नहीं

श्रीनगर। जम्मू और कश्मीर में आतंकी समर्थकों के खिलाफ जांच एजेंसियों द्वारा की गई भारी कार्रवाई ने संविधान में एक अस्थायी प्रावधान धारा 370 को निरस्त कर दिया, जिसने पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित अलगाववादियों और आतंकवादियों की कमर तोड़ दी है। शांति और समृद्धि के पथ पर नई ऊंचाइयों को छू रहे *नया जम्मू-कश्मीर* में आतंकवादियों और उनके समर्थकों के लिए कोई जगह नहीं है। आतंकवादी समर्थकों को उनके कुकर्मों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। उनकी संपत्ति जब्त कर ली गई है और देश विरोधी सरकारी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया गया है। 5 अगस्त, 2019 के बाद, जब केंद्र ने जम्मू-कश्मीर के तथाकथित विशेष दर्जे को खत्म करने और इसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के अपने फैसले की घोषणा की, तो सुरक्षा एजेंसियों ने हिमालयी क्षेत्र में आतंकी पारिस्थितिकी तंत्र को खत्म करने के लिए ऑपरेशन ऑल आउट शुरू किया था। सुरक्षा एजेंसियों द्वारा उठाए गए कदमों का फायदा हुआ और ओवर-ग्राउंड वर्कर्स (ओजीडब्ल्यू), जो आतंकवादियों को रसद और अन्य सहायता प्रदान करते थे, की पहचान कर ली गई है और उन्हें पकड़ लिया गया। जमात-ए-इस्लामी (जेईएल), जम्मू और कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) और अन्य जैसे अलगाववादी संगठनों -शेष पृष्ठ दो पर

सीआरपीएफ में अगले 18 महीनों में 10 लाख नियुक्ति का लक्ष्य

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के बेरोजगार युवाओं को रोजगार देने के प्रयासों के तहत पिछले पांच वर्षों में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) जैसे केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) में लगभग दो लाख लोगों की भर्ती की गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हालांकि इस साल जुलाई अंत तक सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ), केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी), सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) और असम राइफल्स (एआर) में अब भी 84,000 से अधिक पद रिक्त थे और इन्हें भी भरने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले पांच वर्ष 2017 से 2021 तक सीआरपीएफ में सबसे -शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

मणिपुर हिंसा : एनईआईपीएफ ने सरकार से लोगों को सुरक्षा प्रदान करने का किया आग्रह

गुवाहाटी (हि.स.)। मणिपुर हिंसा के बीच नॉर्थ ईस्ट इंडिजिनस पीपुल्स फोरम (एनईआईपीएफ) ने सरकार से लोगों को सुरक्षा प्रदान करने का आग्रह किया है। एनईआईपीएफ ने आज कहा कि राज्य और केंद्र दोनों सरकारों को क्षेत्र में विदेशी नागरिकों की अवैध घुसपैठ के क्रमिक प्रवाह पर तुरंत कार्रवाई करने की आवश्यकता है, जिससे राज्यों के जनसांख्यिकीय ढांचे में बदलाव पर रोक लग सके। मणिपुर में चल रही हिंसा के बीच, एनईआईपीएफ ने केंद्र और राज्य सरकार दोनों से हस्तक्षेप करने और लोगों को सुरक्षा प्रदान करने का आग्रह किया। पीपुल्स फोरम ने गुवाहाटी में असम साहित्य सभा भवन में आज आयोजित एनईआईपीएफ की एक कार्यकारी बैठक के दौरान यह आग्रह किया गया। एनईआईपीएफ ने एक आह्वान करते हुए मणिपुर राज्य के सभी समुदायों से शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की अपील की। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि केंद्र और राज्य सरकारों से तुरंत हस्तक्षेप करने और क्षेत्र में लोगों और परिवहन वाहनों की सभी गतिविधियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह करता हूं, विशेष रूप से मणिपुर में राष्ट्रीय राजमार्ग की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जाए। इसके अलावा, एनईआईपीएफ ने सरकार से बुनियादी सुविधाएं प्रदान करके विस्थापितों की दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए भी कहा और सभी समुदायों से अपील की कि वे किसी भी प्रकार की नाकाबंदी और सड़कों के काउंटर नाकाबंदी का सहारा न लें, यह कहते हुए कि सभी समुदायों का आर्थिक दैनिक जीवन सामाजिक रूप से अन्योन्याश्रित हैं। एनईआईपीएफ केंद्र सरकार से इस मामले की गंभीरता से जांच करने का आग्रह करता है कि क्या मणिपुर में वर्तमान संकट में विदेशी नागरिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हैं। यदि मणिपुर में वर्तमान संकट में विदेशी नागरिक शामिल हैं, तो उचित कार्रवाई शुरू की जानी चाहिए।

दिसंबर तक खोले जाएंगे 2000 जन-औषधि केंद्र

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने देशभर में दो हजार प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस) को प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र खोलने की अनुमति देने का फैसला किया है। सहकारिता मंत्रालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। सहकारिता मंत्री अमित शाह की रसायन एवं उर्वरक मंत्री मनसुख मंडाविया के साथ आज नई दिल्ली में हुई बैठक में यह फैसला लिया गया। बैठक में लिए गए फैसले के मुताबिक प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र खोलने के लिए देशभर में 2000 प्राथमिक कृषि ऋण समितियों की पहचान की जाएगी। इस साल अगस्त तक 1,000 और दिसंबर तक 1,000 जन औषधि केंद्र खोले जाएंगे। केंद्रीय गृहमंत्री शाह ने केंद्र सरकार के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने *महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के नौ साल* के साथ नए युग की शुरुआत की है, जिसमें देश ने महिला उद्यमियों को 27 करोड़ रुपए के मुद्रा ऋण का वितरण कर रिकॉर्ड बनाया है, जो आज भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं। शाह ने ट्वीट किया कि प्रगति के सिद्धांत को बदलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के नौ साल के युग की शुरुआत की है, जिस पर दुनिया आश्चर्यचकित है। भारत ने महिलाओं उद्यमियों को 27 करोड़ रुपए का मुद्रा ऋण वितरिक रिकॉर्ड बनाया है। महिला शक्ति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया है। गृहमंत्री ने खासतौर पर यह भी जिक्र किया कि नारीत्व का उत्सव प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का केवल नारा नहीं, बल्कि अब यह वास्तविकता है, जहां महिलाओं ने अंतरिक्ष से लेकर स्टार्ट-अप और रक्षा से लेकर घरेलू मामलों तक जीवन के सभी क्षेत्रों में सभी शीर्षों को तोड़कर नई ऊंचाइयों को छुआ है।

खालिस्तान : चेतावनी के बावजूद सिडनी में हुआ जनमत संग्रह

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीस की चेतावनी के बावजूद सिडनी में खालिस्तान जनमत संग्रह कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में खालिस्तान समर्थक शामिल हुए। इस दौरान खालिस्तानी समर्थक खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते नजर आए। इससे पहले 4 जून को सिख फॉर जस्टिस का जनमत संग्रह कार्यक्रम होने की बात सामने आई थी लेकिन सुरक्षा एजेंसियों की सलाह पर कार्यक्रम की बुकिंग रद्द कर दी गई थी। इसके बाद भिंडरावाले की 39वीं बरसी पर आज खालिस्तान जनमत संग्रह सिडनी के पास एक निर्माण स्थल पर हुआ। आयोजकों ने फ्री बसों के जरिए बड़ी संख्या में लोगों को शामिल करने की कोशिश की। मेलबोर्न और ब्रिस्बेन जनमत संग्रह में मतदान करने वाले परिचित चेहरे भी इसमें शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद खालिस्तान समर्थकों को बड़ा झटका लगा था।

बेटी को अपहरण से बचाने की कोशिश में हिंदू मां की हत्या

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में अपहरण, इस्लाम में जबरन धर्म परिवर्तन, और हिंदू और ईसाई नाबालिग लड़कियों की मुसलमानों से जबरन शादी के मामले नई बात नहीं और ये हर साल लगातार बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन इन बार बेटी को अपहरण से बचाने की कोशिश में एक मां की हत्या का मामला सामने आया है। सिंध के घोटकी शहर में, उस्मान लाखो नाम के एक मुस्लिम व्यक्ति ने अपने रिश्तेदारों और दोस्तों मासु लाखो और रियाज भुट्टो के साथ एक हिंदू महिला जरीना भील की बेटी को गलियों में लड़की को परेशान किया और 27 मई को अगवा करने के दौरान उन्होंने उसके भाई को चाकू मार दिया जो उसका बचाव कर रहा था। 28 मई को वे फिर जरीना भील की बेटी का अपहरण करने के इरादे से उसके घर में घुसे। जरीना ने एक भयंकर प्रतिरोध किया, लेकिन हमलावरों के पास बंदूकें थीं और उन्होंने उसे मार डाला और उसके दो सबसे छोटे बच्चों को घायल कर दिया। जरीना का बलिदान व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि आरोपी उसकी बेटी को लिए बिना ही भाग गए। पुलिस ने एक प्राथमिकी दर्ज होने के बाद उस्मान लाखो और मासू लाखो को गिरफ्तार कर लिया है। संयुक्त राष्ट्र व अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करने वाले मानवाधिकार एनजीओ ने जरीना के अंतिम संस्कार के वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किए, और हत्यारों के खिलाफ त्वरित और गंभीर मुकदमा चलाने के लिए कहा है। हालांकि, धार्मिक अल्पसंख्यकों की युवा लड़कियों के अपहरण और जबरन धर्म परिवर्तन की समस्या पाकिस्तान में आम है।

लायंस क्लब अर्पण ने मालीगांव गौशाला में वृक्षारोपण किया

गुवाहाटी (विभास)। लायंस क्लब ऑफ गुवाहाटी अर्पण द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में मालीगांव गौशाला प्रांगण में वन एक्टिविटी एक मल्टीपल के तहत वृक्षारोपण किया। प्रकृति के संरक्षण हेतु आम, अमरूद, नींबू, बबूल व छायादार आदि कई तरह के वृक्षों का रोपण किया गया। गौशाला में काम कर रहे सभी कर्मचारी का पूर्ण सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा। इस अवसर पर अध्यक्ष मंजू चौधरी, पायल भरतीया, शशि बड़जात्या आदि सदस्योंओ का पूर्ण सहयोग रहा।

No. TP/GIS Geo-Hub/02/2023/43

ADVERTISEMENT

The Director, Town & Country Planning Assam is pleased to Call for recruitment of contractual staff for "Establishment of GIS Geo-Hub in the HQ office of Town & Country Planning-Assam under the Department of Housing and Urban Affairs" for the following positions-

1) GIS Experts — 2 positions
2) GIS Assistants — 1 position

For the details of the call and prescribed application format, the 'Latest' section in the website of Town & Country Planning Assam **www.tepassam.gov.in** maybe checked from 8th June' 2023. The last date of submission of application is 21.06.2023

Director
Town and Country Planning, Assam
Dispur, Guwahati-6

Janasanyog/ D/4488/23

पृष्ठ एक का शेष

मणिपुर हिंसा : गोलीबारी...

की अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की मांग के विरोध में पहाड़ी जिलों में *आदिवासी एकजुटता मार्च* आयोजित किए जाने के बाद 3 मई को पूर्वोत्तर राज्य में पहली बार झड़पें हुई थी। मेइती मणिपुर की आबादी का लगभग 53 प्रतिशत हैं और ज्यादातर इंफाल घाटी में रहते हैं। जनजातीय नगा और कुकी जनसंख्या का 40 प्रतिशत हिस्सा हैं और यह पहाड़ी जिलों में निवास करते हैं। राज्य में शांति बहाल करने के लिए करीब 10,000 सेना और असम राइफल्स के जवानों को तैनात किया गया है। उधर सेना के अधिकारियों ने बताया कि मणिपुर के सेरो में सुरक्षाबलों और उग्रवादियों के एक समूह के बीच 5-6 जून की दरमियानी रात एक बार फिर गोलीबारी की खबर सामने आई है। इसमें सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक जवान की मौत हो गई, जबकि असम राइफल्स के दो जवान गंभीर रूप से घायल हैं। भारतीय सेना के स्पीयर कोर ने एक बयान में कहा कि बीएसएफ के एक जवान की गंभीर रूप से घायल होने के कारण मौत हो गई, जबकि असम राइफल्स के दो जवान गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हैं।

12वीं परीक्षा परिणाम...

स्थान पर काव्यश्री शर्मा (481), शंकरदेव अकादमी (वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय), नलबाड़ी, सातवें स्थान पर कश्मीर शर्मा (480), कृष्ण कांत हैंडिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बरपेटा और शबनम सैकिया (480), रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव, आठवें स्थान पर प्रतीक्षा भुइयां (479), आनंदराम बरूवा अकादमी (सिनियर सेकेंडरी स्कूल), बरपेटा, दृष्टि एनजी बर्मन (479), आनंदराम बरुवा अकादमी (सिनियर सेकेंडरी स्कूल), बरपेटा, जरीफा अहमद (479), रामानुजन सिनियर सेकेंदरी स्कूल, नगांव, नौवें स्थान पर काव्यश्री दास (477), आनंदराम बरुवा अकादमी (सिनियर सेकेंडरी स्कूल), बरपेटा और दसवें स्थान पर क्रिस्टीना देवी (476), कॉनसेप्ट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव, मृण्मय कुमार बोरा (476), रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव, रक्तिमा पातर (476) रामानुजन सेकेंडरी स्कूल, नगांव रहे हैं। इस वर्ष आर्ट्स में 70.12 फीसदी, कॉमर्स में 79.57 फीसदी और साइंस में 84.96 फीसदी छात्र पास हुए। परिक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद छात्रों में खुशी देखने को मिली। असम उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में कॉमर्स स्ट्रीम में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली वर्षा बोथरा ने कहा कि मैं बहुत खुश हूं। मुझे पहले रैंक की उम्मीद नहीं थी। मैं अपने रिजल्ट का श्रेय अपने माता-पिता और शिक्षकों को देना चाहूंगी। नतीजे आज आएंगे, लेकिन छात्रों को बाद में स्कूलों से अपनी अंकतालिकाएं और प्रमाण पत्र लेने होंगे। असम के मुख्यमंत्री हिमंता विश्व शर्मा ने ट्वीट कर कहा कि एचएस परीक्षा में सफल सभी उम्मीदवारों को मेरी बधाई और शुभकामनाएं। जो लोग इस बार अच्छा नहीं कर सके, उनके लिए याद रखें 9 हम हमेशा सफलता पाने के लिए और अधिक मेहनत करने की ताकत रखते हैं। हार नहीं माने। हमेशा एक नई शुरुआत होती है।

ट्रेन हादसा : रेलमंत्री का ...

पर केंद्रित है। बता दें कि बालेश्वर में बेंगलुरु-हावड़ा सुपरफास्ट एक्सप्रेस, शालीमार-चेन्नई सेंट्रल कोरोमंडल एक्सप्रेस और एक मालगाड़ी दुर्घटना का शिकार हो गई थी। इस भीषण रेल हादसे में कम से कम 278 लोग मारे गए थे और 900 से अधिक घायल हुए थे।

असम-अरुणाचल सीमा...

पर कथित गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई। धेमाजी के लोगों ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अंतर्राज्यीय सीमा क्षेत्र में वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया था। कुछ ग्रामीण पहले से ही व्यवस्था करने के लिए चले गए थे। असम पुलिस ने बताया कि वे कथित तौर पर गोलीबारी की चपेट में आ गए, जिसमें एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। उन्होंने बताया कि तीन अन्य लोग गोली लगने से घायल हो गए और उन्हें स्थानीय लोगों द्वारा धेमाजी सिविल अस्पताल ले जाया गया, जहां एक और व्यक्ति की मौत हो गई। असम और अरुणाचल प्रदेश 804 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं और दोनों पक्ष सीमा विवादों को हल करने के लिए चर्चा कर रहे हैं। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा और अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने 20 अप्रैल को नई दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी में सीमा विवाद को हल करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। अरुणाचल प्रदेश को 1972 में एक केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया था। उसका दावा है कि मैदानी इलाकों में कई वनाच्छादित इलाके जो पारंपरिक रूप से पहाड़ी आदिवासी प्रमुखों और समुदायों के थे, उन्हें एकतरफा असम में स्थानांतरित कर दिया गया था।

जुनमोनी की मौत ...

जुनमोनी राभा की हत्या करने वाले ट्रक के चालक को पिछले महीने जमानत मिल गई थी। इस मामले में चल रही जांच के दौरान उसने असम पुलिस की सीआईडी के सामने सरेंडर कर दिया था जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। ट्रक के चालक सुमित कुमार पाल के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 279/427/304 के तहत मामला दर्ज किया गया था, जिसमें जुनमोनी राभा यात्रा कर रहे वाहन से आमने-सामने टक्कर हुई थी। परिणामस्वरूप टक्कर में असम पुलिस एसआई की मौत हो गई। जुनमोनी राभा की मौत से संबंधित मामले के तथ्यों का खुलासा घटना के जांच अधिकारी, जाखलाबंधा पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी (ओसी) ने किया। मामले के संबंध में आईपीसी की धारा 279/427/304 (ए) के तहत मामला संख्या 84/23 दर्ज किया गया था। चालक के खिलाफ जल्दबाजी और लापरवाही, क्षति और लापरवाही से मौत का आरोप लगाया गया था, जो सभी जमानती अपराध हैं, इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए कि पुलिस जुनमोनी राभा की मौत को एक दुर्घटना के रूप में देख रही है।

सचिन पायलट नई ...

रहे हैं। आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए नई पार्टी के नाम का रथ भी तैयार कर लिया गया है। जानकारी के मुताबिक इस रथ को लेकर पूरे राजस्थान का दौरा करेंगे। इस रथ यात्रा का रोड मैप भी तैयार कर लिया गया है। सचिन पायलट का दौरा मारवाड़ से शुरू हो सकता है। बता दें कि पिछले कुछ दिनों से सचिन पायलट अपनी ही सरकार के खिलाफ मोर्चा खोले हुए हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार व राजस्थान में सरकारी भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक होने के खिलाफ जनसंघर्ष पद यात्रा भी निकाली थी। वे भ्रष्टाचार के आरोपों पर लगातार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को घेर रहे हैं। लेकिन चुनावी साल में केंद्रीय नेतृत्व अशोक गहलोत को हटाकर कोई जोखिम मोल नहीं लेना चाहता है। इस साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होने हैं और कांग्रेस यहां फिर से अपनी सरकार बनाने की उम्मीद कर रही है। हाल ही में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सचिन पायलट और अशोक गहलोत से अलग-अलग मुलाकात कर मामले को रफा-दफा करने की कोशिश की। बैठक के बाद कांग्रेस महासचिव वेणुगोपाल ने मीडिया में आकर कहा कि दोनों नेताओं से बातचीत हो गई है, राजस्थान में दोनों नेता मिलकर चुनाव लड़ेंगे और कांग्रेस को मजबूत करेंगे। इस दौरान राजस्थान के कांग्रेस प्रभारी भी मौजूद थे। राजस्थान में साल 2018 में सचिन पायलट के नेतृत्व में कांग्रेस ने भाजपा को हराकर सत्ता में वापसी की थी। जीत का श्रेय सचिन पायलटय को दिया गया। लेकिन जब मुख्यमंत्री के नाम की चर्चा हुई, तो उसमें अशोक गहलोत बाजी मार गए। अशोक गहलोत उस समय दिल्ली में थे और कांग्रेस महासचिव का कार्यभार देख रहे थे। सोनिया गांधी के करीबी होने के नाते कांग्रेस ने अशोक गहलोत को राज्य का मुख्यमंत्री और सचिन पायलट को उपमुख्यमंत्री बनाया था।

ऐसा कुछ नहीं...

और हमारा चुनाव जीतना ही एकमात्र लक्ष्य है। लेकिन अब खबर आ रही है कि आलाकमान के फैसले को लेकर सचिन पायलट अभी भी खुश नहीं है और वह आने वाले 11 तारीख को अपने पिता राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर नई पार्टी की घोषणा कर सकते हैं। इसको लेकर तरह-तरह के दावे भी किए जा रहे हैं। अटकलों की माने तो उन्होंने संबंधित अधिकारियों के समक्ष दो दलों के नाम दर्ज करा दिए हैं। सूत्रों ने कहा कि दो पार्टियों के नाम - प्रगतिशील कांग्रेस और राज जन संघर्ष पार्टी - पंजीकृत किए गए हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि पायलट इसके लिए अपने लोगों से मिल रहे हैं। हालांकि, पायलट ने अभी तक कोई घोषणा नहीं की है। हालांकि, कांग्रेस ने खबरों को खारिज किया है। कांग्रेस के राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने साफ तौर पर कहा है कि मैं यह सब बातें सिर्फ मीडिया के जरिए ही सुन रहा हूं। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि वे पहले भी ऐसा नहीं चाहते थे और अभी भी नहीं चाहते हैं। सुखजिंदर सिंह रंधावा ने यह भी कहा है कि मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, केसी वेणुगोपाल की मौजूदगी में सचिन पायलट और अशोक गहलोत की बैठक हुई थी। इस बैठक में मिलकर चुनाव लड़ने की बात कही गई थी। दोनों नेताओं ने बड़े नेताओं की बात को गंभीरता से सुना था और उस पर अपनी सहमति दी थी।

रेल हादसा : तृणमूल...

के निर्देश पर राज्य के एक मंत्री ने तृणमूल पार्टी की ओर से पीड़ित परिवारों को दो लाख की आर्थिक सहायता दी है। मैं इसकी सराहना करता हूं लेकिन इस संदर्भ में यह सवाल भी रख रहा हूं क्योंकि यह जो रुपए दिए गए हैं उसमें दो-दो हजार के नोट ही क्यों दिए गए हैं? इसका सोर्स क्या है? इसके बाद उन्होंने आगे लिखा है कि बैंकों के माध्यम से 2000 का नोट बदलने की प्रक्रिया चल रही है तो जाहिर सी बात है इन रुपए को बैंक से नहीं उठाया गया है बल्कि इस जरिए से तृणमूल कांग्रेस अपने काले धन को सफेद करने का तरीका ढूंढ रही है। दूसरी ओर पीड़ित परिवारों को दो हजार का नोट देकर उनकी परेशानी बढ़ा दी गई है। सुकांत ने राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था और बेरोजगारी पर भी सवाल खड़ा करते हुए कहा कि बालासोर ट्रेन हादसे में पीड़ित लोगों से मिलने के लिए मैं ओडिशा गया था। मैंने बंगाल लोगों से पूछा कि वह ट्रेन से कहां जा रहे थे तो कई लोगों ने बताया कि वे इलाज कराने जा रहे थे जबकि कुछ लोगों ने यह भी बताया कि वे दूसरे राज्य में काम की तलाश में जा रहे थे। ट्वीट में ममता बनर्जी को टैग करते हुए उन्होंने पूछा कि मुख्यमंत्री जी क्या यही आपका सबसे आगे बंगाल है?

नड्डा, शाह और ...

गौरतलब है कि आने वाले कुछ महीनों में राजस्थान, मध्य प्रदेश, तेलंगाना में विधानसभा चुनाव होने हैं। वहीं, अगले साल मार्च में लोकसभा चुनाव का बिगुल बज सकता है। भारतीय जनता पार्टी को हाल ही में दो विधानसभा चुनावों में बड़ी हार का सामना करना पड़ा है। जेपी नड्डा के गृह राज्य हिमाचल में भाजपा सत्ता से बाहर हो गई, जबकि कर्नाटक में भाजपा को बड़ी हार का सामना करना पड़ा है। इसके बाद कयास लगाए जा रहे थे कि जल्द ही भाजपा में बड़े बदलाव हो सकते हैं। कर्नाटक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के धुंआधार प्रचार के बावजूद भाजपा अपनी हार को नहीं टाल सकी। वहीं, हिमाचल में कार्यकर्ताओं ने टिकट वितरण में खामियां की बात कही थी।

लायड आस्टिन ने ...

चीनी दूतावास के प्रवक्ता ने कहा कि विश्व शांति और समृद्धि में चीन का योगदान है। वह चीन नहीं, अमेरिका है, जो जबरदस्ती और आधिपत्य के लिए सभी प्रकार के उपायों का सहारा लेता है। प्रवक्ता ने कहा कि अमेरिका के नेतृत्व में नाटो देशों के दबाव और डराने-धमकाने का असर विकासशील देशों को भुगतना पड़ रहा है। भारत और अमेरिका के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास के महत्व पर बोलते हुए आस्टिन ने कहा था कि दुनिया चीन की धमकियों और दबाव को देख रही है, जो बल प्रयोग से सीमाओं का पुनर्निधारण करना चाह रहा है। उन्होंने चीन पर अन्य देशों की राष्ट्रीय संप्रभुता को खतरे में डाल रहा है। उन्होंने आगे कहा कि शांति और समृद्धि के लिए आवश्यक स्वतंत्रता को संरक्षित करने और कायम रखने के लिए भारत और अमेरिका के मुखर नेतृत्व की आवश्यकता होगी। इसके लिए हमें अभी भी बहुत काम करना है। उन्होंने विश्वास जताया कि भारत अमेरिका साझेदारी हिंद-प्रशांत और व्यापक दुनिया के लिए खुले और समृद्ध भविष्य को सुरक्षित करने में मदद करेगी। अमेरिकी विदेश मंत्री ने चीन के रक्षा मंत्री की तरफ से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नाटो जैसे सैन्य गठबंधन के खिलाफ चेतावनी जारी करने पर कहा कि हम हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नाटो की स्थापना का प्रयास नहीं कर रहे हैं। हम यह सुनिश्चित करने के लिए समान विचारधारा वाले देशों के साथ काम करना जारी रखेंगे कि यह क्षेत्र खुला रहे, ताकि व्यापार समृद्ध हो सके और विचारों का आदान-प्रदान जारी रहे।

कश्मीर में अब आतंकवाद...

पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। उनके फंडिंग चैनल चोक हो गए हैं। संक्षेप में, क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने वाले तत्वों के चारों ओर फंदा कस दिया गया है। कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा की गई कड़ी कार्रवाई से आम आदमी ने राहत की सांस ली है। जो लोग निवासियों को डराते और धमकाते थे, उन्हें उनकी सही जगह दिखा दी गई है। अलगाववादी, जो शटडाउन लागू करते थे, सड़क पर विरोध प्रदर्शन और पथराव करते थे, या तो सलाखों के पीछे हैं या चुप हो गए हैं। लोग बिना किसी रुकावट के अपने दैनिक काम कर रहे हैं क्योंकि हिंसा में कमी आई है और आतंकवादी कोने में खड़े हैं।जम्मू-कश्मीर में भीड़ में आने वाले पर्यटक इस तथ्य के लिए वसीयतनामा करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले शासन ने संघर्षग्रस्त क्षेत्र में कानून का शासन स्थापित किया है, जो 30-लंबे समय तक पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का गवाह रहा है। आज तक, राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) कश्मीर ने जमात-ए-इस्लामी की 57 संपत्तियों को जब्त कर लिया है। कार्रवाई ने आतंक के वित्त पोषण को प्रभावित किया है और कानून के शासन और बिना किसी भय के समाज को बहाल करने में एक बड़ा कदम साबित हुआ है।

सीआरपीएफ में अगले...

ज्यादा 1,13,208 युवाओं की भर्ती की गई, 29,243 युवाओं को एसएसबी में और 17,482 युवाओं को बीएसएफ ने शामिल किया गया। पिछले पांच वर्षों में सीआईएसएफ में 12,482 युवाओं, आईटीबीपी में 5,965 और असम राइफल्स में 5,938 युवाओं को भर्ती किया गया। आंकड़ों के अनुसार, 2022 में भी जुलाई तक, छह केंद्रीय बलों में 10,377 युवाओं की भर्ती की गई। सीआरपीएफ में 6,509, एसएसबी में 1,945, बीएसएफ में 1,625, असम राइफल्स में 229 और सीआईएसएफ में 69 युवा भर्ती किए गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 अक्तूबर को एक भर्ती अभियान शुरू किया था, जिसके तहत अगले 18 महीनों में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में 10 लाख कर्मियों की नियक्ति किए जाने का लक्ष्य है। नवनियुक्त 75,000 से अधिक लोगों को नियुक्ति पत्र सौंप दिए गए हैं। गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 31 जुलाई 2022 तक छह केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में 84,659 पद रिक्त थे। इनमें से सीआरपीएफ में 27,510, बीएसएफ में 23,435, सीआईएसएफ में 11,765, एसएसबी में 11,143, असम राइफल्स में 6,044 और आईटीबीपी में 4,762 पद रिक्त हैं।

स्वर्वेद भाष्य

चतुर्थ मंडल **त्रयोदश अध्याय**

(गुरु-वंदना)

साहेब सद्गुरु एक हैं, भेद भाव जनि मान।
व्यक्त रूप दर्शन मिलै, दै शिक्षा तत्व ज्ञान॥ 19॥

शब्दार्थ : (साहेब) परमप्रभु (सद्गुरु) अनादि सद्गुरु (व्यक्तरूप) प्रकट रूप (तत्व ज्ञान) विवेक।

भाष्य : साहेब और सद्गुरु एक हैं, दोनों में कोई भेद नहीं है। अव्यक्त सत्पुरुष का व्यक्तरूप सद्गुरु हैं। उसी वक्तरूप का दर्शन होता है, जिसके द्वारा संसार को शिक्षा और तत्वज्ञान प्राप्त होता है। सद्गुरु द्वारा अध्यात्म के समस्त तत्वों का बोध होता हा। साधन, योग-विज्ञान में सद्गुरु के स्वरूप द्वारा उसके निरोध में अव्यक्त सत्ता का साक्षात्कार होता है। सद्गुरु द्वारा ही अव्यक्त परम पुरुष की प्राप्ति होती है।

व्यक्त अवर अव्यक्त हैं, सद्गुरु दोय स्वरूप।
अनुभव गति अव्यक्त है, अन्तर शब्द अनूप॥ 20॥

शब्दार्थ : (अनुभव गति) अन्तर-साधन योग द्वारा अंतर्गमन (अन्तर) भीतर (शब्द अनूप) प्रकृतिपार, अनुपम, अनुभवगम्य शब्द स्वरूप।

भाष्य : व्यक्त और अव्यक्त सद्गुरु के दो स्वरूप है। व्यक्त बाह्म स्वरूप है और अनुभव द्वारा साक्षात्कार प्राप्त शब्दस्वरूप अव्यक्त है। अव्यक्तस्वरूप की प्राप्ति के लिए ही व्यक्तस्वरूप संदेह सद्गुरु की उपासना हीतो है। देह के अंदर जो शब्दानंद का स्रोत प्रवाहित होता है, उसी प्रवाह को अपनी चेतन शक्ति से संबंधित करने के लिए सद्गुरु की उपासना होती है। सद्गुरु ने विषय शक्ति रहती है, जो पवित्र आत्मा को अपने मौलिक चेतन आकर्षण से अंतर में प्रवेश करा, उसे ऊर्ध्व मुख कर देती है इसलिए सद्गुरुदेव की महती महिमा है। इनकी महिमा को सुष्मन-प्रवाही सहज योगाभ्यासी ऊर्ध्वमुखी संत जानते हैं। संसारी जीवों को इस सद्गुरु-रहस्य का क्या पता है?

असम उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के परिणाम घोषित

कला संकाय में संकल्पजीत, विज्ञान संकाय में निखलेश दत्ता समेत वाणिज्य संकाय में वर्षा बोथरा और सुकन्या कुमार रहे शीर्ष स्थान पर

गुवाहाटी (हिंस)। असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने असम उच्चतर माध्यमिक अंतिम वर्ष (12वीं) परीक्षा के परिणाम मंगलवार को घोषित कर दिए। कला संकाय में 70.12 प्रतिशत, वाणिज्य संकाय में 79.57 प्रतिशत और विज्ञान संकाय में 84.96 प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। कला संकाय में संकल्पजीत सैकिया, विज्ञान संकाय में हाजोर रामदिया के निखिलेश दत्ता और वाणिज्य संकाय में दो छात्रों ने पहला स्थान हासिल किया है। असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने मंगलवार को सुबह 9 बजे 12वीं परीक्षा के परिणामों की घोषणा कर दी। यह परिणाम 11 वेबसाइटों पर उपलब्ध हैं। राज्यभर के 856 परीक्षा केंद्रों पर कुल 3, 42, 689 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी। इनमें से 2, 40, 431 विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। परिणामों के अनुसार कला संकाय में प्रथम श्रेणी में 28, 651, द्वितीय श्रेणी में 58, 859 और तृतीय श्रेणी में 95, 660 विद्यार्थी उत्तीर्ण

हुए हैं। कला संकाय में नगांव के रामानुजन सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र संकल्पजीत सैकिया ने टॉप किया। संकल्पजीत ने 500 में से कुल 490 अंक हासिल किए। इसी तरह विज्ञान संकाय में प्रथम श्रेणी में 18, 868, द्वितीय श्रेणी में 16, 455 और तृतीय श्रेणी में 4082 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। विज्ञान संकाय में हाजोर रामदिया के निखिलेश दत्ता ने शीर्ष स्थान हासिल किया है। निखिलेश ने 500 में से कुल 484 अंक हासिल किए हैं। वाणिज्य संकाय में प्रथम श्रेणी में 5254, द्वितीय श्रेणी में 6486 और तृतीय श्रेणी में 4505 छात्र उत्तीर्ण हुए हैं। वाणिज्य संकाय में दो छात्रों ने पहला स्थान हासिल किया। गुवाहाटी के केसी दास कॉमर्स कॉलेज की छात्रा वर्षा बोथरा और नगांव के मलयबाड़ी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की सुकन्या कुमार ने शीर्ष स्थान हासिल किया। दोनों विद्यार्थियों ने 500 में से कुल 472 अंक प्राप्त किए हैं।

स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी : असम उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के कला, वाणिज्य और विज्ञान संकाय के लिए असम हायर सेकेंडरी (एचएस) के परिणाम मंगलवार को घोषित किए गए। परीक्षा के वाणिज्य संकाय में पास प्रतिशत 79.57 प्रतिशत रहा है। वाणिज्य संकाय में दो छात्रों ने पहला स्थान हासिल किया। गुवाहाटी के केसी दास कॉमर्स कॉलेज की छात्रा वर्षा बोथरा और कामरूप (मेट्रो) के मलयबाड़ी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की सुकन्या कुमार ने शीर्ष स्थान हासिल किया। दोनों छात्रों ने कुल 472 अंक प्राप्त किए। वाणिज्य संकाय में प्रथम श्रेणी में 5254, द्वितीय श्रेणी में 6486 और तृतीय श्रेणी में 4505 छात्र उत्तीर्ण हुए हैं। वाणिज्य शाखा में स्थान हासिल करने वाले छात्र, प्रथम वर्षा बोथरा (472), केसी दास कॉमर्स कॉलेज, गुवाहाटी, सुकन्या कुमार (472), मलयबाड़ी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कामरूप (मेट्रो), दूसरा जिलिक शील (471), शंकरदेव सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नगांव, तीसरा जहांगीर आलम चौधरी (468), पैरामाउंट सेकेंडरी स्कूल, हैलाकांदी, चौथा सूर्या जैन (467), साल्टब्रुक अकादमी, डिब्रूगढ़, पांचवां केशिका जैन (466), द्रोणाचार्य अकादमी, बरपेटा, छठा नंदिता दास (465), सिकेबी कॉमर्स कॉलेज, जोरहाट, सातवां स्मृति ठाकुर (464), महिला कॉलेज, तिनसुकिया, आठवां रिचिता शर्मा (462), साल्टब्रुक अकादमी, डिब्रूगढ़, यूनस अंसारी (462), मोरान सीनियर सेकेंडरी स्कूल, डिब्रूगढ़, रिफा अंतरा अहमद (462), इंस्टीट्यूशनल प्राइवेट, कुणाल ज्योति बैश्य (462), नलबाड़ी कॉमर्स कॉलेज, नलबाड़ी, नौवां स्थान-उन्नीता गोस्वामी (461), श्रीमंत शंकर अकादमी, कामरूप (मेट्रो), 10वां दीपिका अग्रवाल (460), इंस्टीट्यूशनल प्राइवेट।

वाणिज्य शाखा में द्वितीय स्थान प्राप्त कर जिलिक शील ने किया होजाई का नाम रोशन

होजाई (निसं)। असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आज घोषित हायर सेकेंडरी के परिणामों में वाणिज्य शाखा से स्थानीय शंकरदेव जूनियर कॉलेज की छात्रा जिलिक शील ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर अपने कॉलेज के साथ-साथ होजाईवासियों का नाम रोशन किया है। जिलिक को 471 अंक प्राप्त किए हैं, उसे सभी विषयों में लेटर प्राप्त हुआ है। उसका प्रतिशत रहा 94.20। वे राय भादुर लेन निवासी व्यवसाई नाचू व पिंकी शील की पुत्री है। जिलिक से संवाददाता ने जब बात कि उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने कहा कि शिक्षकों व माता-पिता के आशीर्वाद से आज यह सफलता अर्जित की। वे कहती है निरंतर निष्ठा के साथ उसने पढ़ाई की। अब आगे वे चार्टर्ड अकाउंटेंट बनना चाहती है। साथ ही उसकी हॉबी पेंटिंग करना है।

विज्ञान, वाणिज्य और कला शाखाओं में रंगिया का परिणाम रहा शत-प्रतिशत

रंगिया (विभास)। मंगलवार को घोषित असम उच्चत्तर माध्यमिक फाईनल परीक्षा के परिणामों में रंगिया के अग्रणी गैर सरकारी शिक्षण संस्थान सिम्बायोसिस अकादमी ने विज्ञान, वाणिज्य और कला तीनों शाखाओं में शत-प्रतिशत सफलता के साथ बेहतर प्रदर्शन किया है। संस्थान की प्राचार्य अशोका दत्ता द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार अकादमी के विज्ञान शाखा के सभी 38 छात्र-छात्राएं अच्छे अंकों साथ पास हुए हैं। जिसमें 21 प्रथम स्थान, 14 द्वितीय स्थान और 3 को तृतीय स्थान सहित 5 छात्रों को स्टार अंक प्राप्त हुए है। इसके अलावा वाणिज्य शाखा में कुल 27 छात्र-छात्राओं में 14 को प्रथम, 10 को द्वितीय और 3 को तृतीय स्थान प्राप्त होने के साथ 7 छात्रों को स्टार अंक प्राप्त हुआ है। वहीं एकाडमी के कला शाखा का पास प्रतिशत भी सौ फीसदी रहा है। अकादेमी के कला शाखा में 16 छात्र-छात्राओं ने

परीक्षा दी जिनमें 7 प्रथम, 4 द्वितीय और 5 को तृतीय स्थान के साथ सफलता हासिल हुई है। साथ ही 3 छात्रों को स्टार अंक प्राप्त हुआ है। उल्लेखनीय है कि सिम्बायोसिस अकादमी अपनी स्थापना के समय से ही रंगिया में शिक्षा के क्षेत्र में अपना प्रभुत्व बनाए रखने में सक्षम रही है।

जेसीआई, बेलतला ने शांतिपुर हिल्साइड में लगवाई स्ट्रीट लाइट

गुवाहाटी (विभास)। शांतिपुर हिल्साइड में स्थित वायरलेस क्षेत्र के किशन पथ में जेसीआई बेलतला गुवाहाटी ने 20 स्ट्रीट लाइट लगवा कर उस जगह को रोशन कर दिया। इस अवसर पर जेसीआई बेलतला की अध्यक्ष सुनीता कंदोई ने बताया कि वायरलेस पहाड़ी के दुर्गम स्थल पर सौ से भी अधिक परिवार रहते हैं। लेकिन रास्ते में स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था न होने के कारण वहां के बाशिंदों को शाम होते ही अपने घरों में आने-जाने की समस्या होती थी। अत: गांव वालों के अनुरोध पर वहां किशन पथ में 20 स्ट्रीट लाइट लगवाई गई । इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में जेसीआई इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष एमके कार्तिकेयन और विशिष्ठ अतिथि के रूप में जेसीआई क्षेत्र 25 के क्षेत्रीय अध्यक्ष विजय अग्रवाल ने उपस्थित रहकर इस कार्य की सराहना की। इस अवसर पर गांव में उपस्थित 300 लोगों को अन्नदान कार्यक्रम के अंतर्गत भोजन भी कराया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रोटोकॉल ऑफिसर राहुल चमडिया, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष गुंजन हरलालका, जेसीआई बेलतला की कोषाध्यक्ष मौसमी जैन के अलावा अनीता अग्रवाल, सुषमा अग्रवाल, डिंपल गर्ग, श्वेता जालान, रुखसाना बेगम, सरोज बाला उपस्थित थी।

विश्व पर्यावरण दिवस पर बिलासीपाड़ा मारवाड़ी समाज ने घर-घर जाकर वितरण किए पौध

कोकराझाड़ (विभास)। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर बिलासीपाड़ा मारवाड़ी समाज ने घर-घर जाकर पौध वितरण कार्यक्रम चलाया। करीब 150 घरों में पौध वितरण कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मारवाड़ी समाज के लोग मौजूद थे। पौध वितरण कार्यक्रम घरों के अलावा सरकारी कार्यालयों में भी वितरण किए गए। समाज के सदस्यों ने स्वयं से घरों व कार्यालयों में जाकर *लकी बंबू प्लांट* के पौधे वितरित किए। पौध वितरण कार्यक्रम के संचालक ऋषभ नाहटा ने पिछले वर्ष दिए गए स्नेक प्लांट की जाचं भी की और पाया कि अधिकतर घरों में अभी भी उसे संभाल कर रखा गया है। इस मौके पर मारवाड़ी शाखा के अध्यक्ष ने सभी को कहा कि हमें पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण आदि रोकथाम ही इस

प्रदुषण से निजाद दिला सकता है। पर्यावरण में जितना महत्व मनुष्यों का है, उतना ही अन्य जीव-जंतुओं का भी।

चाचा ने की भतीजे की हत्या

विश्वनाथ (विभास)। विश्वनाथ चाराली सदर थाना अंतर्गत कदमनी गांव के 21 वर्षीय महेश घटवार को चाचा मंटू घटवार ने सोते समय भतीजा पर कुल्हाड़ी से वार कर मौत के घाट उतार दिया। इस घटना को लेकर अंचल में सनसनीखेज है। कुल्हाड़ी से बेरहमी से हत्या कर चाचा मंटू घटवार ने विश्वनाथ चाराली सदर पुलिस थाने में आत्मसमर्पण किया है। मिली जानकारी के अनुसार घटना को अंचल के लोगों ने देखने के बाद इसकी सूचना पुलिस को दी। घटनास्थल पर पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू की। वहीं दूसरी ओर मजिस्ट्रेट मौके पर पहुंच कर मृतक महेश घटवार के शवर बिहाली पोष्टमोर्टम के लिए भेजा गया। समाचार लिखे जाने तक घटना के बारे में खुलासा नहीं हुआ है। फिलहाल पुलिस आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। सूत्रों से मिली खबरों के अनुसार हत्यारे को विश्वनाथ कोट में पेशी के बाद उसे जेल में भेज दिया गया है।

घर-घर जाकर छात्रों का किया सम्मान

नगरबेड़ा (विभास)। बरपेटा जिले के बागबर निर्वाचन क्षेत्र के तहत बाघमारा चर में हाल ही में घोषित उच्च माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों को घर-घर जाकर सम्मानित किया गया। बाघमारा चर समाज कल्याण परिषद के अध्यक्ष इनामुल हक के नेतृत्व में बाघमारा चर सीनियर सेकेंडरी स्कूल में से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले कई छात्रों को आज फुलम गमोसा देकर सम्मानित किया गया। हाल ही में घोषित हायर सेकेंडरी परीक्षा

के परिणाम में स्कूल से उपस्थित हुए 281 परीक्षार्थियों में से एक स्टार नंबर वाले 29 प्रथम श्रेणी में, 142 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। 19 छात्रों ने लेटार नंबर प्राप्त किए और कुल 281 छात्रा से कुल 92 प्रतिशत उत्तीर्ण हुए।

रंगिया को गार्डेन वैली नगर बनाने का उठाया बीड़ा

पौधरोपण के साथ विधायक ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ

रंगिया (विभास)। रंगिया के गौरवशाली इतिहास की धरोहर के रूप में चिन्हित करने वाले आरीमत्तो गढ़ में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर रंगिया के महकमाधिपति दिपन बर्मन के नेतृत्व में सोमबार को पौधारोपण किया गया। इसके अलावा रंगिया को गार्डन वैली नगर के रूप में स्थापित करने तथा अधिक सुंदर और आकर्षक बनाने के उद्देश्य से रंगिया महकमा प्रशासन, रंगिया पौरसभा और रंगिया प्रेस क्लब की पहल पर सोमवार को शहर के विभिन्न स्थानों में बोगेनविलिया फूलों के पौधे लगाए गए। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर आयोजित इस परियोजना का शुभारंभ रंगिया के विधायक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भवेश कलिता द्वारा रंगिया के बीचों बीच स्थित गांधी मंडप पर बोगेनविलिया के पौधरोपण के साथ किया गया। इसके पश्चात रंगिया महकमा प्रशासन द्वारा पौरसभा, प्रेस क्लब, समाज कल्याण विभाग, रंगिया महकमा सिविल अस्पताल, स्वेच्छासेवी संस्था साधना, रंगिया चैम्बर ऑफ कॉमर्स सहित विभिन्न विद्यालय- महाविद्यालय, वरिष्ठ नागरिक, स्थानीय लोगों आदि के सहयोग से रंगिया के विभिन्न स्थानों पर बोगेनविलिया के पौधे लगाए गए। कार्यक्रम का

उद्घाटन करते हुए विधायक कलिता ने उपस्थित लोगों से समाज को प्लास्टिक मुक्त करने तथा अधिक अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। कार्यक्रम अतिरिक्त उपायुक्त तथा रंगिया के महकमाधिपति दिपन बर्मन के दिशानिर्देश पर आयोजित किया गया जिसमें महकमा चुनाव अधिकारी नील हरित कौशिक, रंगिया पौरसभा के अध्यक्ष अमरेंद्र लहकर, उपाध्यक्ष विद्युत डेका, रंगिया महकमा के सहायक आयुक्त सजीव दास, कृतांजली कश्यप, अनुपम बोड़ो, रंगिया महकमा सिविल अस्पताल के उप-अधीक्षक डॉ. दिलीप कुमार बैश्य, योग गुरु योगाचार्य ज्योतिष कलिता सहित गणमान्य लोगों ने उपस्थित होकर पौध रोपण किया।

टॉपरों का अनएकेडमी स्टोर ने किया सम्मानित

गुवाहाटी (विभास)। भारत के सबसे बड़े शिक्षण मंच अनएकेडमी की ओर से असम में 10वीं व 12वीं कक्षा के टॉपरों का सम्मान किया गया। भांगागढ़ के शोहम एंपरियम के पास स्थित अनएकाडेमी स्टोर में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में गुवाहाटी से सांसद क्वीन ओजा, अतिथि के रूप में रॉयल ग्लोबल स्कूल की उप-अध्यापिका बिनिता जैन के अलावा प्रतिदिन समूह के ऋषि बरुवा, प्रख्यात फैशन डिजायनर पायल चड्ढा, दंत चिकित्सक रोहित जैन मौजूद थे। इस मौके पर 10वीं व 12वीं कक्षा के शीर्ष 5 रैंकर्स को प्रशस्तीपत्र, अनएकाडेमी की नि:शुल्क सब्सक्रिप्शन सहित अन्य उपहार देकर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में रॉयल ग्लोबल स्कूल, हिंदुस्तान केंद्रीय विद्यालय, एमवीएम 3 बोरसाजय, एमवीएम 4 बोरसाजय, संस्कृति गुरुकुल, एमवीएम गोटानगर,

इंटरनेशनल स्कूल, सरला बिड़ला ज्ञान ज्योति आदि के बच्चें शामिल थे। इस मौके पर गुवाहाटी सेंटर के प्रमुख रौनक धूत ने कहा कि अनएकाडेमी स्टोर शिक्षार्थियों के लिए एक ऑफलाइन टचप्वाइंट के रूप में कार्य करता है, जो इसके फायदों के पहले अनुभव के साथ प्लेटफॉर्म पर ब्रांड की पेशकशों को समझना चाहते हैं। एक आधुनिक और न्यूनतर डिजाइन दृष्टिकोण के साथ निर्मित, अनएकाडेमी स्टोर शिक्षार्थियों को चुने हुए कैरियर पथों के बारे में सूचित रखने और उन्हें समान रुचियों को साझा करने वाले अन्य लोगों से जोड़ने के लिए डिजाइन किया गया है। यह शिक्षार्थियों के लिए एक समग्र अनुभव को व्यवस्थित करता है और ब्रांड में विश्वास को और बढ़ाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को आगे बढ़ाने की अत्यधिक मांग को पूरा करने के लिए अनएकाडेमी स्टोर का पाठ्यक्रम विशेषज्ञों के साथ ऑन-ग्राउंड परामर्श, बैठकें और शीर्ष शिक्षकों के साथ सामयिक सत्र प्रदान करता है। शिक्षार्थी निर्देशित परामर्श के बाद अनएकेडमी स्टोर पर सभी सब्सक्रिप्शन खरीद सकते हैं। गुवाहाटी का पहला अनएकेडमी स्टोर एक समृद्ध शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। एक्सपीरियंस जोन: ऑन-डिस्प्ले डिवाइस (टैबलेट और स्क्रीन), अनएकेडमी से चल रही सामग्री के साथ, उपयोगकर्ताओं को प्लेटफॉर्म के मॉडल को समझने में मदद करते हैं। यहां, आगंतुकों को इन-हाउस विशेषज्ञों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, या वे स्वयं सामग्री का पता लगाने के लिए अपना समय ले सकते हैं। (2) *कनेक्ट* - परामर्श क्षेत्र: शिक्षार्थी विशेषज्ञों के परामर्श के बाद उपलब्ध उत्पादों की पेशकश या सदस्यता लेकर मार्गदर्शन और समर्थन प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। (3) प्रासंगिक पठन संसाधनों और नवीनतम नोट्स से सुसज्जित इन-हाउस लाइब्रेरी शिक्षार्थियों को उनके चुने हुए क्षेत्रों में अपडेट रहने में मदद करती है। (4) मर्चेंडाइज वॉल स्टोर का एक उपयोगी और आकर्षक खंड है, जिसमें परिधान, स्टेशनरी इत्यादि जैसे शांत, शान-शौकत के लायक मर्चेंडाइज- खरीद के लिए उपलब्ध हैं। (5) शीर्ष शिक्षक आते हैं और जुड़ते हैं: विभिन्न श्रेणियों के भारत के शीर्ष शिक्षक ऑफलाइन छात्रों से मिलने और उनसे व्यक्तिगत रूप से जुड़ने के लिए नियमित रूप से अनएकेडमी स्टोर पर जाते हैं। यह स्टोर अनएकेडमी स्टोर, पहली मंजिल, एचडीएफसी बैंक के ऊपर, सोहम एम्पोरिया, भांगागढ़, जीएस रोड, गुवाहाटी के बगल में स्थित है। अनएकाडेमी स्टोर सभी सातों दिन सुबह 10 बजे से शाम 7 बजे तक खुला रहता है।

नदी में डुबने से युवक की मौत

कोकराझाड़ (विभास)। कोकराझाड़ जिले के फकीराग्राम थाना अंतर्गत चौकापाड़ा गांव के हेल नदी में डुबने से युवक की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार आज दोपहर जोली तिर्की(22) नामक युनक ने अपने दोस्तों के फकीराग्राम के चौकापाड़ा गांव स्थित हेल नदी में नहाने गया था। जोली नहाते समय गहरे पानी में चला गया और डुब गया। इसके बाद उसके दोस्तों ने पानी में काफी खोजबीन शुरू की लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। बाद ग्रामीणों की मदद से काफी खोजबीन के बाद जोली के शव को बरामद किया गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस की टीम ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए कोकराझाड़ अस्पताल में भेज दिया।

असम योग जन-जागरण यात्रा, 2023 का शुभारंभ

गुवाहाटी (नगर संवाददाता)। नगर महानगर के असम साहित्य सभा कांप्लेक्स के संगीताचार्य लक्ष्मीनाथ बरुवा सदन में 21 जून को होनेवाला नौवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के काउंट डाउन के उपलक्ष्य में पूर्वोत्तर के प्रमुख योग संस्थान भारतीय योग संस्कृति और योग थैरेपी केंद्र के साथ असम के कई योग संस्थान जैसे पूर्वांचल महिला योग फाउंडेशन, अखिल असम योग महासंघ आदि के तत्वावधान में असम योग जनजागरण यात्रा 2023 का उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग की सचिव वर्णाली शर्मा ने सुस्वाथ्यऔर सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए योगाभ्यास पर महत्वपूर्ण भाषण प्रदान किया। उक्त कार्यक्रम में भारत स्वाभिमान संघ के प्रभारी विद्याधर कुंभकार, भारतीय योग संस्कृति और योग थैरेपी केंद्र के सचिव योगविद प्रफुल्ल बर्मन और पांडू महाविद्यालय के सहयोगी अध्यापक डॉ. शांतनु राय चौधरी वाक्ता के रुप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय योग संस्कृति और योग

थैरेपी केंद्र के संस्थापक अध्यक्ष योगाचार्य शुभाषिश कर ने की। उक्त बैठक में भारतीय योग संघ के उपाध्यक्ष शुभब्रत मोखोपाध्याय , दूरदर्शन केंद्र की प्रोग्राम एक्सिक्युटिव सविता देवी, आरोग्य केयर फाउंडेशन के सचिव रुपज्योति कर, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय के सहायक अध्यापिका डॉ. डानिरांग रेयांग, सहायक अध्यापक माधव बोरा, अखिल असम योग महासंघ की अध्यक्ष दिपिका कलिता, प्रेस इंफोरमेशन ब्यूरो के सहायक निदेशक प्रणव कुमार नाथ, स्वास्थ्यम योग पत्रिका की कार्यकारी सदस्य अरुंधती तालुकदार को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मालीगांव के शिवानंद गुरुकुल और भारतीय योग संस्कृति और योग थैरेपी केंद्र के विद्यार्थियों ने योग प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन दिव्यज्योति डेका ने सुचारु रुप से किया।

No. DIG/NIT/71

TENDER NOTICE (e-Tender)

e-Tenders are invited online through e-procurement system i.e. through the website www.assamtenders.gov.in. for following works.

The e-Tender is Two-Bid System, to be submitted with affixing Court Fee Stamp of worth **Rs. 8.25/-(Rupees Eight and paisa Twenty Five)** only. The Tender Fee and EMD are to be paid through online in the portal i.e. www. assamtenders.gov.in.

IMPORTANT DATES OF THE E-TENDER

Important Particulars

Sl. No.	Name of the work	Place of Work	Total Qty. (RM) (Approx)	Total Unit Rate Rs. (Including GST & Labour Cess)	Earnest money Deposit	Time of completion
1	Erection of Fencing of 25.0 ha. Block Plantation (AR)	Balijan-Borjan area in UDRF, WB under Digboi Range	2500	861.52	2% for GEN, 1% for OBC/ ST/SC of the esti-mated cost	2 months from the date of issue of work order

Note

3) The Contractors / Bidders must be registered with www.assamtenders.gov.in for participating in the bidding process. The Bidding document may be downloaded through the portal assamtenders.gov.in by using their own user ID.

4) Information regarding the sites, nature of work, etc. can be collected from the Divisional Forest Office during office hours on all working days. Bidders are specifically requested to inspect the field and study the working conditions before submitting offer. The concerned Range Officer may be contacted for any assistance in field inspection. The right to participate in the tender is restricted to registered Contractors of Assam Forest Department. Bidders are advised to ensure their eligibility before quoting. Tenders submitted by ineligible bidders shall not be considered and the same shall be summarily rejected.

Divisional Forest Officer,
Digboi Division, Digboi

-- Janasanyog /C/3905/23

लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा ने तेज किया जनसंपर्क अभियान, बंगाल में नेताओं का जमघट

कलकत्ता, (हि.स.)। लोकसभा चुनाव से पहले पूरे देश में जनसंपर्क अभियान की अपनी योजना के तहत भारतीय जनता पार्टी ने पश्चिम बंगाल में भी बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुंचने की तैयारी शुरू कर दी है। गत एक जून से यह अभियान शुरू हुआ है जो 30 जून तक जारी रहेगा। अलग-अलग राज्यों से चुने गए 160 नेताओं को देश के अलग-अलग क्षेत्रों में भेजा जा रहा है। पश्चिम बंगाल में अभियान का नेतृत्व भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों में से एक, जम्मू-कश्मीर के पूर्व उपमुख्यमंत्री कविंदर गुप्ता कर रहे हैं। उनके साथ बिहार भाजपा के पूर्व अध्यक्ष मंगल पांडेय भी हैं। फिलहाल इन दोनों के नेतृत्व में हुगली, बर्दवान-दुर्गापुर, बिष्णुपुर और बनगांव में बैठकों का दौर चल रहा है। हिन्दुस्थान समाचार से विशेष बातचीत में कविंदर गुप्ता ने बताया, "हम अलग-अलग तरीकों से लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में सार्वजनिक बैठकें, पार्टी के किसानों, महिलाओं, युवाओं, अनुसूचित जातियों और जनजातियों, ओबीसी और अल्पसंख्यकों के क्षेत्रीय नेताओं के साथ बैठकें, महत्वपूर्ण व्यक्तियों, पार्टी के पुराने सदस्य, संपादक, वरिष्ठ पत्रकार, व्यवसायी, कलाकार, वैज्ञानिक, खिलाड़ी, ब्लॉगर, ट्रेड यूनियन नेता, केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के लाभार्थी आदि से मुलाकात की जा रही है। 21 जून को विभिन्न क्षेत्रों में योग दिवस मनाया जाएगा। श्यामाप्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस 23 जून को भी कई सार्वजनिक कार्यक्रम किए जाएंगे। इसके अलावा महीने के आखिरी रविवार 25 जून को प्रधानमंत्री मोदी के "मन की बात" कार्यक्रम को हर जगह प्रसारित करने का प्रयास किया जाएगा। कविंदर ने सोमवार को भारत-बांग्लादेश भूमि बंदरगाह का दौरा किया था। केंद्र की 450 करोड़ रुपये की इस परियोजना में क्षेत्रीय स्तर पर कैसे और किस हद तक लाभ मिलेगा, इस बारे में व्यापक प्रचार प्रसार किया जाएगा। मंगलवार को बर्दवान जा रहे हैं। सर्वमंगला मंदिर में कई बैठकें और सभाएं हो रही हैं। बुधवार और गुरुवार को भी उनके पूरे दिन कार्यक्रम हैं। अन्य राज्यों से भाजपा के नेता जो पश्चिम बंगाल में हैं, उनमें रांची की मेयर और इस राज्य में पार्टी की सह पर्यवेक्षक डॉ. आशा लकड़ा हैं। उन्होंने सोमवार को श्रीरामपुर में कुछ रैलियों में हिस्सा लिया था। मंगलवार को कांथी में उनके तीन और खेजूरी और बजकुल में एक-एक कार्यक्रम हैं। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद सुशील कुमार मोदी ने उत्तर बंगाल मेडिकल कॉलेज के सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का दौरा किया था। उत्तर प्रदेश के पूर्व उपमुख्यमंत्री दिनेश कुमार शर्मा ने सोमवार को तारापीठ और नलहाटी का दौरा किया। मंगलवार को, उन्होंने दक्षिण 24 परगना के नामखाना में दो, गंगासागर और रुद्रनगर में एक-एक कार्यक्रम निर्धारित किया है। केंद्रीय पंचायत राज्य मंत्री कपिल मोरेश्वर पाटिल मंगलवार को बीरभूम में चार खास जगहों का दौरा कर रहे हैं। भाजपा के राज्य सह पर्यवेक्षक अमित मालवीय मंगलवार को वैष्णवनगर, "विकासतीर्थ" फरक्का एनटीपीसी जाने वाले हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री और प्रयागराज विधायक सिद्धार्थ नाथ मंगलवार को दो "विकासतीर्थ" दक्षिणेश्वर मेट्रो स्टेशन और सियालदह मेट्रो स्टेशन का दौरा करने वाले हैं। इस अभियान में भाजपा अखिल भारतीय उपाध्यक्ष दिलीप घोष, प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुकांत मजूमदार, पूर्व राष्ट्रीय सचिव राहुल सिन्हा , महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष फाल्गुनी पात्रा, अनुसूचित जनजाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष समीर ओरांव सहित अन्य भाग ले रहे हैं।

भारी वजन वाले स्वदेशी टॉरपीडो ने पानी के भीतर लक्ष्य को बनाया निशाना

- अंडरवाटर टारगेट की कामयाबी को नौसेना ने बताया महत्वपूर्ण मील का पत्थर

नई दिल्ली, (हि.स.)। भारतीय नौसेना और डीआरडीओ ने मंगलवार को स्वदेशी रूप से विकसित भारी वजन वाले टॉरपीडो के साथ पानी के भीतर लक्ष्य को सफलतापूर्वक निशाना बनाया। भारतीय नौसेना ने ट्विटर पर कहा, "स्वदेशी रूप से विकसित हैवी वेट टॉरपीडो द्वारा एक अंडरवाटर टारगेट की कामयाबी भारतीय नौसेना और डीआरडीओ की अंडरवाटर डोमेन में लक्ष्य पर आयुध की सटीक डिलीवरी के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।" नौसेना प्रवक्ता का कहना है कि यह सफल परीक्षण फ्यूचर प्रूफ कॉम्बैट के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दशार्ता है। नौसेना ने पिछले सप्ताह अमेरिकी 'रोमियो' हेलीकॉप्टर एमएच-60 की स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर पहली लैंडिंग कराई थी। इस हेलीकॉप्टर को नेवल एयर स्टेशन आईएनएस गरुड़, कोच्चि से अरब सागर में एयरक्राफ्ट कैरियर पर उतारा गया था। नौसेना ने कहा कि नौसेना के युद्धपोतों के साथ हेलीकॉप्टर का एकीकरण नौसेना की एंटी-सबमरीन वारफेयर (एएसडब्ल्यू) और फ्लीट सपोर्ट क्षमता के लिए एक प्रमुख बढ़ावा है। यह एकीकरण पानी के नीचे के खतरों का मुकाबला करने, समुद्री गतिविधियों की निगरानी करने और निगरानी संचालन करने के लिए नौसेना की क्षमता को और मजबूत करेगा।

राष्ट्रपति मुर्मू सूरीनाम में भारतीयों के आगमन के 150 वर्ष पूरे होने से जुड़े सांस्कृतिक उत्सव में हुईं शामिल

नई दिल्ली, (हि.स.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिकाप्रसाद संतोखी के साथ पारामारिबो में कल शाम (5 जून) सूरीनाम में भारतीयों के आगमन के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक उत्सव में शामिल हुईं। इस अवसर पर उन्होंने ओसीआई कार्ड के लिए पात्रता मानदंड को चौथी पीढ़ी से छठी पीढ़ी तक बढ़ाने के भारत सरकार के निर्णय की घोषणा की। पारामारिबो में इंडिपेंडेंस स्क्वायर में सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि इस दिन, वर्ष 1873 में भारतीयों का पहला समूह जहाज लल्ला रुख से सूरीनाम के तट पर पहुंचा, जो इस देश के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरूआत थी। राष्ट्रपति ने कहा कि एक बहुसांस्कृतिक समाज और अवसरों की भूमि के रूप में सूरीनाम ने वहां आकर बसने वाले सभी विविध समुदायों का स्वागत किया है। इन वर्षों के दौरान विविध समुदाय एक परिवार और एक देश में विकसित हुए। उन्होंने एकता और समग्रता के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए सूरीनाम के लोगों की सराहना की। उन्होंने कहा कि पिछले 150 वर्षों में, भारतीय समुदाय न केवल सूरीनाम में समाज का एक अभिन्न अंग बन गया है, बल्कि यह भारत और सूरीनाम के बीच गहरी होती साझेदारी का एक महत्वपूर्ण स्तंभ भी है। उन्होंने भारतीय क्षेत्रों से सूरीनाम में आए उन मूल भारतीय प्रवासियों की चौथी पीढ़ी से छठी पीढ़ी तक ओसीआई कार्ड के लिए पात्रता मानदंड का विस्तार करने के भारत सरकार के फैसले की घोषणा की। उन्होंने कहा कि ओसीआई कार्ड को भारत के साथ उनके 150 साल पुराने रिश्ते की अहम कड़ी के तौर पर देखा जा सकता है। उन्होंने भारतीय डायस्पोरा के सदस्यों से भारत के साथ अपने संबंध बनाए रखने के लिए प्रयास जारी रखने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भारत-सूरीनाम द्विपक्षीय संबंध विकास की साझा आकांक्षाओं पर आधारित हैं। प्रेसिडेंशियल पैलेस में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति मुर्मू को सूरीनाम के राष्ट्रपति द्वारा सूरीनाम के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ग्रैंड ऑर्डर ऑफ द चेन ऑफ द येलो स्टार' से सम्मानित किया गया। अपनी स्वीकृति टिप्पणी में राष्ट्रपति ने उन्हें यह सम्मान प्रदान करने के लिए राष्ट्रपति संतोखी और सूरीनाम सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि यह मान्यता न केवल उनके लिए बल्कि भारत के 1.4 अरब से अधिक लोगों के लिए भी अत्यधिक महत्व रखती है। उन्होंने भारतीय-सूरीनाम समुदाय की लगातार पीढ़ियों को सम्मान समर्पित किया, जिन्होंने दोनों देशों के बीच भ्रातृत्व संबंधों को समृद्ध करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रपति ने सूरीनाम के राष्ट्रपति द्वारा उनके सम्मान में आयोजित भोज में भी भाग लिया। इस दौरान राष्ट्रपति मुर्मू ने एक समावेशी विश्व व्यवस्था के भारत के दृष्टिकोण को रेखांकित किया जो हर देश और क्षेत्र के वैध हितों और चिंताओं के प्रति संवेदनशील है। उन्होंने कहा कि इसी एकजुटता की भावना से भारत ने कोविड-19 महामारी के दौरान 100 से अधिक देशों की मदद के लिए हाथ बढ़ाया है।

देश की सरकार के प्रति आम आदमी का विश्वास बढ़ाः पुरुषोत्तम रूपाला

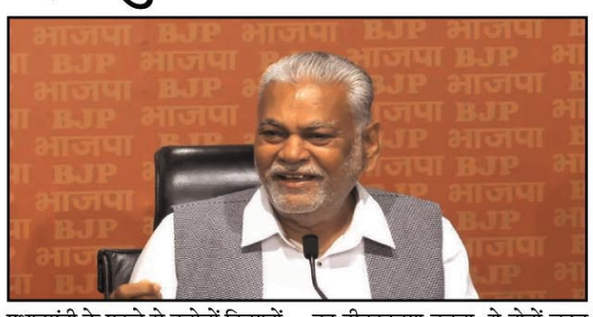

नई दिल्ली, (हि.स.)। केन्द्र सरकार के नौ साल पूरे होने पर केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने कहा कि आज जिस गति से इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने का काम हो रहा है, इसकी चर्चा पूरी दुनिया में है। मोदी ने भारत को लेकर दुनिया के नजरिए को पूरी तरह से बदल दिया है। देश की सरकार के प्रति आम आदमी का विश्वास बढ़ा है। मंगलवार को भाजपा मुख्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में पुरुषोत्तम रूपाला ने कहा कि अकांक्षी जिले प्रोग्राम एक गेम-चेंजर पहल रही है। सरकार अपने नागरिकों के जीवन स्तर को उठाने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सीमावर्ती गांवों को चेतन करने का जो प्रयास आज किया जा रहा है, वो विकास की दृष्टि से तो अहम है ही, सुरक्षा की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मोदी ने पूरे देश के सीमावर्ती गांवों को देश की पंचायतों को और देश के किसानों को अर्थतंत्र के साथ जोड़ दिया है। प्रधानमंत्री के पहले से करोड़ों किसानों को आर्थिक लाभ मिल रहा है। ग्राम पंचायतों को केंद्र सरकार से जोड़ कर आज उन्हें विकास राशि बिना किसी झंझट के मिल रही है, पारदर्शी तरीके से मिल रही है।

सरपंच इस बात की तस्दीक करते हैं कि उन्हें करोड़ों-करोड़ रुपये विकास कार्यों के लिए सरकार ने दिए हैं। केन्द्रीय मंत्री ने बताया कि किसान कल्याण सुनिश्चित करना और पशु स्वास्थ्य में सुधार करना सरकार की प्राथमिकता रही है। पूरे देश के लिए मोबाइल वेटरनरी यूनिट और केंद्र सरकार के खर्चे से पूरे देश में पशुओं का टीकाकरण करना, ये दोनों बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय थे। उन्होंने कहा कि किसानों के दरवाजे पर पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां प्रदान की गई हैं। साथ ही, पशुधन टीकाकरण योजना मोदी सरकार की महत्वपूर्ण पहलों में से एक है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व ने पिछले 9 वर्षों में देश को बदल दिया है। पिछले 9 वर्षों में, 2,000 से अधिक अप्रचलित नियमों और कानूनों को शासन और व्यापार करने में आसानी सुनिश्चित करने के लिए समाप्त कर दिया गया है।

दिल्ली पुलिस ने सांसद बृजभूषण सिंह सहित 14 लोगों के बयान दर्ज किए

अजय कुमार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की एक टीम ने सोमवार को भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ यौन शोषण से जुड़े मामले में 14 लोगों के बयान दर्ज किए हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले काफी समय से कुश्ती खिलाड़ी बजरंग पुनिया, साक्षी मालिक और विनेश फोगाट यौन शोषण के मामले में बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। अधिकारियों के अनुसार दिल्ली पुलिस के अधिकारी बृजभूषण सिंह के गोंडा जिले स्थित आवास पर रविवार शाम को पहुंचे। उन्होंने परिवार के सदस्य, सुरक्षाकर्मियों और अन्य स्टाफ के बयान लिए। पुलिस ने इनके आधार कार्ड भी प्राप्त किए। बृजभूषण शरण सिंह के करीबी ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि सांसद के घर से 14 लोगों के वक्तव्य लिए गए हैं। यह कानूनी प्रक्रिया है और बृजभूषण जांच में सहयोग कर रहे हैं। दिल्ली पुलिस की टीम वक्तव्य लेकर वापस दिल्ली लौट गई है।

350 फाइटर जेट इंजनों को अमेरिका से खरीदेगा भारत

नई दिल्ली (ईएमएस)। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस माह अमेरिका की प्रस्तावित यात्रा के लिए रवाना होंगे। इस यात्रा को यादगार बनाने के लिए विदेश मंत्रालय एवं रक्षा मंत्रालय की कई टीमें काम कर रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान 350 फाइटर जेट इंजनों के भारत में निर्माण का बड़ा राजनीतिक सौदा होने की संभावनाएं जताई जा रही हैं। अमेरिका की कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स के बीच समझौते पर हस्ताक्षर होने की संभावना जताई जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमेरिकी संसद के संयुक्त सत्र को भी संबोधित करेंगे। न्यूयॉर्क में वह अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शामिल होकर, भारत की अगुवाई करेंगे। सामरिक दृष्टि से 50 साल बाद भारत के प्रधानमंत्री की यह अमेरिका यात्रा, वर्तमान राजनीतिक और सामरिक स्थिति के लिए काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

गोपाल राय ने सिविल लाइन में डोर-टू-डोर अभियान चलाकर लोगों से महारैली में आने की अपील की

अजय त्यागी

नई दिल्ली। आगामी 11 जून को दिल्ली के रामलीला मैदान में होने वाली महारैली को लेकर आम आदमी पार्टी ने डोर टू डोर अभियान तेज कर दिया है। मंगलवार को आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश संयोजक एवं कैबिनेट मंत्री गोपाल राय भी डोर टू डोर अभियान में शामिल हुए। सिविल लाइन में डोर टू डोर अभियान के तहत गोपाल राय ने केंद्र के अध्यादेश को लेकर लोगों से बात की और अध्यादेश के खिलाफ अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए महारैली में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की केंद्र सरकार ने अध्यादेश लाकर सुप्रीम कोर्ट के आदेश को पलट कर उसकी अवमानना की है। अगर आज हम इस अध्यादेश के खिलाफ एकजुट होकर खड़े नहीं हुए तो लोगो को वोट देने का लोकतांत्रिक अधिकार भी नहीं बचेगा। राय ने कहा कि दिल्ली में हर मंडल स्तर पर महारैली मंडल कमेटी बनाई गई है। अबतक दो हजार मंडलो की बैठक की जा चुकी है और पूरी दिल्ली में डोर टू डोर अभियान चलाया जा रहा है। डोर टू डोर कैंपेन के दौरान पैम्फलेट बांटे जा रहे हैं। इसके एक तरफ महारैली का आमंत्रण पत्र है और दूसरी तरफ महारैली आयोजित करने के कारण का उल्लेख किया गया है। हमारे कार्यकर्ता इस पैम्फलेट को लेकर घर-घर जा रहे है और सभी दिल्लीवासियो को इस महारैली के लिए आमंत्रित कर रहे हैं।

ऑपरेशन ब्लूस्टार की बरसी पर अमृतसर में जुटे कट्टरपंथी, भारी सुरक्षा व्यवस्था

अमृतसर(ईएमएस)। भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच, मंगलवार को स्वर्ण मंदिर में ऑपरेशन ब्लूस्टार की 39वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है, जिसमें बड़ी संख्या में कट्टरपंथी शामिल हुए, जो सुबह से ही इकट्ठा होने लगे। ऑपरेशन ब्लूस्टार अमृतसर के स्वर्ण मंदिर परिसर में छिपे जरनैल सिंह भिंडरावाले के नेतृत्व वाले उग्रवादियों को बाहर निकालने के लिए दिवंगत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के आदेश पर एक सैन्य कार्रवाई थी। ऑपरेशन ब्लूस्टार 1 और 8 जून, 1984 के बीच किया गया था। इसमें कई लोगों की जान चली गई थी, धर्मस्थल और परिसर क्षतिग्रस्त हो गया था। सिख कट्टरपंथी समूह दल खालसा ने वर्षगांठ मनाने और खालिस्तान के समर्थन में शहर में एक रैली का आयोजन किया। अमृतसर बंद का आह्वान करने वाले कट्टरपंथी संगठन के साथ पंजाब भर में कड़ी सुरक्षा देखी गई है। अकाल तख्त ने एसजीपीसी को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि ऑपरेशन ब्लूस्टार की वर्षगांठ के दौरान स्वर्ण मंदिर की पवित्रता भंग न हो। अकाल तख्त के कार्यवाहक जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह के निजी सहायक जसपाल सिंह ने एसजीपीसी के सचिव को लिखा है कि स्वर्ण मंदिर की पवित्रता को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंह के हस्ताक्षर से पारित प्रस्ताव को अकाल तख्त के निदेर्शानुसार पूरी तरह लागू किया जाए।

गडकरी ने एनएच-160 के चार लेन सिन्नर-शिरडी खंड की तस्वीरें की साझा

आशीष वर्मा

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने मंगलवार को एक लिंक्डइन पोस्ट में भारतमाला परियोजना के एक हिस्से के रूप में राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच)-160 के चार लेन सिन्नर-शिरडी खंड की तस्वीरें साझा कीं। उन्होंने कहा कि यह परियोजना पैदल शिरडी जाने वाले साईं बाबा भक्तों के लिए एक समर्पित मार्ग के रूप में काम करेगी। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि भारतमाला परियोजना के एक हिस्से के रूप में हम वर्तमान में महाराष्ट्र में सिन्नर बाईपास के निर्माण सहित राष्ट्रीय राजमार्ग-160 के सिन्नर-शिरडी खंड को चार लेन का बनाने के काम में लगे हुए हैं। केंद्रीय मंत्री ने सिलसिलेवार ट्वीट कर कहा कि इस परिवर्तनकारी परियोजना का बहुत अधिक सामाजिक महत्व है, क्योंकि यह परियोजना शिरडी की पैदल यात्रा करने वाले साईं बाबा भक्तों के लिए एक समर्पित रूट या 'मार्ग' के रूप में काम करेगी। इसके अलावा, यह आर्थिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने के लिए तैयार है। इससे आसपास के क्षेत्रों का भी तेजी से विकास हो रहा है। गडकरी ने कहा कि इस पहल का एक मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र के दो प्रमुख धार्मिक शहरों शिरडी और नासिक/त्र्यंबकेश्वर के बीच लगने वाले यात्रा समय को काफी हद तक कम करना है। इसके अलावा, स्थिरता के लिए हमारी मजबूत प्रतिबद्धता के अनुरूप, इस परियोजना में कार्बन फुटप्रिंट को न्यूनतम करने और यातायात की भीड़ को कम करने के लिए विभिन्न उल्लेखनीय तकनीकों को शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि उल्लेखनीय प्रक्रियाओं में सर्विस रोड के निर्माण में प्लास्टिक कचरे का उपयोग, सीमेंट ट्रीटेड बेस (सीटीबी) और सीमेंट ट्रीटेड सब-बेस (सीटीएसबी) के साथ-साथ ही सड़क की सतह के लिए 'आरएपी' (रिक्लेम्ड एस्फॉल्ट पेवमेंट) का उपयोग शामिल है। गडकरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में हमारी अटूट प्रतिबद्धता इस क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देते हुए अधिक कुशल और पर्यावरण अनुकूल गतिशील नेटवर्क का निर्माण करने में निहित है।

इंदु ने भारतीय त्योहारों पर बनाया तीसरा विश्व रिकॉर्ड

इंदु नांदल ने भारतीय त्योहारों पर तीसरा विश्व रिकॉर्ड बनाया जिसमें इंदु नांदल जर्मनी, कादंबरी आदेश व मंजु श्रीवास्तव अमेरिका, स्वर्ण तलवार यूके, साहिल नांदल कनाडा, वैशाली रस्तोगी व लीना शारदा इंडोनेशिया, वंदना ओक मलेशिया, अमृत बिसारिया दुबई व संगीता चौबे कुवैत से जुड़ी। भारत से सुरेश चौधरी, बी नेगी कृष्णा, ज्योति राज, सावित्री, गिरीश गुप्ता, सावित्री धायल, राजेंद्र सिंह धायल, सार्थक गुप्ता, नीतेश विजय, डॉ उद्दीप्ता धायल, श्रीमाला सार्थक गुप्ता, आस्था नीतेश विजय, रवि हरिदास कानेकर, नीलम नेगी, त्रिलोक आर्य, डॉ दुर्गेश नंदनी,मथुरा प्रसाद कोरी,अर्जुन सिंह, ऋतम्भरा सेमवाल, रश्मि मृदुलिका, अनुराधा त्यागी, मनोरमा मिश्रा, नवनीता चौरसिया, अस्मिता शैली, प्रवीण पाण्डेय, रेखा मल्हान, निधि विश्वकर्मा, त्यागी अशोका कृष्णम, अलका मधुसूदन पटेल, डॉ.रायसिंह निनामा, डॉ आशा श्रीवास्त, किरण वैद्य 'कठिन', मनोहर चौबे "आकाश", मोनिका रूसिया, डॉ अरविंद कुमार शर्मा, रमेश कुमारी, पी आर भट्ट, प्रभा दूबे, क्षमा श्रीवास्तव, किरण सोनी, मीरा कन्नौजिया, सोनिका शर्मा, रुचि असिजा, मोहिनी रावत, श्यामा गुप्ता, सुनीता तिवारी, सम्पदा ठाकुर, रंजन लाल, डॉ अंजुल कंसल,सुनीता सिंह, अभय कुमार, रुचि गुप्ता, दिशा मिश्रा, डॉ.संगीता भारद्वाज मैत्री, डॉ अशोक तिवारी, रेखा शर्मा, सपना अग्रवाल, अपर्णा नायक व मणिमाला शर्मा जुड़े। लगभग तीस वर्ष से विदेश में रही इंदु ने बताया कि वो ऐसे ही भारत माता पर विश्व रिकॉर्ड बनाती रहेगी और देश व विदेश में रह रहे भारतीयों को एक सूत्र में बांधकर भारत का नाम विश्व में रोशन करती रहेंगी। उन्होंने इस विश्व रिकॉर्ड को सफल बनाने के लिए संजीव नांदल, सुरेश चौधरी, नेगी कृष्णा, वैशाली रस्तोगी, सभी रचनाकारों व इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड का तहेदिल से धन्यवाद किया। सभी रचनाकारों को मेडल व सर्टिफिकेट प्राप्त हुए। प्रत्येक रचनाकार की कलम भारत पर लिख कर अमर हो गई। इंदु ने बताया 132 कविताएँ त्योहारों पर लिखी गई इस विश्व रिकॉर्ड में जो अब पुस्तक के रूप में छपेंगी और विश्व भर में भारतीय संस्कृति की झलक दिखाएँगी। इंदु ने कहा वो ऐसे ही विदेश में रहते हुए भी भारत का तिरंगा फहराती रहेंगी। उनका सपना है कि भारतीय त्योहारों पर आधारित ये खूबसूरत पुस्तक सभी रचनाकारों व पाठकों तक स्वतंत्रता दिवस के पर्व पहँच जाए।

विकासशील देश जिन चुनौतियों का सामना कर रहे उनसे हम अनजान नहीं : एस.जयशंकर

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत-नामीबिया संयुक्त आयोग की बैठक को संबोधित करते हुए कहा है कि दुनिया आज कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जो लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही हैं और विकासशील देश इसका विशेष शिकार रहे हैं। उन्होंने नामीबिया के उप प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री नेटुम्बो नंदी नदितवाह के साथ विंडहोक में पहली भारत-नामीबिया संयुक्त आयोग की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आज जब हम मिल रहे हैं, हम दुनिया से अनजान नहीं हो सकते हैं, उन चुनौतियों से अनजान नहीं हो सकते, जिनका सामना कर रहे हैं और वे हमारे लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। विकासशील देश इसका विशेष शिकार रहे हैं। जयशंकर ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक लागतों के अलावा, उच्च ब्याज दरों, तनावपूर्ण भूराजनीतिक स्थितियों के साथ ऋण संकट के साथ संयुक्त महामारी के बाद उत्पन्न स्वास्थ्य, आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। तो निश्चित रूप से यह समय है, हमारे जैसे देशों के लिए एक साथ काम करने का, एक साथ सोचने का, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सहयोग करने का है लेकिन यह एक मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी बनाकर सबसे अच्छा किया जाता है। विदेश मंत्री ने उम्मीद जताई कि संयुक्त आयोग विचारों, नवाचारों, कौशल और प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच बन जाएगा और हम फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य, हरित और स्वच्छ ऊर्जा जैसे कई क्षेत्रों में देखेंगे, क्योंकि हम भी डिजिटल युग में तेजी से हरित हाइड्रोजन में शामिल हो रहे हैं। जयशंकर ने कहा, आज एक अनूठा और महत्वपूर्ण अवसर है क्योंकि संयुक्त आयोग, जो हमारे संबंधों को आगे बढ़ाएगा, जो स्पष्ट रूप से हमारे द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा और मूल्यांकन करेगा, नए के साथ आएगा।

नामीबिया के राष्ट्रपति से मिलकर प्रधानमंत्री की ओर से दी बधाई - विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने नामीबिया के राष्ट्रपति हेज जिंगोब से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से बधाई दी। बैठक के बाद जयशंकर ने ट्वीट किया, इतनी गर्मजोशी से मेरा स्वागत करने के लिए नामीबिया के राष्ट्रपति हेगेगेइंगोब का धन्यवाद। पीएम नरेंद्र मोदी के व्यक्तिगत अभिवादन से अवगत कराया।

उन्होंने कहा, हमारे रिश्ते के लिए उनकी भावनाओं और इसे आगे ले जाने के दृष्टिकोण की कद्र की। विदेश मंत्री ने जिंगोब को उत्पादक संयुक्त आयोग की बैठक के बारे में भी जानकारी दी जो सोमवार को पहले हुई थी और दोनों देशों के बीच साझेदारी को और गहरा करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। गौरतलब है कि चार जून को तीन दिवसीय यात्रा पर नामीबिया पहुंचे जयशंकर ने देश के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री नेटुम्बो नंदी-नदैतवाह से मुलाकात की थी और द्विपक्षीय सहयोग से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा की थी। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, दोनों नेताओं ने ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, परिवहन और कनेक्टिविटी, डिजिटल, फार्मास्यूटिकल्स, खाद्य सुरक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित अन्य क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने पर चर्चा की।

अखिलेश यादव ने लखीमपुर से 'लोक जागरण यात्रा' का किया शुभारंभ

- यात्रा के जरिए सपा ने लोकसभा चुनाव का किया आगाज
- अखिलेश ने अपने सम्बोधन में भाजपा सरकार पर साधा निशाना

लखीमपुरखीरी, (हि.स.)। लखीमपुर जिला समाजवादियों का गढ़ रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यही है कि जो गढ़ है वो समाजवादियों का गढ़ दोबारा बन जाए। यह बातें दो दिवसीय दौरे पर लखीमपुर आए समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जनता को सम्बोधित करते हुए कही। जनपद में दौरे के दूसरे दिन 'लोक जागरण यात्रा' की शुरूआत करते हुए अखिलेश यादव ने जनसभा को सम्बोधित किया। इस दौरान वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि जिन कंपनियों के लिए काले कानून लाए गए थे, उन्हीं कंपनियों ने आपका पूरा गेहूं खरीद लिया। अगर सरकार ईमानदार है तो बताए कि सरकार ने कितना गेहूं खरीदा, कोई आंकड़ा है? सपा अध्यक्ष ने ओडिशा में हुए रेल हादसे को लेकर केन्द्र की भाजपा सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि ट्रिपल इंजन उड़ीसा में भिड़ गए, वहां पर कितने लोगों की जान चली गई बताओ, अभी भी आंकड़े सही नहीं बता पा रहे हैं और कहते थे ट्रेन में कवच है। वहीं कन्नौज जिले में चौकी के अंदर पुलिस कर्मियों के साथ हुई घटना को लेकर अखिलेश यादव ने भाजपा के सांसद सुब्रत पाठक को आड़े हाथों लिया। उन्होंने बिना नाम लिए कहा कि भाजपा के सांसद अपने गुंडों को लेकर गए और पुलिस की पिटाई की। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि बुलडोजर खड़ा मिलता तो शायद बुलडोजर के पीछे खड़ी होकर पुलिस बच जाती। क्या आप कल्पना कर सकते हो कि किसी सांसद का पुलिस को पता ही ना हो। प्रदेश में जीरो टॉलरेंस के तहत अपराधियों के खिलाफ चलाई जा रही मुहिम को लेकर भी सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि दुःख की बात है कि कस्टोडियल डेथ सबसे ज्यादा हुई है जबसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है।

'लोक जागरण यात्रा' का किया शुभारंभ – लखीमपुरखीरी पहुंचे सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने यहां से आने वाले लोकसभा चुनाव का आगाज कर दिया है। उन्होंने इसको लेकर 'लोक जागरण यात्रा' का शुभारंभ किया। यह यात्रा लखीमपुर खीरी से धौरहरा तक जायेगी। इस यात्रा का थीम रखा गया है 'सामाजिक न्याय और जातीय जनगणना।' अखिलेश यादव ने इस यात्रा के जरिए दलितों और पिछड़ों के साथ से अगले लोकसभा चुनाव का रोड मैप बनाया है। यात्रा में शामिल बसों को रवाना किया गया। अखिलेश खुद यात्रा में शामिल बस पर बैठकर जनता का अभिवादन करते हुए निकले।

प्रतिमा का किया अनावरण – अपने दौरे पर लखीमपुर आए सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आज यहां देवकली में स्व0 डॉ कौशल किशोर की प्रतिमा का अनावरण किया। इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ शिवपाल सिंह यादव, राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता एंव पदाधिकारियों के साथ भारी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उप्र के गोंडा में बृजभूषण सिंह के नौकर, चालक व सुरक्षाकर्मियों से दिल्ली एसआईटी ने की पूछताछ

गोंडा, (हि.स.)। दिल्ली पुलिस की एसआईटी ने रविवार देर रात कैसगरगंज के सांसद बृजभूषण शरण सिंह के पैतृक आवास पहुंचकर 15 से अधिक लोगों के बयान दर्ज किए। दिल्ली पुलिस सोमवार सुबह वापस चली गई। एसआईटी के उनके घर पहुंचने की खबर की भनक किसी को नहीं लगी। यह खबर आज सामने आई है। एसआईटी अब तक 137 लोगों के बयान ले चुकी है। सूत्रों ने बताया कि भारतीय कुश्ती महासंघ के निवर्तमान अध्यक्ष एवं सांसद बृजभूषण सिंह के घर दिल्ली पुलिस की एसआईटी ने पहुंचकर उनके घर पर काम करने वाले नौकर, चालक, करीबियों, सुरक्षाकर्मियों सहित 15 से अधिक लोगों से पूछताछ की। इन सभी के पहचान पत्र, मोबाइल फोन की जांच करने के बाद कुछ लोगों के मोबाइल फोन भी अपने साथ ले गई है। अब तक पहलवानों की ओर से लगाए गए यौन शोषण के आरोपों को लेकर दिल्ली पुलिस 137 लोगों के बयान दर्ज कर चुकी है। दिल्ली से बृजभूषण के गोंडा स्थित घर पहुंची एसआईटी ने उनके नौकर, करीबियों और परिवार के लोगों से उनके रहन-सहन के बारे में, आने-जाने का समय और दैनिक दिनचर्या पर गहनता से बात की। नौकरों के नाम और पते भी पूछे। बृजभूषण सिंह के यहां कितने दिनों से काम कर रहे हैं, बृजभूषण को कब से जानते हैं, क्या बृजभूषण सिंह कभी-कभी किसी आमंत्रण को लेकर बिना सुरक्षाकर्मी या फिर आप लोगों को साथ लिए बगैर कहीं जाते हैं? ऐसे ही घर पर काम करने वाले नौकर और चालक, सुरक्षाकर्मियों से भी सवाल किया गया। बृजभूषण सिंह के जिम जाने के समय और वहां से वापस आने के बाद की गतिविधि के बारे में भी एसआईटी ने जानकारी हासिल की।

उपमुख्यमंत्री के आगमन से पूर्व भानु सहाय किए गए हाउस अरेस्ट

-बोले, जनप्रतिनिधियों के मुंह में दही जमा है, बुंदेलियों की कौन सुने

झांसी, (हि. स.)। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के शहर आगमन से पूर्व बुंदेलखंड निर्माण मोर्चा के अध्यक्ष भानु सहाय को एक बार फिर हाउस अरेस्ट कर लिया गया। उन्होंने व्हाट्सएप पर अपने घर पर बंदी बनाए जाने की फोटो जारी करते हुए लिखा कि जनप्रतिनिधियों के मुंह में दही जमा है। ऐसे में बुंदेलखंडियों की कौन सुनेगा? वह झांसी की कुछ बड़ी समस्याओं को लेकर उपमुख्यमंत्री से मिलना चाहते थे। उन्होंने कहा कि न मुझे डराया जा सकता और न ही मेरी आवाज दबाई जा सकेगी। जब अवसर मिलेगा तब प्रदेश मुख्यालय के लोगों के सामने अपनी बात जरूर रखूंगा। उन्होंने कहा जनप्रतिनिधियों के मुंह में दही जमा है। अब बुंदेलियों का दुख दर्द कैसे कम हो। उन्होंने बड़ी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए कहा कि बुन्देलखंड विश्वविद्यालय को स्ववित्त पोषित से हटाकर 100 प्रतिशत अनुदान दिया जाए। बुन्देलखंड क्षेत्र के मेडिकल कॉलेज में रिक्त पड़े पदों को भरे जाने एवं चिकित्सीय उपकरण के लिए 20 करोड़ रुपये स्वीकृत किये जाएं। अवैध खनन पर नो टॉलरेन्स की नीति का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। झांसी स्मार्ट सिटी में व्याप्त भ्रष्टाचार पर नकेल कसी जानी चाहिए। कैमासिन की पहाड़ी की जांच होनी चाहिए। मेडिकल कॉलेज में खाली पड़े 50 प्रतिशत से ज्यादा पद से बुंदेलियों को ससमय इलाज कैसे मिले एवं 20 करोड़ के चिकित्सीय उपकरण के लिए धनराशि कब तक मिलेगी। ऐतिहासिक लक्ष्मीताल के भ्रष्टाचार की जांच होनी चाहिए। ऐसे मुद्दों को लेकर वह उपमुख्यमंत्री से मिलना चाहते थे। इन मुद्दों के ऊपर बात किससे करूं। जब देखो तब हाउस अरेस्ट कर लिया जाता हूं।

बच्चे देश के भविष्य, भारतीय संस्कृति का संरक्षण करना आसान : अमिता तिवारी

कानपुर, (हि.स.)। बच्चे देश का भविष्य हैं। इनमें भारतीय संस्कृति का संचार बहुत ही सरल ढंग से किया जा सकता है। यह बातें एमराल्ड गार्डन वेलफेयर सोसाइटी के पांच दिवसीय समर कैंप के समापन के दौरान मंगलवार को बोर्ड की सदस्य अमिता तिवारी ने कही। उन्होंने कहा कि देश की प्राचीन परम्पराओं और संस्कृति को बचाए रखने के लिए शिविर लगाना बहुत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि इस समर कैंप में बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिला है। बच्चों के भविष्य को अच्छा बनाने के लिए अनुभवी लोगों ने उनमें संस्कार डालने का बहुत अच्छा प्रयास किया है। टीम के सदस्यों ने बच्चों के लिए सुरुचिपूर्ण बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। बच्चों को श्लोक और धार्मिक ग्रंथ, पौधों एवं जीवन के बारे में विस्तार से बताया गया। उल्लेखनीय है कार्यक्रम के प्रथम दिन संस्था के सचिव गौतम कनोडिया और बोर्ड के सदस्यों ने दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ किया था। कैंप की पूरी जिम्मेदारी अमिता तिवारी और जयश्री चुग,सीमा तिवारी, ममता अवस्थी ने निभाई। शिविर के दूसरे दिन डॉक्टर मनीषा ने गुड टच-बैड टच के बारे में बताया। उसके बाद बच्चों की मस्ती के लिए ज्योति ने मैजिक शो का आयोजन करवाया। तीसरे दिन सौम्या कपूर ने योग सिखाया। साथ ही रश्मि कपूर ने बच्चों के लिए मस्ती की पाठशाला आयोजित की। इसी क्रम में चौथे दिन मंजू सर्राफ ने गेम जोन का आयोजन किया जिसमें बच्चों ने खूब मस्ती की। पांचवें एवं समापन के मौके पर पायल अग्रवाल ने आम की कहानी के माध्यम से बच्चों मनोरंजन किया। साथ ही मिनी बेरीवाल ने बच्चों को माफिन चॉकलेट सजाने सिखाए। शिविर में आए बच्चों ने चॉकलेट खा कर खूब मजे उड़ाए। कार्यक्रम में मुख्य सहयोगी राशि, सरिता जैन, नैना जैन, प्रतिभा जैन, सरिता यादव, स्वाति और दीपाली आदि उपस्थित रहीं।

राज्यपाल ने लोहरदगा में ग्रामीणों के साथ किया संवाद किया

लोहरदगा, (हि.स.)। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन मंगलवार को लोहरदगा पहुंचे। बॉर्डर पर प्रशासनिक अधिकारियों ने उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। उन्होंने लोहरदगा प्रखंड के भक्सो एवं रामपुर गांव में पहुंचकर वहां चल रही विकास योजनाओं का अवलोकन किया। साथ ही ग्रामीणों के साथ संवाद भी किया। राज्यपाल ने ग्रामीणों से कहा कि गांव का विकास होगा तभी आप का विकास संभव है। सभी लोग मिलकर अपने गांव का विकास करें। इसमें किसी भी तरह की जरूरत हुई तो मैं हमेशा आपके लिए तत्पर हूं। इस दौरान ग्रामीणों ने उन्हें इलाके में सड़क, बिजली, पानी, सिंचाई की सुविधा जैसी समस्याओं से अवगत कराया। राज्यपाल ने समस्याओं के निदान के लिए वहां मौजूद जिले के उपायुक्त डॉ प्रसाद कृष्ण वाघमारे से चर्चा की और उन्हें निर्देश दिया कि जो भी समस्याएं हैं उनके समाधान के लिए गांव में कैंप लगाएं। भक्सो गांव में पौधरोपण कार्यक्रम को देखकर राज्यपाल काफी प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि सरकार की बहुत सारी योजनाएं हैं। आप सबों को इन योजनाओं की जानकारी होनी चाहिए। राज्यपाल ने महिलाओं का आह्वान करते हुए कहा कि आप अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दें। क्योंकि, शिक्षा से बढ़कर कोई भी धन नहीं है। इस मौके पर परिसदन भवन में राज्यपाल से लोहरदगा जिला के प्रबुद्ध लोगों ने भी मुलाकात की और कई मुद्दों पर चर्चा की। राज्यपाल सड़क मार्ग से लोहरदगा आए थे और सड़क मार्ग से ही लौट गए।

15 जून को भारत बंद के आह्वान को ले अशोक सम्राट भवन में कार्यक्रम आयोजित

किशनगंज, (हि.स.)। अपनी विभिन्न मांगों को लेकर आदिवासी सेंगल अभियान के द्वारा 15 जून को भारत बंद का आह्वान किया गया है। इसी के मद्देनजर मंगलवार को खगड़ा स्थित अशोक सम्राट भवन में आदिवासी सेंगल अभियान के द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पूर्व सांसद सह आदिवासी सेंगल अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सालखन मुर्मू, केंद्रीय संयोजक सुमित्रा मुर्मू, अभियान के जिलाध्यक्ष विश्वनाथ टुडू व अन्य आदिवासी नेता शामिल हुए। पूर्व सांसद सालखन मुर्मू ने कहा कि करो या मरो के तर्ज पर 15 जून को आदिवासी सेंगल अभियान देशभर में एक साथ भारत बंद का आयोजन करेगी। इसके अलावे 30 जून को कोलकाता के ब्रिगेड परेड ग्राउंड में आयोजन किया जाएगा। जिलों में जाकर बंद को सफल बनाने की अपील की जा रही है। उन्होंने कहा कि आजाद भारत में आदिवासियों को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आजादी नहीं मिली है। उन्होंने कहा कि भारत के 13 करोड़ आदिवासी क्यों नहीं मिली है। विभिन्न मांगों को लेकर 15 जून को भारत बंद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि संथाली भाषा राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त बड़ी आदिवासी भाषा है। इसके बावजूद यह अभी तक झारखंड की राजभाषा नहीं है।

विपक्ष के 70 सालों के कुशासन पर भारी मोदी सरकार के नौ साल : तेजस्वी सूर्या

मेरठ, (हि.स.)। भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बेंगलुरु से सांसद तेजस्वी सूर्या ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार के नौ साल के शासन में देश की तस्वीर बदल गई है। बिना किसी भेदभाव के समाज के प्रत्येक वर्ग का सर्वांगीण विकास हुआ है। विपक्ष के 70 सालों के कुशासन पर नरेंद्र मोदी सरकार के नौ साल भारी है। मोदी सरकार से पहले देश में कुशासन का राज था। मोदी सरकार के नौ साल बेमिसाल महासंपर्क अभियान के तहत मंगलवार को मेरठ में भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद तेजस्वी सूर्या ने जनसंपर्क अभियान चलाया। सबसे पहले कार्यकताओं ने भाजयुमो अध्यक्ष का स्वागत किया। इसके बाद तेजस्वी सूर्या ने कैंट स्थित औघड़नाथ मंदिर में जलाभिषेक और पूजा-अर्चना की। उन्होंने एसजीएम गार्डन मेरठ कैंट में व्यापारी वर्ग सम्मेलन में भाग लिया और मोदी सरकार के नौ साल की उपलब्धियों को गिनाया। इसके साथ ही घर-घर जनसंपर्क अभियान के तहत लोगों को सरकार की उपलब्धियों से अवगत कराया। इसके बाद प्रेस वार्ता कर मोदी सरकार के नौ साल की उपलब्धियों को विस्तार से बताया। तत्पश्चात आईआईएमटी विश्वविद्यालय गंगानगर में संयुक्त मोर्चा सम्मेलन में भाग लिया। सांसद तेजस्वी सूर्या ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार ने नौ साल में विकास कार्यों की झडी लगा दी। इस दौरान चार करोड़ लोगों को मकान, 50 करोड़ लोगों के जनधन बैंक खाते, 11 करोड़ लोगों को शौचालय, 10 करोड़ उज्ज्वला योजना के कनेक्शन दिए। दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ाया। मोदी सरकार गरीब कल्याण की भावना से कार्य कर रही है। देश के सांस्कृतिक पतन को रोककर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिर से सांस्कृतिक गौरव लौटाने का कार्य कर रहे हैं। पूरे देश में सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में पांच हजार नवमतदाताओं का पंजीकरण कराया जाए। युवा मतदाता को बूथ पर लाया जाना चाहिए। आगामी 30 दिनों में 75 लाख लाभार्थियों से संपर्क करने का लक्ष्य दिया गया है। उन्होंने युवा मोर्चा कार्यकताओं से कहा कि इंटरनेट मीडिया पर नहीं, बूथ पर ही जीतने का काम होता है। इस अवसर पर प्रदेश के ऊर्जा राज्य मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर, राज्यसभा सदस्य कांता कर्दम, एमएलसी डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, धर्मेंद्र भारद्वाज, कैंट विधायक अमित अग्रवाल, महापौर हरिकांत अहलूवालिया, भाजपा महानगर अध्यक्ष मुकेश सिंघल, भाजपा जिलाध्यक्ष विमल शर्मा, कमलदत्त शर्मा, भाजयुमो के प्रदेश मंत्री वरुण गोयल, भाजयुमो के राष्ट्रीय महामंत्री रोहित चहल, भाजयुमो के क्षेत्रीय अध्यक्ष सुखविंदर सोम, भाजयुमो महानगर अध्यक्ष अंकुर कुशवाहा, भाजयुमो जिलाध्यक्ष मोहन गुर्जरआदि उपस्थित रहे।

श्रम मंत्री और पूर्व कृषि मंत्री सत्यानंद भोक्ता के डिस्चार्ज पिटीशन पर सुनवाई 16 को

रांची, (हि. स.)। राज्य के श्रम मंत्री और पूर्व कृषि मंत्री सत्यानंद भोक्ता से जुड़े बीज खरीद घोटाला मामले में एसीबी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत में मंगलवार को डिस्चार्ज पिटीशन पर आंशिक सुनवाई हुई। सत्यानंद भोक्ता की ओर से साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए कोर्ट से समय की मांग की गई। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई की तिथि 16 जून निर्धारित की है। उल्लेखनीय है कि बीज घोटाला में जब आरोप पत्र दायर किया गया था, तब सत्यानंद भोक्ता कृषि मंत्री थे। वर्ष 2004 से 2007 के बीच 46.10 करोड़ रुपये से अधिक का बीज घोटाला हुआ था। इस दौरान कुछ संस्थाओं से गेहूं, चना और दूसरे अनाज के बीज की खरीद के नाम पर कथित तौर पर गबन हुआ था। मामले में कृषि विभाग के पूर्व निदेशक निस्तार मिंज, पूर्व मंत्री नलिन सोरेन और पूर्व कृषि निदेशक वी जयराम सहित अन्य लोग भी आरोपित बनाये गये हैं।

आम जनों से थानाध्यक्ष करें बेहतर व्यवहार : एसडीपीओ

किशनगंज, (हि.स.)। थाना आने वाले फरियादियों की समस्याओं को थानाध्यक्ष प्राथमिकता के रूप में लेंगे। आम जनों के साथ पुलिस का बेहतर व्यवहार पुलिस की छवि को और भी सशक्त बनाएगा। यह निर्देश मंगलवार को एसडीपीओ गौतम कुमार ने अपने कार्यालय में आयोजित क्राइम मीटिंग में थानाध्यक्षों को दी। एसडीपीओ ने कहा कि पुलिस पदाधिकारी थाना आने वाले फरियादियों से कुशल व्यवहार करेंगे। ऐसी कोई शिकायतें न मिले। रात्रि गश्ती में किसी प्रकार की ढील नहीं होनी चाहिए। इसके लिए थानाध्यक्ष अपने अपने थाना क्षेत्रों में सतर्क रहेंगे। किसी किस्म की लापरवाही न करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक थाना में शनिवार को जनता दरबार लगाया जाता है। इसे थानाध्यक्ष प्राथमिकता के रूप में लेंगे। जमीन सम्बंधित विवाद के मामले सामने आते रहते है। ये मामले जनता दरबार में भी सुलझाए जा सकते हैं। एसडीपीओ ने कहा कि बच्चों व महिलाओं पर हो रहे अपराध पर अंकुश लगाया जाना है। प्रत्येक दिन अपने अपने थाना क्षेत्र में वाहन चेकिंग अभियान चलाए। शराब तस्करी पर अंकुश लगाए जाने को लेकर चेक पोस्टों में चेकिंग अभियान चलाया जाना है। क्राइम मीटिंग में लंबित कांडों की समीक्षा की गई। बैंक व भीड़ वाले इलाकों में गश्ती बढ़ाये जाने का निर्देश दिया गया। समय से कांडों के निष्पादन, वारंटियों की गिरफ्तारी आदि का निर्देश दिया गया।

जून को होगा जिला योजना समिति के सदस्यों का चुनाव

मेरठ, (हि.स.)। जिला योजना समिति के सदस्यों का चुनाव 25 जून को होगा। इसके लिए जिला योजना समिति के निर्वाचन अधिकारी और जिला मजिस्ट्रेट दीपक मीणा ने नोटिस जारी कर दिया है। जिला मजिस्ट्रेट व निर्वाचन अधिकारी (जिला योजना समिति) दीपक मीणा ने बताया कि जिला मेरठ में नगरीय निकायों (नगर निगम/नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत) के निर्वाचित सदस्यों में से जिला योजना समिति के लिए सदस्य का चयन होना है। इसमें वर्गवार अनारक्षित वर्ग छह, अनारक्षित वर्ग (महिला) तीन, अनुसूचित जाति एक, अनुसूचित जाति (महिला) एक, अन्य पिछडा वर्ग दो तथा अन्य पिछडा वर्ग (महिला) एक सदस्यों को निर्वाचित किया जाना है। उन्होंने सार्वजनिक नोटिस जारी करते हुए बताया कि जिला पंचायत मेरठ सभागार में 17 जून को नामांकन पत्र जमा किए जा रहे हैं। सुबह 11 से दोपहर बाद चार बजे तक नामांकन पत्र जमा होंगे। चार बजे से नामांकन पत्रों की जांच होगी। 21 जून को सुबह 11 बजे से दोपहर बाद तीन बजे तक नाम वापसी होगी। चुनाव में आवश्यक होने पर मतदान 25 जून को सुबह आठ बजे से दोपहर बाद तीन बजे तक होगा। दोपहर बाद तीन बजे से मतगणना शुरू होगी। नामांकन पत्र 10 से 17 जून तक सुबह दस बजे से दोपहर बाद दो बजे तक निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय से लिए जा सकते हैं।

पीएलएफआई सुप्रीमो दिनेश गोप की रिमांड अवधि खत्म, भेजा गया जेल

रांची, (हि.स.)। प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के सुप्रीमो दिनेश गोप की रिमांड अवधि पूरी होने के बाद मंगलवार को कड़ी सुरक्षा के बीच एनआईए के विशेष न्यायाधीश मधुरेश प्रसाद वर्मा के कोर्ट में पेश किया गया। एनआईए के आग्रह को देखते हुए कोर्ट ने दिनेश गोप को न्यायिक हिरासत में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार भेजने का आदेश दिया। एनआईए आवश्यकता पड़ने पर फिर से बाद में दिनेश गोप को रिमांड पर ले सकती है। इससे पूर्व सोमवार को एनआईए ने दिनेश गोप को एक दिन के लिए पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया था। उल्लेखनीय है कि पीएलएफआई सुप्रीमो दिनेश गोप को एनआईए ने 21 मई को दिल्ली से गिरफ्तार किया था। इसके बाद ट्रांजिट रिमांड पर विमान से रांची स्थित बिरसा मुंडा एयरपोर्ट लाया गया था। दिनेश गोप के खिलाफ झारखंड, बिहार और ओडिशा में हत्या, अपहरण, धमकी, जबरन वसूली और पीएलएफआई के लिए धन जुटाने से संबंधित 102 से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। झारखंड पुलिस ने दिनेश गोप पर 25 लाख और एनआईए ने पांच लाख का इनाम घोषित किया था।

ओम शांति केन्द्र में राजद महिला प्रदेश अध्यक्ष रितु जायसवाल को किया गया सम्मानित

अररिया, (हि.स.)। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष रितु जायसवाल मंगलवार को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के फारबिसगंज शाखा के ओम शांति केंद्र पहुंची और शिव बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। केंद्र की संचालिका बी के रुक्मा दीदी के नेतृत्व में दर्जनों भाई बहनों ने उनका जोरदार स्वागत किया। स्वागत गीत के बाद शाल और माला के साथ बुके भेंट कर राजद नेत्री को सम्मानित किया गया।मौके पर रुक्मा दीदी ने कहा की आज के इस भौतिकवादी युग में मानवता की सेवा के लिए आपको अपने दूत के रूप में भेजा है जिसे आप न सिर्फ अपने सिंहवाहिनी पंचायत बरन पूरे राज्य में घूम घूम कर अलख जगा रहीं है। आप में चुनौती को अवसर में बदलने की शक्ति ईश्वर ने आशीर्वाद के रूप में दी है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए राजद व्यवसायी प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव ई.आयुष अग्रवाल ने बताया की श्रीमती जायसवाल काफी रसूखदार परिवार से होने के बावजूद राजनीति में सिर्फ इसलिए आईं की उन्हें आम जनमानस की सेवा करनी हैं और इस दिशा में में इन्होंने इतना काम किया है कि न सिर्फ प्रदेश वरन राष्ट्रीय स्तर पर पुरुस्कार प्राप्त हुआ है। संघर्ष, समर्पण, ईमानदारी के दम पर सफलता पाना इनकी पहचान है। वहीं राजद नेत्री जायसवाल ने सभी के प्रति आभार जताते हुए कहा की उन्हें बी के शिवानी के शब्दों से ताकत मिलती है। उनकी बातों पर अमल करने पर उलझने अपने आप सुलझने लगती हैं। उन्होंने कहा कि सफलता पाने का सबसे अच्छा तरीका है कि भागने से अच्छा होता है भाग लें। व्यर्थ के काम से मन परेशान होता जबकि मानवता की सेवा से मन प्रसन्न होता है। घर में पूजा जितनी जरूरी है उतनी हीं जरूरत कमजोर और असहाय के चेहरों पर खुशी लाना जरूरी है। उन्होंने मदद के काम में जोड़ घटाव नहीं करने कि अपील करते हुए कहा की आप एक कदम आगे बढ़ाएं ऊपरवाला आपको इतना देगा जितना आपने सोचा भी नही होगा। ब्रह्माकुमारी सेंटर की मुक्त कंठ से तारीफ करते हुए उन्होंने कहा की इस संस्था से जुड़े हर लोग न सिर्फ सत्य मार्ग पर चलने वरन समाजसेवा के लिए भी संदेश अनवरत दे रहे हैं। इस अवसर पर बी के सीता दीदी, संतोषी दीदी, सौहल दीदी, मीदुर्ला भगत, शांति मैडम, फूलकुमारी कनोजिया, सिंधु दीदी, मंजू दीदी, इंदु दीदी, रिया बहन, फूल दीदी, अर्चना डाबरीवाल, शांति दीदी, बी के अरविंद भाईजी, मदन कनोजिया, अशोक डाबरीवाला, रामप्रकाश भाई, दुलाल दा, आदित्य भाई, अजातशत्रु, अग्रवाल, राजद के देवेंद्र कुमार, राजद नेत्री अनिता भारती एवम स्नेहा रानी, सिंपल सर, संजय, बोथरा, विकाश, भाई, अशोक डालमिया सहित दर्जनों बी के भाई बहन उपस्थित थे।

संपादकीय

आंदोलनों में फंसा विकास

कहीं हिमाचल के विकास मॉडल में कमी रही या भविष्य के लिए विकास को बेरोजगार करने की मुहिम छिड़ी है। जहां कहीं विकास अपनी अधोसंरचना में नए रोजगार-नए अवसर की तलाश शुरू करता है, हिमाचल में विरोध की गलियां उभर आती हैं। खास तौर पर जहां ताल्लुक पर्यटन को संवारने का है, वहां भी विरोध के नाम पर विरोध उभर आता है। ताजातरीन उदाहरण बिजली महादेव रज्जु मार्ग का है जहां विरोध की खेप में, पर्यटन विकास की इच्छाशक्ति के खिलाफ समाज के एक वर्ग का रोष मुखालफत कर रहा है। कुल्लू घाटी के पर्यटन को नए आयाम पर ले जाने के लिए यह जरूरी रहा है कि कुछ अभिनव प्रयोग किए जाएं। इसी दृष्टि से पहले जब ऐसी ही महत्त्वाकांक्षी परियोजना, 'स्की विलेज' की परिकल्पना में अंतरराष्ट्रीय डेस्टिनेशन की छलांग लगाना चाहती थी, जनता के स्वार्थी तत्वों ने देवी-देवताओं को भी अखाड़े पर लगा दिया। नतीजतन 'स्की विलेज' परियोजना ही ध्वस्त नहीं हुई, बल्कि हिमाचल में हाई एंड टूरिज्म की एक बड़ी संभावना भी नष्ट हो गई। इसी परिप्रेक्ष्य में बिजली महादेव रज्जु मार्ग परियोजना भी अपने साथ आर्थिक संभावनाओं का पहाड़ खोजना चाहती है, लेकिन फिर उसी देव संस्कृति के बहाने माहौल को उद्वेलित किया जा रहा है। हो सकता है परियोजना के वर्तमान स्वरूप से कुछ शिकायतें रही हों या कुछ पंचायतों के हित आड़े आ रहे हों, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि पूरी परिकल्पना को चौपट कर दिया जाए। प्रभावित समाज की शिकायतें व ख्वाहिशें अगर भविष्य के प्रति घंटी बजा रही हैं, तो उसका समाधान जायज है, लेकिन हो हल्ला इतना न हो कि भविष्य के बड़े लक्ष्य पीछे छूट जाएं। इसी प्रदेश में धूमल सरकार ने ऊना में विशेष आर्थिक जोन के तहत हवाई अड्डे की एक बड़ी परिकल्पना तैयार की थी, लेकिन गैर वाजिब आंदोलनों ने आर्थिकी के इस अवसर को जमींदोज कर दिया। हिमाचल का विकास अब एक बड़े कैनवास पर ही उकेरा जा सकता है, इसलिए परिवर्तन होंगे। भविष्य की सही दिशा और रफ्तार पकडने के लिए प्रदेश को अपने विकास की दिशाएं बदलनी पड़ेंगी। दिशाएं मेगा परियोजनाओं से ही सामने आएंगी, जो अगले सौ सालों की तरक्की को परिभाषित करेंगी। मसलन कांगड़ा हवाई अड्डे का विस्तार अगले सौ सालों की तरक्की से मुखातिब होगा, तो निवेश की नई संभावनाएं भी सामने आएंगी। कमोबेश ऐसी ही परिस्थिति में विकसित हो रही फोरलेन परियोजनाएं भी आने वाले कल के आर्थिक अवसर बदल देंगी। स्की विलेज से बिजली महादेव रोप-वे तक पहुंचते-पहुंचते यह तो साबित हो गया कि हिमाचल में एक वर्ग ऐसा भी है जो विकास की शक्ति और संभावना को क्षीण कर सकता है। सबसे गैरजरूरी व गंभीर प्रश्न यह है कि परियोजना या विकास विरोधी राजनीति देव परंपरा को बंधक बना रही है, जबकि यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखें तो आज का इनसान परंपराओं और संस्कृति के विरोध में कुछ भी करने को तैयार है, बशर्ते भौतिक उपलब्धियां एक तरफा हो जाएं। इसी कुल्लू घाटी में नशे के सौदागर पाप की नगरियां बसा रहे हैं, तो समाज का खून नहीं खौलता। सारे पहाड़ को जेसीबी खोद दे कोई फर्क नहीं पड़ता। देखते ही देखते मनाली ने अपने अस्तित्व में बेहूदा कंक्रीट भर लिया, लेकिन यह हमें नजर नहीं आता। हम सिर्फ यह देखते हैं कि व्यवस्थित ढंग से अगली सदी संबोधित न हो। हमारे प्रश्न किसी भी बड़े संकल्प को धराशायी करने की हिम्मत करते हैं, लेकिन सुधार के लिए तैयार नहीं। अगर आज ही कहा जाए कि बिजली महादेव के आसपास दस बीस वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में साडा के तहत ही नवनिर्माण होगा, तो बिजलियां गिर जाएंगी। अगर कहा जाए कि पर्यावरण बचाने के लिए सफाई या ग्रीन टैक्स लगा दिया जाए, तो यही समाज आनाकानी में लोटने लगेगा। समाज को आधुनिक बस स्टैंड चाहिए, नए दफ्तर, नई इमारतें और नई-नई परियोजनाएं चाहिएं, लेकिन विरोध के लिए वह कभी पेड़ न काटने की दुहाई देगा तो कभी इसे देव इच्छा के विरुद्ध बता देगा। ऐसे में बिजली महादेव परियोजना का विरोध, अगली सदी के हिमाचल का विरोध है। यह भावी पीढियों की आत्मनिर्भरता का विरोध है। जिन्हें लगता है कि रज्जु मार्ग आने से बिजली महादेव की यात्रा या क्षेत्रीय पवित्रता भंग हो जाएगी, वह जरा यह सोच कर बताएं कि कुल्लू घाटी के कितने धार्मिक स्थलों की जमीन पर अनधिकृत कब्जे हुए हैं। प्रदेश के कमोबेश हर धार्मिक स्थल, नदियों, नालों, कूहलों और प्राचीन धरोहरों के आसपास की जमीन पर अवैध कब्जों में इसी जनता को देखा जाए, तो पता चल जाएगा कि भगवान के नाम पर दोगलापन कितना गहरा व असंवेदनशील है। सरकार के सामने यह मात्र एक परियोजना का सवाल नहीं होना चाहिए, बल्कि अगली सदी के विकास और संरक्षण के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ होते हुए नए संकल्पों की इच्छाशक्ति का परिचायक होगा। देखना यह होगा कि कुल्लू एक बार फिर स्की विलेज खोने के बाद बिजली महादेव रोप-वे खो देगा या विकास के प्रति कहीं जागृत समाज भी सामने आएगा।

कुल्लू घाटी के पर्यटन को नए आयाम पर ले जाने के लिए यह जरूरी रहा है कि कुछ अभिनव प्रयोग किए जाएं। इसी दृष्टि से पहले जब ऐसी ही महत्त्वाकांक्षी परियोजना, 'स्की विलेज' की परिकल्पना में अंतरराष्ट्रीय डेस्टिनेशन की छलांग लगाना चाहती थी, जनता के स्वार्थी तत्वों ने देवी-देवताओं को भी अखाड़े पर लगा दिया। नतीजतन 'स्की विलेज' परियोजना ही ध्वस्त नहीं हुई, बल्कि हिमाचल में हाई एंड टूरिज्म की एक बड़ी संभावना भी नष्ट हो गई। इसी परिप्रेक्ष्य में बिजली महादेव रज्जु मार्ग परियोजना भी अपने साथ आर्थिक संभावनाओं का पहाड़ खोजना चाहती है, लेकिन फिर उसी देव संस्कृति के बहाने माहौल को उद्वेलित किया जा रहा है।

कुछ अलग

सुरक्षा सरोकारों के अभाव

बालासोर रेल हादसे से सुरक्षा का मुद्दा उभरा है, जिसका सरोकार लापरवाही से ही है। इसके मद्देनजर भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) और रेलवे की संसदीय स्थायी समिति की रपटें गौरतलब हैं। दिसंबर, 2016 और मार्च, 2023 में दोनों संस्थाओं ने रेलवे में सुरक्षा के साथ खिलवाड़ को बार-बार उठाया है। कैग और संसदीय स्थायी समिति की तीन रपटों के निष्कर्ष हैं कि रेलवे में सुरक्षा मानकों के अभाव रहे हैं। यह आंतरिक प्रोटोकॉल के भी खिलाफ है। रेलवे में सुरक्षा के अग्रिम और केंद्रीय सरोकारों की कमी हमेशा रही है। रेलवे सरीखे विराट मंत्रालय में ऐसी लापरवाही और विसंगतियों का नतीजा बालासोर रेल हादसा हो सकता है? क्या रेलवे यात्रियों को 'लाश' बनाने को ही बना है? यह सवाल भी है और जिज्ञासा भी है। 2017-18 में रेल सुरक्षा की चुनौतियों के मद्देनजर 'राष्ट्रीय रेल संरक्षा कोष' की स्थापना के साथ महत्वपूर्ण शुरुआत की गई थी। सुरक्षा संबंधी कामों को व्यवस्थित, चरणबद्ध और एक निश्चित प्रणाली के तौर पर अंजाम दिया जाना था। अधिकतर फंडिंग आम बजट के जरिए तय की गई थी, ताकि संसाधनों का प्रवाह निरंतर और स्थिर बना रहे। मार्च, 2023 में रेलवे संसदीय स्थायी समिति ने अपनी रपट में खुलासा किया कि पैसा प्राथमिक समस्या कभी नहीं रहा, लेकिन एक बार भी सालाना कोष पूरी तरह खर्च नहीं किया गया। नतीजतन बीते 6 साल के दौरान 1127 रेल हादसे हुए और 370 बार ट्रेरन की बोगियां पटरी से उतरीं। मोदी सरकार संसद के भीतर और बाहर दावा करती रही है कि रेल सुरक्षा पर 1 लाख करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। सरकार ने कितनी राशि आवंटित की और रेलवे ने कितना खर्च किया, अब देश को यह स्पष्टीकरण तो देना ही पड़ेगा। यदि विपक्षी कांग्रेस और पूर्व रेल मंत्री ममता बनर्जी सुरक्षा के सरोकारों को उठा रहे हैं और बालासोर रेल त्रासदी के असल आंकड़ों पर सवाल कर रहे हैं, तो बुनियादी तौर पर वे गलत नहीं हैं। ममता तथा एक और पूर्व रेल मंत्री नीतीश कुमार के कार्यकालों के दौरान कितनी रेल दुर्घटनाएं हुईं और कितने लोगों की जिंदगियां समाप्त हो गईं, यह तुलना करने से कोई लाभ नहीं है। अब रेल मंत्री भाजपा के हैं और देश के प्रधानमंत्री भी भाजपा के हैं, लिहाजा जिम्मेदारी उनकी ही है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने प्राथमिक जांच के कुछ निष्कर्षों को साझा किया है कि इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग से छेड़छाड़ की गई है अथवा उसमें बदलाव किया गया है, नतीजतन ट्रेरन मेनलाइन छोड़ कर लूप लाइन में चली गई और मौजूदा रेल हादसा हुआ। सिग्नल को लेकर भी छेड़छाड़ की गई है, लिहाजा सीबीआई जांच का मंत्रालय और बोर्ड का निर्णय सटीक है, लेकिन जांच पूरी होने के बाद रेल मंत्री यह खुलासा करने का भी कष्ट करें कि सुरक्षा व्यवस्था से ऐसी छेड़छाड़ किस तरह संभव है, क्या उसकी उच्चस्तरीय जिम्मेदारी किसी भी वरिष्ठ अधिकारी की नहीं है? ऐसा करने वाली चिह्नित 'काली भेड़ें' कौन हैं।

बड़े नोटों के विमुद्रीकरण के नाम पर 2000 रुपए के नोट का जारी किया जाना विमुद्रीकरण की भावना के ही विरुद्ध था

दो हजार के नोट की वापसी कितनी सही

अश्वनी महाजन

नोटबंदी के कारण कठिनाइयों के बावजूद आम जनता का भरपूर समर्थन इस निर्णय को मिला। हालांकि विपक्षी दलों ने इस बाबत जोर-शोर से विरोध किया, लेकिन आम जनता ने इस नोटबंदी को कालेधन, भ्रष्टाचार, नकली करैंसी, आतंकवाद, नक्सलवाद और पत्थरबाजी के विरुद्ध एक युद्ध के हथियार के रूप में स्वीकार किया। कुछ कठिनाइयों के बाद देश में नगदी बहाल हुई, लेकिन उस समय देश में वैधानिक नगदी की पर्याप्त उपलब्धता बनी रही, उसके लिए केंद्र सरकार ने 500 और 1000 के पुराने नोटों के बदले में 500 और 2000 के नोटों का चलन शुरू कर दिया।

आठ नवंबर 2016 की शाम 8:00 बजे जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम अपने संदेश के जरिए 500 रुपए और 1000 के नोटों की वैधानिक वैधता को समाप्त करने का निर्णय लोगों से साझा किया तो पूरा देश चकित हो गया था। नोटबंदी के कारण कठिनाइयों के बावजूद आम जनता का भरपूर समर्थन इस निर्णय को मिला। हालांकि विपक्षी दलों ने इस बाबत जोर-शोर से विरोध किया, लेकिन आम जनता ने इस नोटबंदी को कालेधन, भ्रष्टाचार, नकली करैंसी, आतंकवाद, नक्सलवाद और पत्थरबाजी के विरुद्ध एक युद्ध के हथियार के रूप में स्वीकार किया। कुछ कठिनाइयों के बाद देश में नगदी बहाल हुई, लेकिन उस समय देश में वैधानिक नगदी की पर्याप्त उपलब्धता बनी रही, उसके लिए केंद्र सरकार ने 500 और 1000 के पुराने नोटों के बदले में 500 और 2000 के नोटों का चलन शुरू कर दिया। गौरतलब है कि उस समय देश में कुल 17.74 लाख करोड़ रुपए की करैंसी जनता के पास थी जिसमें से 85 प्रतिशत 500 और 1000 के नोटों के रूप में थी। 500 के नोटों के मुद्रण में देरी के कारण देश में करैंसी की कमी के कारण ज्यादा से ज्यादा 2000 के नोटों को जारी करना सरकार और रिजर्व बैंक की मजबूरी थी। गौरतलब है कि मार्च 2018 तक 2000 रुपए के नोट 6.73 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गए थे। बड़े नोटों के विमुद्रीकरण के नाम पर 2000 रुपए के नोट का जारी किया जाना विमुद्रीकरण की भावना के ही विरुद्ध था। इसलिए 2000 के नोटों की वापसी मार्च 2018 से ही शुरू हो गई थी। गौरतलब है कि प्रारंभ में चलन में आए 6.73 लाख करोड़ रुपए के 2000 के नोट मार्च 2023 तक मात्र 3.62 लाख करोड़ रुपए तक ही रह गए। कहा जा सकता है कि हालांकि सरकार ने 2000 के नोट जारी तो किए थे, लेकिन उसकी मंशा इन नोटों के चलन को धीरे-धीरे कम करने की ही थी। रिजर्व बैंक का कहना है कि 2000 के कुल जारी नोटों में से 89 प्रतिशत मार्च 2017 से पहले जारी किए गए थे, जो वैसे भी अपना समय काल पूरा कर चुके हैं। निष्कर्ष यह है कि 2000 रुपए के नोटों की वापसी कोई अचानक लिया गया निर्णय नहीं कहा जा सकता।

विमुद्रीकरण के बाद घटा है करैंसी का उपयोग : विपक्षी दल यह कहकर सरकार को घेरने की कोशिश कर रहे हैं कि सरकार का यह दावा कि वह विमुद्रीकरण का मकसद डिजिटल भुगतानों द्वारा 'लैस कैष' यानी नगदी के कम उपयोग की अर्थव्यवस्था की ओर आगे बढ़ाना था, सही सिद्ध नहीं हुआ क्योंकि उसके बाद तो नगदी की मात्रा बढ़ गई है। उनका कहना है कि विमुद्रीकरण के समय देश में कुल 17.74 लाख करोड़ रुपए की नगदी जनता के पास थी जो

दिसंबर 2022 तक बढक़र 32.42 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गई। लेकिन यह समझना होगा कि वर्ष 2015-16 में देश में चालू कीमतों पर जीडीपी मात्र 135 लाख करोड रुपए थी, जो 2022-23 में बढक़र 272 लाख करोड़ रुपए पहुंच चुकी है। ऐसे में समझा जा सकता है कि जीडीपी के अनुपात में नगदी पूर्व में 13.14 प्रतिशत से घटती हुई अब मात्र 11.91 प्रतिशत तक पहुंच गई है। यानी डिजिटलीकरण का असर यह हुआ है कि देश में 'कैश' का चलन कम हो गया है। रिजर्व बैंक का यह कहना है कि सामान्य जनता के पास 2000 के बहुत कम नोट हैं। इसका मतलब यह भी है कि 2000 के जो नोट चलन में हैं, वे अधिकतर उन लोगों के पास हैं जिन्होंने अपने धन (या यूं कहें कि काले धन) को नकदी के रूप में रखा हुआ है। ऐसे में रिजर्व बैंक का कहना है कि इस निर्णय से बैंकों की जमा में भारी वृद्धि हो जाएगी। इससे सरकार का राजस्व भी बढ़ेगा और अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता भी। ऐसा भी देखने में आया है कि 2000 रुपए के नोटों का उपयोग अपराधियों, आतंकवादियों और गैरकानूनी कार्यों में संलग्न लोगों द्वारा ज्यादा होता है। इन नोटों के बंद होने से कुछ हद तक इन गतिविधियों को लगाम भी लग सकेगी।

विमुद्रीकरण के बाद अर्थव्यवस्था को लाभ : हालांकि विमुद्रीकरण के विरोधियों का कहना है कि विमुद्रीकरण से छोटे उद्यमियों को नुकसान हुआ, रोजगार घटे और अर्थव्यवस्था को नुकसान हुआ। लेकिन आंकड़ों से यह बात सिद्ध नहीं होती। 2015-16 के बाद से अब तक के लगभग 6 वर्षों में चालू कीमतों पर जीडीपी 135 लाख करोड़ से बढ़ कर 272 लाख करोड़ से ज्यादा हो गई है, यानी दुगनी से भी ज्यादा। अगर स्थिर कीमतों पर भी देखें तो इस बीच जीडीपी में प्रतिशत वृद्धि हुई है, जबकि इस बीच के 2 साल कोरोना से प्रभावित रहे। देश के निर्यात वर्ष 2013-14 में 465.5 अरब डॉलर से बढक़र 2022-23 तक 767 अरब डॉलर हो गए हैं। कृषि, सेवा, उद्योग सभी क्षेत्रों में प्रगति दिखाई दे रही है। सरकारी मदद से ग्रामीण और शहरी गरीबों के लिए आवास, इन्फ्रास्ट्रक्चर, वित्तीय समावेशन सभी इस बात की ओर इंगित करते हैं कि अर्थव्यवस्था बिना बाधाओं के आगे बढ़ रही है। विमुद्रीकरण का सबसे बड़ा लाभ मुद्रास्फीति के संदर्भ में हुआ है। गौरतलब है कि विमुद्रीकरण के बाद के 6 वर्षों (दिसंबर 2016 से नवंबर 2022 के बीच) में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (उपभोक्ता मुद्रास्फीति) में केवल 32.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि उससे पहले के छह वर्षों (दिसंबर 2010 से नवंबर 2016 के बीच) में यह वृद्धि 54.1 प्रतिशत थी। ऐसा इसलिए संभव हुआ क्योंकि 500 और 1000 के पुराने नोटों के चलन से बाहर होने पर देश में बड़े पैमाने पर विदेशों और खासतौर पर शत्रु देशों से आ रहे नकली नोट चलन से बाहर हो गए। चूंकि करैंसी की मात्रा ही घट गई (नकली नोटों के बाहर होने से) तो मुद्रास्फीति का कम होना स्वाभाविक ही था। सबसे खास बात तो यह रही कि पाकिस्तान जैसा शत्रु पड़ोसी देश जिसकी अर्थव्यवस्था ही भारत में नकली करैंसी भेजकर चलती थी, को अचानक एक बड़ा धक्का लगा और अभी तक उसकी अर्थव्यवस्था लगभग धवस्त हो चुकी है। भारत सरकार द्वारा 500 और 1000 के नोटों की बंदी के बाद पाकिस्तान में खाद्य पदार्थों की कीमतों में भारी वृद्धि हो गई, उनके विदेशी मुद्रा भंडार समाप्त हो गए और पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय देनदारियों में कोताही के कुचक्र में फंस गया। आज पाकिस्तान का रुपया डॉलर के मुकाबले में 295.65 रुपए प्रति डॉलर पहुंच चुका है। 2016 में 104.7 पाकिस्तानी रुपए एक डालर के मुकाबले हुआ करते थे। इसके साथ ही साथ पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद और कश्मीर में पत्थरबाजी की घटनाओं पर भी लगाम लगी है। यही नहीं, नक्सलवादी गतिविधियां भी पहले से घटी हैं। माना जा रहा है कि चूंकि 2000 का नोट आमजन के व्यवहार से लगभग बाहर हो चुका था, इसलिए आम जनता पर इन नोटों की वापसी से कोई प्रभाव पडऩे वाला नहीं है। साथ ही साथ 20 हजार रुपए तक के 2000 के नोटों को किसी भी दिन जाकर बैंक से बदलवाया जा सकता है और उसके लिए 30 सितंबर तक समय रिजर्व बैंक ने दिया है। जिनके कालाधन 2000 रुपए के नोटों के रूप में पड़ा है और यदि वे बैंकों में जमा नहीं करते तो फौरी तौर पर कुछ विशिष्ट प्रकार का खर्च बढ़ सकता है, उसका भी सकारात्मक लाभ अर्थव्यवस्था को मिलेगा। यानी कहा जा सकता है कि पहले से ज्यादा पारदर्शी अर्थव्यवस्था, कालेधन पर लगाम, बैंकों की जमा में वृद्धि, राजस्व में वृद्धि आदि से अर्थव्यवस्था को सकारात्मक लाभ ही होंगे।

हिमाचल में जारी है प्लास्टिक का प्रदूषण

देश के किसी भी पर्यटक स्थल पर कूड़े और प्लास्टिक कचरे की मात्रा ज्यादा होती है क्योंकि बाहरी क्षेत्रों से आने वाले लोग सैर सपाटे के दौरान हर जगह अपनी निशानियां छोड़ जाते हैं जिनमें प्लास्टिक की पानी की खाली बोतलें, कांच की बोतलें, नमकीन के खाली पैकेट, नैपकिन्स, फोइल्स, गंदे कपड़े तथा और भी कई तरह का कचरा शामिल है। पहाड़ी इलाकों में यह समस्या ज्यादा होती है क्योंकि हर जगह से कूड़ा करकट इकट्ठा करना मुश्किल होता है। ट्रैकिंग पर जाने वाले अधिकतर लोग हर ट्रैक पर बहुत सा प्लास्टिक का सामान छोड़ कर चले आते हैं। पहाड़ में लोग अक्सर कूड़ा सूखे नालों व बड़े गड्ढों में यहां वहां फैंक देते हैं, बहुत कम लोग कचरे को जलाते हैं। सूखे नालों में यह सब इकट्ठा होता रहता है और फिर बरसात या बाढ़ घातक है। विश्व बैंक द्वारा जारी की गयी एक रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक वर्ष विश्व में 2.01 बिलियन टन कूड़ा म्युनिसिपल सालिड वेस्ट यानी शहरी ठोस कूड़ा आम नागरिकों द्वारा फैलाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस आते ही पूरे विश्व में तरह -तरह की गोष्ठियां, सम्मलेन और चर्चाएं होती हैं, फिर धीरे-धीरे यह खुमार उतर जाता है। ऐसा नहीं है कि विश्व के लोगों को पर्यावरण की चिंता नहीं है या जलवायु परिवर्तन या प्लास्टिक के प्रयोग के नुकसान नहीं पता, लेकिन इन सब बातों के बावजूद हम कहीं न कहीं चूक कर रहे हैं, जिसका भुगतान आने वाली पीढियां आने वाले कई सालों तक करती रहेंगी। प्लास्टिक प्रदूषण के प्रति यह लड़ाई हमें गांव से बड़े स्तर पर पर शुरू करनी होगी। देश के किसी भी पर्यटक स्थल पर कूड़े और प्लास्टिक कचरे की मात्रा ज्यादा होती है क्योंकि बाहरी क्षेत्रों से आने वाले लोग सैर सपाटे के दौरान हर जगह अपनी निशानियां छोड़ जाते हैं जिनमें प्लास्टिक की पानी की खाली बोतलें, कांच की बोतलें, नमकीन के खाली पैकेट, नैपकिन्स, फोइल्स, गंदे कपड़े तथा और भी कई तरह का कचरा शामिल है। पहाड़ी इलाकों में यह समस्या ज्यादा होती है क्योंकि हर जगह से कूड़ा करकट इकठ्ठा करना मुश्किल होता है। ट्रैकिंग पर जाने वाले अधिकतर लोग हर ट्रैक पर बहुत सा प्लास्टिक का सामान छोड़ कर चले आते हैं। पहाड़ में लोग अक्सर कूड़ा सूखे नालों व बड़े गड्ढों में यहां वहां फैंक देते हैं, बहुत कम लोग कचरे को जलाते हैं। सूखे नालों में यह सब इकठ्ठा होता रहता है और फिर बरसात या बाढ़ घातक है। विश्व बैंक द्वारा जारी की गयी एक रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक वर्ष विश्व में 2.01 बिलियन टन कूड़ा म्युनिसिपल सालिड वेस्ट यानी शहरी ठोस कूड़ा आम नागरिकों द्वारा फैलाया जाता है। प्रति व्यक्ति औसतन 0.74 ग्राम कूड़ा फैलाता है। इस कूड़े को ठीक से नष्ट या ठीक से पुनःचक्रित नहीं किया जाता। 2050 तक यह कूड़ा प्रतिवर्ष 340 बिलियन टन से ज्यादा हो जाएगा। जैसे ही विश्व की आबादी बढ़ेगी और मध्यम या निम्न वर्गीय जनसंख्या में वृद्धि होगी, यह समस्या और बढ़ेगी। गरीबी से किसी भी तरह से पूरी तरह छुटकारा पाना लगभग असंभव है। गरीब और अमीर के बीच का फासला इतना ज्यादा है कि इसे सरकार की बहुआयामी योजनाएं भी कम करने में पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहीं। अगर विश्व के धनाढ्य लोग चाहें तो गरीबों का उत्थान कर सकते हैं, लेकिन ज्यादातर फोब्र्स और फाच्यून पत्रिकाओं की सूची या आवरण पृष्ठ पर आने वाले लोग ऐसा नहीं मानते। पेरिस जलवायु समझौता संयुक्त राष्ट्र के वार्षिक जलवायु सम्मेलन (कॉप-21) के दौरान 12 दिसम्बर 2015 को पारित किया गया था। 4 नवम्बर 2016 को यह समझौता लागू हो गया था। पेरिस समझौते का मुख्य लक्ष्य औद्योगिक काल के पूर्व के स्तर की तुलना में वैश्विक तापमान में बढ़ोत्तरी को 2 डिग्री सेल्सियस से कम रखना है और 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के लिये विशेष प्रयास किये जाने हैं। तापमान सम्बन्धी इस दीर्घकालीन लक्ष्य को पाने के लिये देशों का लक्ष्य, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के उच्चतम स्तर पर जल्द से जल्द पहुंचना है ताकि उसके बाद वैश्विक स्तर में कमी लाने की प्रक्रिया शुरू की जा सके। इसके जरिये 21वीं सदी के मध्य तक कार्बन तटस्थता (नैट कार्बन उत्सर्जन शून्य) हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। जलवायु कार्रवाई के लिए बहुपक्षीय प्रक्रिया में पेरिस समझौता एक अहम पड़ाव है। पहली बार कानूनी रूप से बाध्यकारी एक समझौते के तहत सभी देशों को साझा उद्देश्य की पूर्ति हेतु साथ लाया गया है ताकि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटा जा सके और अनुकूलन के प्रयास सुनिश्चित किये जा सकें। प्रसिद्ध पत्रिका 'न्यू साइंटिस्ट' में प्रो. स्टीव फ्लेचर, जो पोट्र्समाउथ यूनिवर्सिटी में पर्यावरण, समुद्री प्लास्टिक प्रदूषण के जानकार हैं, के अनुसार प्लास्टिक प्रदूषण से बचने का तरीका प्लास्टिक का न होना है, इसका उत्पादन और इसका प्रयोग बंद करना होगा। प्लास्टिक की चीजों को बदलना होगा, इनका प्रयोग कम करना होगा। इंगर एंडरसन जो सयुंक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की कार्यकारी निर्देशक हैं, उनके अनुसार विश्व के 175 देश प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए अपना योगदान देने के लिए बचनबद्ध हैं। 2015 का यह सबसे बड़ा पर्यावरण समझौता है। पहाड़ों में निरंतर बढ़ता भवन निर्माण, प्लास्टिक की चीजों का अंधाधुंध इस्तेमाल, सीमेंट की खाली बोरियों को पहाड़ की ढलान से लुढक़ा कर अपनी जिम्मेदारी से अलग हो जाना, पहाड़ी क्षेत्रों में किसी भी शहर के शुरू या अंत में कूड़े के पर्वतनुमा ढेर, सड़ांध और गंदगी न केवल बीमारियों को न्योता देती है बल्कि वहां के कूड़ा प्रबंधन के बारे भी कई कहानियां कहती है। मनाली में घुसते ही आप को बदबूदार कूड़े के ढेरों के बीच में से गुजरना पड़ता है। पतली कूहल में प्लास्टिक के ढेर लगे हैं। यही हाल दूसरे पहाड़ी शहरों का भी है। नदी नालों से बह कर प्लास्टिक महासागर में जाकर इक_ा हो जाता है। भारत की कोस्ट लाइन करीब 7516 किमी तक फैली है। यह प्लास्टिक न केवल समुद्री जीव जंतुओं की जान का दुश्मन होता है बल्कि कई बार फिर किनारे पर लौट आता है। समुद्र में हर साल 11 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक का कूड़ा आ जाता है। समुद्र में पहले से ही 200 मिलियन मीट्रिक टन कूड़ा फैला है। 60 प्रतिशत पक्षी जो समुद्र की सम्पदा पर अपने खाने के लिए निर्भर हैं, उनमें प्लास्टिक के अंश पाए गए हैं। असंख्य कछुए और मछलियां प्लास्टिक प्रदूषण का शिकार हैं। पहाड़ों को प्लास्टिक मुक्त करना मुश्किल है, लेकिन असंभव नहीं। पर्यटकों, स्थानिय नागरिकों में प्लास्टिक और उसके नुकसानों के बारे में जागरूकता फैलाना बहुत जरूरी है। पहाड़ों में प्लास्टिक कचरे को इकठ्ठा करने के कई केंद्र स्थापित करने होंगे। ताकि वहां से उस प्लास्टिक को पुनःचक्रित किया जा सके। बहुत सी गैर सरकारी संस्थाएं भी पहाड़ों में प्लास्टिक निवारण पर काम कर रही हैं, जिनमें प्रदीप सांगवान द्वारा संचालित ए हीलिंग हिमालयाज प्रमुख है। हिमाचल के कई क्षेत्रों से 800 टन से ज्यादा प्लास्टिक का कचरा इक_ा कर चुके हैं जिनमें गाँव, शहर, पहाड़, ट्रैक्स और पर्वतीय रास्ते शामिल हैं। हिमाचल सरकार को प्लास्टिक कचरे के निवारण को बहुत गंभीरता से लेना होगा। प्लास्टिक वेस्ट प्रबंधन के लिए नई योजनाओं और धनराशि का प्रावधान करना होगा। तभी पहाड़ इस दानव से सुरक्षित रह पाएंगे और नदी-नाले और मवेशी प्लास्टिक से मुक्त हो पाएंगे। देश में एक जुलाई 2022 से सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध है, लेकिन प्लास्टिक अपनी यात्रा किसी न किसी रूप में जारी रखे हुए है। इसे रोकना होगा।

नागरिक बोध

छत्तीसगढ़ चुनाव को लेकर राजनैतिक पार्टिया लामबन्द

छत्तीसगढ़ विधानसभा की 90 सीटों के लिए इस वर्ष के अंत मे चुनाव होंगे। कांग्रेस और भाजपा अपने अपने कार्य मे जुट गई है। छत्तीसगढ़ आदिवासी बहुल क्षेत्र है। अलबत, भाजपा का पिछले तीन टर्म से सत्ता में रही थी। छत्तीसगढ़ में अभी कांग्रेस सत्ता में है। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को कम सीटें मिलने के कारण कांग्रेस ने चुनाव में जीत की बाजी मार दी। इस बार भाजपा फूंक फूंक के कदम रख रही है।क्योंकि इस बार भाजपा कोई चूक नही करना चाहती है। विधानसभा चुनाव में दो राज्यो के नतीजे कांग्रेस के पक्ष में आने के बाद भाजपा इन राज्यो के चुनाव में सतर्क है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बधेल ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा ने पिछले 15 सालो में कुछ किया होता यो 15 सीटो पर सिमट कर नही रहती। भाजपा इस बार कुछ अलग करने के मूड में है। आगामी दिनों में भाजपा विधानसभा में 270 सम्मेलन करेगी। वही 11 लोकसभा में 22 सम्मेलन करने की पूरी तैयारी कर दी है। जून महीने के 16 दिन भाजपा के लिए छत्तीसगढ़ में प्रचार, प्रसार के होंगे।राजनैतिक दल कोई भी बिना तथ्य के वादे करते है लेकिन वो ही होता है जो मतदाता के दिल मे होता है। मतदाता जागरूक हो गए है।जांच परख के बाद मतदान करने वालो की तादात बढ़ रही है। केंद्रीय नेताओ का जमावड़ा छत्तीसगढ़ में आगामी दिनों में प्रचार प्रसार के लिए देखा जा सकता है। इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का दौरा प्रस्तावित है। इस बार भाजपा मिशन मोड़ में है और कार्यकर्ताओं के साथ भेंट मुलाकात कर सम्मेलन की तैयारी में लग जायेगी। बिलासपुर, रायपुर और सरगुजा लोकसभा में विधिवित नेताओ के प्रवास की व्यवस्था की जा चुकी है। राजस्थान, छतीसगढ़ और मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव की तैयारियां जोरों पर है। कांग्रेस को कर्णाटक में प्रचंड जीत के बाद कांग्रेस के दिग्गज नेताओं में आत्म विश्वास बढ़ने लग रहा है। राहुल और प्रियंका खुल के मीडिया के सामने आ रहे है। लेकिन छत्तीसगढ़ नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्र है। आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण उनकी मूलभूत जरूते भी है।इस पर सभी दलों की निगाह है। छत्तीसगढ़ में वोट में सेंघ मारने आप आदमी पार्टी की राज्य में एंट्री से किसी दल को कोई फर्क नही पड़ेगा। लेकिन वोट के विभाजन की शिकायत कहने सुनने में आ रही है।इसलिए विकास के नाम सत्ता के गलियारों तक पहुंची कांग्रेस के दिग्गज नेता बधेल के कार्यक्षमता की कसौटी आगामी विधानसभा चुनाव में देखने को मिल जाएगी। दूध का दूध और पानी का पानी विधानसभा में होने की आशा जताई जा रही है। भाजपा लाभार्थी सम्मेलन और योग दिवस के कार्यक्रम का आयोजन में पूरी तैयारी की है। छतीसगढ़ के गृहमंत्री ताम्रध्वज ने भाजपा के गृहमंत्री अमित शाह पर निशाना साधा।

देश दुनीया से

रेल बजट का आम बजट में विलय होने से रेलवे की सेहत पर खास फर्क नहीं पड़ा है

ओडिशा के बालासोर में 2 जून की शाम को हुए भीषण ट्रेन हादसे में करीब तीन सौ लोग मारे गए हैं और एक हजार से भी ज्यादा घायल हुए हैं। इस हादसे में कोलकाता से चेन्नई जाने वाली कोरोमंडल एक्सप्रेस पटरी से उतर गई थी और इसी बीच यशवंतपुर-हावड़ा एक्सप्रेस वहां आ गई और कोरोमंडल से टकरा कर पलट गई। इस टक्कर के बाद कोरोमंडल एक्सप्रेस की मालगाड़ी से टक्कर हो गई, जिसमें ट्रेन का इंजन बोगी के ऊपर चढ़ गया। बालासोर के पास बाहानगा बाजार स्टेशन के नजदीक हुए हादसे में पहले कोरोमंडल एक्सप्रेस पटरी से उतरी और यह ट्रेन दूसरी तरफ से आ रही यशवंतपुर-हावड़ा एक्सप्रेस से टकरा गई, जिसके बाद कोरोमंडल एक्सप्रेस के कुछ डिब्बे पटरी से उतरे और उसी दौरान कोरोमंडल एक्सप्रेस एक मालगाड़ी से जा टकराई। यह रेल हादसा कितना भयानक था, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि रेल की पटरी सीधे ट्रेन के फर्श को चीरते हुए अंदर घुस गई और बोगी के आर-पार हो गई। भारत में आजादी के बाद हुए घातक ट्रेन हादसों में यह हादसा अत्यधिक भीषण हादसा है। इस दर्दनाक हादसे के बाद दुर्घटनास्थल पर किसी का हाथ कटा पड़ा था तो किसी का पैर, किसी का सिर तो किसी का धड़। रेल सुरक्षा आयुक्त (दक्षिण पूर्व सर्किल) ए.एम. चौधरी को इस रेल दुर्घटना की जांच की जिम्मेदारी सौंपी गई है। हालांकि प्रारंभिक संकेतों के अनुसार इस दुर्घटना के पीछे मानवीय चूक मानी जा रही है। कहा जा रहा है कि देश में 16 महीने बाद कोई ऐसा रेल हादसा हुआ है, जिसमें लोगों की जान गई है। इससे पहले 14 जनवरी 2022 को पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी में दोमोहानी के पास हुए हादसे में 9 लोगों की जान चली गई थी। तब बीकानेर से गुवाहाटी जा रही बीकानेर-गुवाहाटी एक्सप्रेस की 12 बोगियां पटरी से उतर गई थी। हादसे के समय ट्रेन की गति कम थी, अन्यथा रेल तंत्र की लापरवाही के कारण वह दुर्घटना बहुत बड़ी हो सकती थी। उस समय कहा गया था कि वह हादसा 34 महीने बाद हुआ था। हालांकि वास्तव में ऐसा है नहीं, रेल हादसे निरन्तर होते रहे हैं और लोग ऐसे हादसों की बलि चढ़ते रहे हैं। इसी साल 2 जनवरी को राजस्थान में पाली के नजदीक बांद्रा-जोधपुर सूर्यनगरी एक्सप्रेस के 13 डिब्बे बेपटरी हो गए थे, उस हादसे में 26 यात्री घायल हुए थे। 22 अप्रैल 2021 को लखनऊ-चण्डीगढ़ एक्सप्रेस ने बरेली-शाहजहांपुर के पास क्रॉसिंग पर कुछ वाहनों को टक्कर मार दी थी, जिसमें पांच लोगों की मौत हुई थी। उससे पहले 3 फरवरी 2019 को जोगबनी से दिल्ली जा रही सीमांचल एक्सप्रेस के 11 डिब्बे पटरी से उतरने से सात से अधिक यात्रियों की मौत हुई थी। ऐसे हादसों में हर बार हताहतों की चीखें खोखले रेल तंत्र की कमियों को उजागर करते हुए समूचे रेल तंत्र को कटघरे में खड़ा करती रही हैं लेकिन उसके बावजूद रेल हादसों पर लगाम नहीं कसी जा रही। भारत का रेल तंत्र दुनिया के सबसे बड़े सार्वजनिक उपक्रमों में से एक है, जिसे आमजन के लिए जीवनदायी माना जाता है। भले ही देश में हवाई मार्ग और सड़क मार्गों का कितना भी विस्तार हो जाए, फिर भी देश की बहुत बड़ी आबादी यातायात के मामले में रेल नेटवर्क पर ही निर्भर है। रेलों के जरिये प्रतिदिन न केवल करोड़ों लोग यात्रा करते हैं बल्कि यह माल ढुलाई का भी सबसे बड़ा साधन है। इसके बावजूद इस विशालकाय तंत्र को चुस्त-दुरुस्त और सुरक्षित बनाने पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता और प्रायः इसी कारण रेल हादसे होते रहे हैं। इतने विशाल तंत्र को दुरुस्त रखने के लिए रेलवे को प्रतिवर्ष 20 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की जरूरत होती है लेकिन विशेषज्ञ इसके आवंटन को लेकर सवाल उठाते रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा रेल तंत्र को मजबूत करने और आधुनिक जामा पहनाने के उद्देश्य से रेल बजट का आम बजट में ही विलय कर दिया गया था लेकिन अभी तक उससे भी कुछ खास हासिल होता नहीं दिखा।

बालासोर के पास बाहानगा बाजार स्टेशन के नजदीक हुए हादसे में पहले कोरोमंडल एक्सप्रेस पटरी से उतरी और यह ट्रेन दूसरी तरफ से आ रही यशवंतपुर-हावड़ा एक्सप्रेस से टकरा गई, जिसके बाद कोरोमंडल एक्सप्रेस के कुछ डिब्बे पटरी से उतरे और उसी दौरान कोरोमंडल एक्सप्रेस एक मालगाड़ी से जा टकराई। यह रेल हादसा कितना भयानक था, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि रेल की पटरी सीधे ट्रेन के फर्श को चीरते हुए अंदर घुस गई और बोगी के आर-पार हो गई।भारत में आजादी के बाद हुए घातक ट्रेन हादसों में यह हादसा अत्यधिक भीषण हादसा है।

ईरान ने किया हाइपरसोनिक बैलिस्टिक मिसाइल बनाने का दावा : ये स्पीड ऑफ साउंड से 5 गुना तेज, अमेरिकी एंटी-मिसाइल सिस्टम को भेदने में सक्षम

तेहरान।

ईरान ने पहली हाइपरसोनिक बैलिस्टिक मिसाइल बनाने का दावा किया है। इस मिसाइल का नाम फतह रखा गया है। ईरान के स्टेट मीडिया ने मंगलवार को इसकी तस्वीरें भी जारी कीं। इस मिसाइल की रेंज 1,400 किमी बताई जा रही है। इसकी स्पीड 15 हजार किमी/घंटा है, जो स्पीड ऑफ साउंड से पांच गुना ज्यादा है। ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी के सामने रिवॉल्यूशनरी गार्ड ने ये मिसाइल पेश की। ईरान का दावा है कि फतह मिसाइल अमेरिका के सबसे एडवांस्ड एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल सिस्टम सहित इजराइल के आयरन डोम को भी पार कर हमला करने में सक्षम है। अमेरिका और यूरोप के विरोध के बावजूद ईरान ने कहा है कि वह अपने मिसाइल कार्यक्रम को और विकसित करेगा।

पिछले साल भी ईरान के कमांडर ने किया था दावा - वहीं, पश्चिमी देशों के मिलिट्री एक्सपर्ट्स ने कहा है कि ईरान हमेशा अपनी मिसाइल की क्षमताओं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है। ईरान ने इस बार भी अपनी मिसाइल के गुणों को लेकर कोई सबूत पेश नहीं किया है। इससे पहले पिछले साल नवंबर में भी ईरान के रिवॉल्युशनरी गार्ड के कमांडर आमिर अली हाजीजादेह ने हाइपरसोनिक मिसाइल बनाने का दावा किया था। हाजीजादेह ने कहा था कि उनकी मिसाइल को रोकना किसी के लिए नाममुकिन होगा। ये हर एंटी-डिफेंस सिस्टम को तबाह करने में सक्षम है।

2 हजार की रेंज वाली बैलिस्टिक मिसाइल बनाई - ईरान ने 25 मई को 2 हजार किमी की रेंज वाली एक बैलिस्टिक मिसाइल की सफल टेस्टिंग की थी। ईरान ने कहा था कि उनकी ये मिसाइल मिडिल ईस्ट में मौजूद अमेरिका और इजराइल के बेस तक पहुंचने में सक्षम है। इस मिसाइल को फारस की खाड़ी में गश्त करने वाले युद्धपोतों और पनडुब्बियों पर तैनात किया गया है। यह बैलिस्टिक मिसाइल अमेरिका के टॉमहॉक से भी ज्यादा दूरी तक मार करने में सक्षम है।

ईरान पहाड़ों के नीचे बना रहा परमाणु हथियार - इससे कुछ दिन पहले एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि ईरान अपनी न्यूक्लियर फैसिलिटी को इजराइल और अमेरिका के हमले से बचाने की पूरी कोशिश कर रहा है। वो अब पहाड़ी इलाके में जमीन के नीचे परमाणु हथियार बना रहा है।

न्यूज ब्रीफ

श्रीलंका में इसी वर्ष होगा राष्ट्रपति चुनाव, क्या संविधान संशोधन के लिए तैयार होंगे विक्रमसिंघे

कोलंबो। यह खबर श्रीलंका के सियासी हलकों में काफी चर्चित है। इस बीच कुछ हलकों से यह भी कहा गया है कि श्रीलंका के संविधान में समय से पहले चुनाव का प्रावधान नहीं है। इसलिए अगर विक्रमसिंघे सचमुच जल्द चुनाव कराना चाहते हैं, तो उन्हें इसके लिए पहले संविधान में संशोधन करना होगा। राष्ट्रपति का मौजूदा कार्यकाल 2024 के नवंबर तक है। जाने-माने वकील गेहान गुनातिलके ने कहा कि संविधान संशोधन के बिना तय समय से पहले चुनाव कराना संभव नहीं है। संविधान संशोधन को पारित कराने के लिए संसद में दो तिहाई बहुमत की जरूरत होगी। इसके बाद भी पारित बिल को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है। अगर सुप्रीम कोर्ट ने संविधान संशोधन को वैध ठहराया, तभी जाकर इस वर्ष चुनाव कराना संभव हो सकेगा। अगर सुप्रीम कोर्ट ने उसे अवैध ठहरा दिया, तो फिर राष्ट्रपति के पास एकमात्र रास्ता इस संशोधन बिल पर जनमत संग्रह कराने का बचेगा। विक्रमसिंघे श्रीलंका के संविधान के अनुच्छेद 40 के तहत जुलाई 2022 में राष्ट्रपति चुने गए थे। इस अनुच्छेद में प्रावधान है कि राष्ट्रपति का पद खाली हो जाने की स्थिति में संसद अपने सदस्यों के बीच से किसी एक को राष्ट्रपति चुन सकती है। पिछले साल आर्थिक संकट गहराने के साथ देश में निर्वाचित राष्ट्रपति गोताबया राजपक्षे के खिलाफ बगावत जैसी हालत बन गई थी। इस कारण उन्हें पद छोड़ कर विदेश भागना पड़ा था। राजपक्षे ने अपने इस्तीफे के पहले विक्रमसिंघे को प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया था। बाद में संसद ने उन्हें राष्ट्रपति चुन लिया। राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक जल्द चुनाव कराने के लिए पेश संविधान संशोधन बिल को संसद में आसानी से दो तिहाई बहुमत मिल जाएगा।

राष्ट्रपति मुर्मू को सूरीनाम का सर्वोच्च नागरिक सम्मान ग्रैंड ऑर्डर ऑफ द यलो स्टार, पीएम ने दी बधाई

पारामरिबो। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को सूरीनाम के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया है। सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिकाप्रसाद संतोखी ने मजबूत द्विपक्षीय संबंधों के राष्ट्रपति मुर्मू का सम्मान किया। गृह मंत्रालय ने ट्वीट कर जानकारी दी कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को सूरीनाम के राष्ट्रपति संतोखी ने अपने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ग्रैंड ऑर्डर ऑफ द येलो स्टार से सम्मानित किया है। भारत और सूरीनाम के द्विपक्षीय रिश्ते काफी मजबूत हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी राष्ट्रपति मुर्मू को बधाई दी है। राष्ट्रपति मुर्मू ने सम्मान समारोह के दौरान संबोधन में कहा कि देश के सबसे बड़े सम्मान से उन्हें सम्मानित किया गया। इस वजह से काफी खुश हूं। इस सम्मान से सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि 140 करोड़ भारतवासियों को इससे गर्व महसूस हो रहा है। उन्होंने इस सम्मान का श्रेय भारतीय-सुरीनामी समुदाय के लोगों को दिया और कहा कि उनके कारण हमारे रिश्तों में अधिक मजबूती आई है। पीएम मोदी ने भी राष्ट्रपति को सम्मान के लिए बधाई दी है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि सूरीनाम के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ग्रैंड ऑर्डर ऑफ येलो स्टार से सम्मानित होने के लिए आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं राष्ट्रपति जी।

ट्रंप के सामने नई चुनौती, माइक पेंस ने राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी के लिए पेश किया दावा

वॉशिंगटन। अमेरिका में अगले साल होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी में उम्मीदवार के लिए कई नाम सामने आए हैं। अब पूर्व उपराष्ट्रपति माइक पेंस ने रिपब्लिकन की तरफ से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी के लिए दावा पेश किया है। पेंस ने स्थानीय समयानुसार नामांकन के लिए कागजी कार्रवाई पूरी की। पेंस की दावेदारी से रिपब्लिकन पार्टी के भीतर पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सामने का एक और चुनौती खड़ी गई है। ट्रंप से उनका सीधा सामना हो सकता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पेंस बुधवार को औपचारिक रूप से अपनी उम्मीदवारी की घोषणा करने के साथ अपने अभियान की शुरुआत करने के लिए तैयार हैं। माइक पेंस पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप के साथ उपराष्ट्रपति के रूप में काम कर चुके हैं और ट्रंप के कट्टर समर्थक रहे हैं। अब अमेरिका की सबसे पुरानी पार्टी में ट्रंप को चुनौती देने के लिए तैयार हैं। पेंस पिछले कई महीनों से राष्ट्रपति पद की दौड़ में शामिल होने के संकेत देते रहे हैं। अब उन्हें रिपब्लिकन के प्राथमिक मतदाताओं के साथ ट्रंम का मुकाबला करना होगा। साथ ही मतदाताओं को यह विश्वास दिलाना होगा कि वह ट्रंप से बेहतर विकल्प हैं, जिन्हें 2020 के राष्ट्रपति चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था।

पीटीआई नेता महमूद कुरैशी होगें रिहा

पूर्व पीएम इमरान खान को लाहौर हाईकोर्ट से मिली अग्रिम जमानत

इस्लामाबाद।

पाकिस्तान इन दिनों अब तक सबसे बड़ा राजनीतिक संकट झेल रहा है। मुख्य विपक्षी पार्टी पीटीआई के नेताओं पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। साथ ही गिरफ्तारी और कार्रवाई से बचने के लिए बड़े और करीबी नेता इमरान खान का साथ छोड़ रहे हैं। वहीं पाकिस्तान की एक अदालत ने मंगलवार को पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के उपाध्यक्ष शाह महमूद कुरैशी की तत्काल रिहाई का आदेश दिया है। कुरैशी को 9 मई को हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद गिरफ्तार किया गया था।

महमूद कुरैशी को इमरान खान का खास माना जाता है और जब इमरान की सरकार थी तो उन्होंने 2018 से 2022 तक पाकिस्तान के विदेश मंत्री के रूप में कार्य किया था। वह नौ मई को इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद गिरफ्तार किए गए पीटीआई के शीर्ष नेताओं में शामिल थे। वह कई बार छूटे भी थे लेकिन इस बीच उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया।

महमूद कुरैशी को तुरंत रिहा करने का निर्देश

स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, कुरैशी की गिरफ्तारी के खिलाफ याचिका पर सुनवाई करते हुए मंगलवार को लाहौर हाईकोर्ट की रावलपिंडी पीठ ने आदेश दिया कि कुरैशी को सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के अध्यादेश (एमपीओ) के तहत अब और गिरफ्तार नहीं किया जाना चाहिए। सुनवाई की अध्यक्षता करने वाले न्यायमूर्ति चौधरी अब्दुल अजीज ने भी रावलपिंडी के डिप्टी कमिश्नर के एमपीओ के आदेशों को अवैध घोषित किया और अधिकारियों को कुरैशी को जमानत बांड जमा करने के लिए कहे बिना तुरंत रिहा करने का निर्देश दिया। सुनवाई के दौरान अदालत ने पुलिस अधिकारी से पूछा कि क्या कुरैशी ने कोई भाषण दिया था या किसी विरोध-प्रदर्शन का नेतृत्व किया था। अदालत ने पुलिस अधिकारी को पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी के खिलाफ सबूत पेश करने का निर्देश दिया और कहा कि कोई भी राजनीतिक नेता राजनीतिक सभा में अपने शब्दों को नियंत्रित नहीं कर सकता है।

कुरैशी कल इमरान खान के साथ थे और वह आज उनके साथ हैं

अधिकारी ने सबूत जमा करने के लिए दो दिन का समय मांगा। हालांकि, अदालत ने उन्हें सरकार से निर्देश लेने के एक घंटे के भीतर अदालत को अपडेट करने का निर्देश दिया। इसके बाद कोर्ट ने सुनवाई एक घंटे के लिए स्थगित कर दी। वहीं महमूद कुरैशी के बेटे जैन कुरैशी ने कहा कि उनके पिता ने केवल सिद्धांतों की राजनीति की है लालच की नहीं। जैन ने कहा कि मेरे पिता कुरैशी कल इमरान खान के साथ थे और वह आज उनके साथ हैं।

9 मई को हुई हिंसा के बाद कुरैशी को किया गया गिरफ्तार

नौ मई को पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए थे। नौ मई की घटनाओं के बाद, इमरान खान की पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं को हिरासत में ले लिया गया। नेताओं में कुरैशी, फवाद चौधरी, असद उमर, डॉ यासमीन राशिद, शिरीन मजारी, मलीका बुखारी और फैयाजुल हसन चौहान शामिल थे। कुछ दिनों बाद फवाद, इमरान इस्माइल, शिरीन मजारी, फैयाजुल हसन चौहान, फिरदौस आशिक अवान और अन्य सहित कई प्रमुख नेताओं ने इमरान खान की पार्टी छोड़ दी।

खान के समर्थकों ने लाहौर कॉर्प्स कमांडर हाउस, मियांवाली एयरबेस, फैसलाबाद में आईएसआई भवन सहित एक दर्जन सैन्य प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़ की और संवेदनशील रक्षा प्रतिष्ठानों को भी आग लगा दी थी। इमरान समर्थकों ने रावलपिंडी में सेना मुख्यालय (जीएचक्यू) पर भी हमला किया था।

इमरान खान को मिली अग्रिम ज़मानत

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान मंगलवार को लाहौर हाईकोर्ट के समक्ष पेश हुए। वहीं हाईकोर्ट ने उनकी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के एक कार्यकर्ता की हत्या के सिलसिले में उनकी अग्रिम जमानत की पुष्टि की। खान कड़ी सुरक्षा के बीच उच्च न्यायालय में पेश हुए थे। पंजाब पुलिस ने इमरान खान पर एक पार्टी कार्यकर्ता अली बिलाल उर्फ जिले शाह की मौत के बारे में तथ्यों और सबूतों को छिपाने का आरोप लगाते हुए, हत्या के मामले में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के प्रमुख के खिलाफ मामला दर्ज किया था। इसके बाद लाहौर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश अनवारुल हक पन्नून ने सारी दलीलें सुनीं और सुनने के बाद अग्रिम जमानत की पुष्टि की।

पुतिन की बढ़ी मुश्किलें, वैगनर ग्रुप ने रूसी कमांडर को बनाया बंधक, सोशल मीडिया पर साझा किया वीडियो

मॉस्को।

यूक्रेन के साथ जारी युद्ध के बीच रूसी सेना में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। वैगनर ग्रुप और रूसी सेना के बीच कई बार मतभेद की खबरें आ चुकी हैं लेकिन अब हालात नियंत्रण से बाहर जा रहे हैं। दरअसल वैगनर ग्रुप ने रूसी सेना के एक शीर्ष कमांडर को बंधक बना लिया है। इतना ही नहीं वैगनर ग्रुप ने रूसी सेना के कमांडर का वीडियो बनाकर उसे सोशल मीडिया पर भी साझा कर दिया है। इससे रूसी सेना और वैगनर ग्रुप के बीच की तकरार खुलकर सामने आ गई है। वैगनर ग्रुप के चीफ येवगेनी प्रिगोझिन के सोशल मीडिया अकाउंट पर एक वीडियो पोस्ट किया गया है। इस वीडियो में दिख रहा है कि रूस की सेना की 72वीं ब्रिगेड के कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल रोमन वेनेवितिन को वैगनर ग्रुप ने बंधक बनाया हुआ है। वीडियो में दिख रहा है कि शराब के नशे में वेनेवितिन ने बताया कि उन्होंने अपने सैनिकों को वैगनर के काफिले पर गोलीबारी करने का आदेश दिया था। वेनेवितिन ने ये भी कहा कि वह वैगनर ग्रुप को पसंद नहीं करता और बाद में माफी भी मांगी।

बता दें कि रूसी सेना और येवगेनी प्रिगोझिन के नेतृत्व वाली वैगनर ग्रुप में बीते कुछ समय से तकरार बढ़ी है। बीते हफ्ते ही प्रिगोझिन ने कुछ वीडियो जारी कर सेना पर गंभीर आरोप लगाए थे। प्रिगोझिन ने कहा कि बाखमुत में उसके सैनिकों को हथियारों की पर्याप्त आपूर्ति नहीं हो पा रही है। प्रिगोझिन ने हाल ही में दावा किया था कि उसके सैनिकों ने विस्फोटक बरामद किया है, जो रूसी रक्षा मंत्रालय के लोगों ने ही लगाया था। हालांकि अभी तक रूसी रक्षा मंत्रालय का इस पर कोई बयान नहीं आया है। बाखमुत में रूस की जीत में वैगनर ग्रुप की अहम भूमिका रही और अब वैगनर ग्रुप के लड़ाके बाखमुत से मोर्चा छोड़ चुके हैं और अब रूसी सेना ने बाखमुत को अपने कब्जे में ले लिया है। प्रिगोझिन ने दावा किया कि बाखमुत में रूसी रक्षा मंत्रालय की नीतियों की वजह से उनके लड़ाकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा था।

अब रूसी सेना के कमांडर को ही बंधक बनाने से साफ है कि रूस में प्रिगोझिन का प्रभाव काफी बढ़ गया है और जिस तरह से वह खुल तौर पर रूसी सेना को चुनौती दे रहा है, उससे पुतिन की मुश्किलें बढ़ना स्वभाविक है।

भारत और म्यांमार को बेचे हथियारों को उनसे वापस खरीद रहा है रूस

टोक्यो।

भारत और म्यांमार से रूस द्वारा टैंकों और मिसाइलों की वापस खरीदारी के दस्तावेज मिले हैं। अनुमान लगाया है कि रूस संभवत: यूक्रेन युद्ध में अपनी मोर्चाबंदी को मजबूत करने के इरादे से ऐसा कर रहा है। इस युद्ध काल में उसने उन देशों पर भरोसा किया है, जिनके साथ उसके बहुत पुराने रक्षा संबंध हैं। यूक्रेन युद्ध को देखते हुए अमेरिका, यूरोपियन यूनियन और जापान ने रूस को हथियार बेचने पर प्रतिबंध लगा रखे हैं। उसे रूस पहुंची खेपों के बारे में कस्मट क्लीयरेंस डाटा अमेरिकी रिसर्च फर्म इम्पोर्टजीनियस से मिले। इसके अलावा उसने भारत तथा अन्य स्त्रोतों से प्राप्त निर्यात-आयात आंकड़ों का भी अध्ययन किया। इसमें उसने हथियार के पाट-पुर्जों के रूस में हुए आयात पर गौर किया। इन हथियारों में टैंक और मिसाइलें शामिल हैं। दावा है कि रूसी सेना के लिए टैंक बनाने वाली कंपनी यूरलवैगॉनजेवोड ने म्यांमार की सेना से दो करोड़ 40 लाख डॉलर के सैन्य उत्पादों का आयात पिछले साल नौ दिसंबर को किया था। इन पाट-पुर्जों का

उत्पादन पहले इसी कंपनी ने किया था। वेबसाइट का दावा है कि इस कंपनी ने 6,775 दूरबीनों और टैंकों में लगाए जाने वाले 200 कैमरों का वापस खरीदारी की है। जापान की सेना से रिटायर्ड हुए अधिकारी नोबुयुकी अकातनी ने बताया कि इन उपकरणों का संबंध संभवत: लक्ष्यों की दूरी का अनुमान लगाने से है। ब्रिटिश थिंक टैंक इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रेटेजिक स्टडीज ने इस वर्ष जारी अपनी एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया है कि रूसी सेना के पास करीब पांच हजार टैंक हैं। ब्रसेल्स स्थित थिंक टैंक इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप से जुड़े रूसी विश्लेषक ओलेग इगनातोव ने कहा है- 'रूस के पास बड़ी संख्या में पुराने टी-72 टैंक हैं।

अमेरिका ने कहा- भारत में वाइब्रेंट डेमोक्रेसी : प्रेस ब्रीफिंग में लोकतंत्र के सवाल पर व्हाइट हाउस का जवाब- दिल्ली जाकर खुद देख लें

वॉशिंगटन।

राहुल गांधी के अमेरिका दौरे के बाद भारत के लोकतंत्र को लेकर एक सवाल पर अमेरिका की तरफ से बड़ा बयान सामने आया है। व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने प्रेस ब्रीफिंग में कहा- भारत एक ऐसा लोकतांत्रिक देश है जो लगातार विकास कर रहा है। जो भी नई दिल्ली जाता है वो इसे देख और महसूस कर सकता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे के वक्त हम लोकतंत्र के संस्थानों की ताकत पर भी चर्चा करेंगे। किर्बी ने कहा- भारत कई स्तरों पर अमेरिका का मजबूत साझेदार है। वो क्वॉड का मेंबर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में हमारा खास दोस्त है। शांगरी-ला डायलॉग में रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने भारत के साथ अतिरिक्त रक्षा सहयोग की घोषणा की है। अमेरिका के भारत के साथ रिश्ते कई स्तरों पर मायने रखते हैं। राष्ट्रपति बाइडेन पीएम मोदी की अमेरिका यात्रा के वक्त कई अहम मुद्दों पर चर्चा करेंगे। हमारा लक्ष्य इस पार्टनरशिप को और आगे ले जाना है।

पीएम मोदी के दौरे का मकसद दोनों देशों के रिश्तों को आगे बढ़ाना - व्हाइट हाउस प्रवक्ता

ने कहा- हम किसी भी मुद्दे पर बात करने में कतराते नहीं हैं और आप अपने दोस्तों के साथ ही ऐसा कर सकते हैं। हालांकि, पीएम मोदी की इस यात्रा का मकसद दोनों देशों के बीच दोस्ती और भागीदारी को और आगे बढ़ाना है।

व्हाइट हाउस बोला- चीन के रवैये से किसी को चोट लग सकती है - साउथ चाइना सी में अमेरिका की चीनी युद्धपोत से टकराव को लेकर व्हाइट हाउस ने कहा- ताइवान स्ट्रेट में आक्रामकता के लिए चीन की सेना जिम्मेदार है। चीन को ऐसी लापरवाही से बचना चाहिए। इसकी वजह से कई बार गलती हो जाती है और जिससे किसी को चोट भी पहुंच सकती है। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों में इस तरह के इंटरसेप्शन्स होते रहते हैं। हम भी ये करते हैं लेकिन ये पूरी तरह से प्रोफेशनल होता है और तब किया जाता है जब इसकी बहुत ज्यादा जरूरत हो।

4 दिन के अमेरिका दौरे पर जाएंगे पीएम मोदी - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 21 से 24 जून तक अमेरिका के दौरे पर रहेंगे। इस दौरान दोनों देशों के बीच 350 फाइटर जेट इंजनों के भारत में निर्माण का बड़ा रणनीतिक सौदा हो सकता है। इसके अलावा, 22 हजार करोड़ रुपए की 30 आर्म्ड ड्रोन खरीदने की डील भी होने की संभावना है। इसके अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन व्हाइट हाउस में पीएम मोदी के लिए स्टेट डिनर भी होस्ट करेंगे। दौरे के तहत पीएम मोदी 22 जून को दूसरी बार अमेरिकी संसद (कांग्रेस) को भी संबोधित करेंगे। इससे पहले उन्होंने 2016 में भी कांग्रेस को एड्रेस किया था। पीएम मोदी ऐसा करने वाले भारत के पहले प्रधानमंत्री होंगे। पीएम मोदी के अमेरिका दौरे से पहले 4 जून को अमेरिका के डिफेंस सेक्रेटरी लॉयड ऑस्टिन ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात की।

जापान में युवाओं को मुस्कुराने की ट्रेनिंग

कोविड के दौरान मास्क ने खराब की स्माइल, अब हजारों रुपए देकर हॉलीवुड स्माइल सीख रहे

टोक्यो।

कोविड-19 ने दुनिया में लाखों लोगों की जान ली। इसके अलावा कई दूसरी तरह के अनगिनत नुकसान भी हुए। जापान में तो अजीब तरह का मामला सामने आया है। यहां के लोग और खासकर यंग जेनरेशन ठीक तरह से मुस्कुराना भी भूल गई। अब यहां स्पेशल क्लासेज के जरिए लोगों को सही तरह से मुस्कुराना सिखाया जा रहा है, लेकिन ये मुफ्त में नहीं है, बल्कि इसके लिए हजारों रुपए चुकाने पड़ रहे हैं। हमेशा मास्क लगाए रहने की वजह से जापानी ठीक से मुस्कुराना भूल गए थे। ट्रेनिंग में इन्हें हॉलीवुड स्टाइल की स्माइल सिखाई जा रही है।

हर चेहरे के सामने आईना

सही तरीके से स्माइल सीख रहे युवाओं पर एक रिपोर्ट पब्लिश की है। इसके मुताबिक टोक्यो आर्ट स्कूल के कई स्टूडेंट्स हाथों में आईना यानी मिरर

लेकर मुस्कुराहट सुधारने की प्रैक्टिस कर रहे हैं। मुंह के दोनों तरफ के हिस्सों को चौड़ा करने के लिए 'माउथ स्ट्रेचिंग' एक्सरसाइज चल रही है। इनके साथ एक ट्रेनर भी मौजूद रहता है। ट्रेनर का नाम कवानो है और वो मुस्कुराने का हुनर सिखाने के लिए तगड़ी फीस वसूल करती हैं। इसके बावजूद कवानो के स्टूडेंट्स की तादाद बढ़ती जा रही है। इनमें सिर्फ यंग जेनरेशन शामिल नहीं है, कुछ बुजुर्ग भी इन क्लासेज में आ रहे हैं।

मास्क ने छीनी स्माइल

रिपोर्ट के मुताबिक कोविड के दौर में जापान के लोगों ने मास्क मैंडेट को सख्ती से फॉलो किया। इसके अलावा यहां एक खास तरह का बुखार भी फैलता रहता है, जिसकी वजह से जापानी अकसर मास्क लगाते हैं। मास्क लगाने का नतीजा ये हुआ कि लोग स्माइल देना ही भूलने लगे। या कम से कम सही तरीके से मुस्कुराना भूलने लगे। 20 साल की हिमावारी योशिदा मार्केट जॉब करना चाहती हैं। वो कहती हैं- मेरी जॉब रिक्रायरमेंट्स में प्रॉपर स्माइल भी शामिल है। लिहाजा अब मैं ये आर्ट सीख रही हूं। योशिदा आगे कहती हैं- कोविड का दौर बेहद भयानक साबित हुआ। इस दौर में हमें फेशियल मसल्स (चेहरे की मांसपेशियां) इस्तेमाल करने की ज्यादा जरूरत महसूस नहीं हुई। अब स्माइल एजुकेशन ले रही हूं।

पीएम दहल बोले- नक्शा सामने रखकर चर्चा से सुलझेगा भारत-नेपाल का सीमा विवाद, कई मुद्दों पर हुई चर्चा

काठमांडो। प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने कहा, दोनों देशों के बीच सीमा विवादों को हल करने के लिए नेपाल और भारत के अधिकारियों को मानचित्र सामने रखकर बातचीत करनी चाहिए। वे नेपाल की संसद (प्रतिनिधि सभा) में सांसदों के सवालों का जवाब दे रहे थे। प्रचंड 31 मई से 3 जून तक भारत के दौरे पर थे। दिसंबर 2022 में पदभार ग्रहण करने के बाद यह उनकी पहली आधिकारिक विदेश यात्रा थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बृहस्पतिवार को उनकी बैठक में दोनों देशों ने सात समझौतों पर हस्ताक्षर किए और रेलवे सेवाओं सहित छह परियोजनाएं शुरू कीं। दोनों नेताओं ने सीमा विवाद को मित्रता की भावना से सुलझाने का भी संकल्प लिया।

स्माइल एजुकेशन के लिए कंपनी

स्माइल ट्रेनर कवानो ने अपनी कंपनी को स्माइल एजुकेशन के नाम से रजिस्टर्ड कराया है। एक साल में 4 गुना स्टूडेंट बढ़ गए। इनमें सरकारी अफसर भी शामिल हैं। इसके अलावा प्राईवेट कंपनियों के प्रोफेशनल्स और खासतौर पर मार्केटिंग फील्ड के लोग हैं। कवानो कहती हैं- जापान में मास्क बहुत आम चीज है। कोविड जब नहीं था, तब भी लोग इन्फेक्शन्स से बचने के लिए इसका इस्तेमाल करते थे। कुछ लोग इसके फायदे भी गिनाते हैं। मसलन- पुरुषों ने अगर शेविंग नहीं की है तो मास्क में ये ज्यादा नजर नहीं आती।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पूरे विश्व में बढ़ी भारत की साख : बिप्लब देव

भाजपा एक महीने चलाएगी पूरे देश में महासंपर्क अभियान

फरीदाबाद (हिंस)। त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं हरियाणा भाजपा प्रभारी बिप्लब देव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नौ साल में भारत सशक्त बनने की ओर अग्रसर हुआ है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत की साख न केवल देश बल्कि पूरे विश्व में बढ़ी है और आज हर देशवासी की आत्मनिर्भरता, मान-सम्मान और मर्यादा भी बढ़ी है। बिप्लब देव मंगलवार को फरीदाबाद के सेक्टर-15 स्थित भाजपा जिला कार्यालय अटल कमल पर आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर उनके साथ मुख्य रूप से केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर, कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा, विधायक राजेश नागर, सीमा त्रिखा, नरेंद्र गुप्ता, जगदीश नायर आदि मौजूद थे। देव ने पत्रकारों को बताया कि भारतीय जनता पार्टी नौ साल की सातत्वत्ता और कर्म कौशलता को जन जन तक पहुंचाने के लिए अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के नेतृत्व में पूरे देश में 30 मई से 30 जून तक एक माह तक महासंपर्क अभियान चला रही है। बिप्लब देव ने कहा कि इस महासंपर्क अभियान की शुरुआत

29 मई को हुई। इस कार्यक्रम के तहत हर लोकसभा में एक बड़ी जनसभा आयोजित होगी और पूरे देशभर में 51 बड़ी रैलियां भी आयोजित होगी, जिसमें प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, पार्टी अध्यक्ष व केंद्रीय नेतृत्व तथा मुख्यमंत्री भाग लेंगे। उन्होंने बताया कि महासंपर्क अभियान के तहत सोशल मीडिया के मित्रों के साथ स्मरण में भाग लेकर एक-एक लोकसभा में नए एक हजार परिवार के साथ कम से कम नया रिश्ता बंधन तैयार करना है और विधानसभा स्तर पर भी यही होगा। उन्होंने बताया कि 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस पर शक्ति केंद्र तक योग शिविर आयोजित होंगे। इसके साथ ही प्रधानमंत्री की डिजिटल रैली बूथ स्तर पर होगी, जिसमें दस लाख बूथ शामिल होंगे और हर बूथ पर एक स्क्रीन पर प्रधानमंत्री का संबोधन होगा। उन्होंने बताया कि प्रबुद्धजन के साथ संपर्क करना, नए लोगों को जोड़ना, व्यापारियों से सेमिनार आयोजित करना, बुद्धिजीवी व्यक्तियों के साथ समागम करना शामिल है। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत व्यक्तिगत लाभार्थियों के साथ संपर्क कर उनका धन्यवाद देना और लोगों से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित कर उन्हें आगे के कार्यक्रमों के लिए अपने साथ जोड़ना है। बिप्लब देव ने कहा कि हरियाणा में पहली बार ट्रांसपरेंस नीति चलाई गई, जिसके तहत बिना पर्ची बिना खर्ची के नौकरियां देने की व्यवस्था की गई। वहीं, प्रधानमंत्री के आयुष्मान भारत के माध्यम से हरियाणा के 90 लाख लोगों को सुविधा दिलाने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा कि जन्म से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक प्रधानमंत्री ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, इंफ्रास्ट्रक्चर सहित हर क्षेत्र में काम किया और यही काम हम देशवासियों के सामने इस महासंपर्क अभियान के तहत लेकर जाएंगे। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान सफल टीकाकरण करने का श्रेय भी प्रधानमंत्री को जाता है, जिन्होंने इस टीकाकरण को विश्व के 100 देशों तक पहुंचाने का काम किया।

गलती से भारतीय सीमा में आए पाक नागरिकों को किया रेंजरों के हवाले

चंडीगढ़ हिंस)। सीमा सुरक्षा बल ने पंजाब के तरनतारन सेक्टर में अंतर्राष्ट्रीय सीमा से पकड़े गए दो पाकिस्तानी नागरिकों को मंगलवार को पाक रेंजरों के हवाले कर दिया। इन नागरिकों से बीएसएफ को किसी तरह का संदिग्ध सामान नहीं मिला है। बीएसएफ के अनुसार पांच जून 2023 को किसान गार्ड गश्त पर थे। दो पाक नागरिक भारतीय सीमा में आए। घटना तरनतारन जिले के नौशेरा ढल्ला गांव के पास हुई। पकड़े गए पाकिस्तानियों की पहचान टोबा टेक सिंह निवासी 25 वर्षीय सबीब खान और पाकिस्तान के लाहौर के शादरा गांव के 21 वर्षीय मोहम्मद चंद के रूप में हुई। पूछताछ करने पर पकड़े गए पाक नागरिकों ने अनजाने में भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने का दावा किया। तलाशी के दौरान उनके निजी सामान और पाकिस्तानी 1000 रुपए के अलावा कोई भी आपत्तिजनक सामान नहीं मिला। बीएसएफ ने मंगलवार को पाकिस्तान रेंजर्स से संपर्क किया और घटना को लेकर औपचारिक विरोध भी दर्ज कराया। बीएसएफ के आला अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद पाक रेंजरों को सीमा पर बुलाया गया और मानवीय सिद्धांतों के आधार पर सबीब खान और मोहम्मद चंद दोनों को रेंजर्स को सौंप दिया गया।

सभी सिखों को श्री अकाल तख्त साहिब के आदेश अंतर्गत एकजुट होने की जरूरत : जत्थेदार अकाल तख्त साहिब

चंडीगढ़ (हिंस)। साका नीला तारा की 39वीं वर्षगांठ के अवसर पर श्री अकाल तख्त साहिब में अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए। श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह ने पंथ के नाम संदेश दिया। जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह ने कहा कि श्री अकाल तख्त साहिब के आदेश के तहत सभी सिखों को एकजुट होने की जरूरत है। अगर हम साथ हैं तो सरकार को यहां ला सकते हैं और झुका सकते हैं। इसी बीच खालिस्तान समर्थकों ने नारे लगाने शुरू कर दिए। गौरतलब है कि पिछले दो दिनों से हरमंदिर साहिब के आसपास सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। इसके साथ ही मंगलवार सुबह से ही सिख संगत का जमावड़ा शुरू हो गया। किसी के हाथ में 1984 साका नीला तारा की तस्वीर थी तो किसी के हाथ में शांतिपूर्ण खालिस्तान की मांग वाले पोस्टर थे। साका नीला तारा के दौरान मारे गए सिखों के परिवारों को अखंड पाठ साहिब के भोग पड़ने के उपरांत सम्मानित किया जा रहा है। हरमंदिर साहिब के बाहर पुलिस, कमांडो और अर्धसैनिक बल तैनात हैं। साथ ही श्री हरमंदिर साहिब के अंदर सादे कपड़ों में पुलिस बल भी तैनात है। 1984 के ब्लू स्टार ऑपरेशन का विरोध करने वालों की वीडियो रिकॉर्डिंग की जा रही है। श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह ने 18 जुलाई 2006 के प्रस्ताव की प्रति शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को पहले ही भेज दी है, जिसमें 5 सिंह साहिबान द्वारा लिए गए फैसलों का विवरण है कि हरिमंदिर साहिब में कोई भी व्यक्ति जिंदाबाद एवं मुर्दाबाद के नारे नहीं लगाएगा।

एनआईए ने टेरर फंडिंग पर पंजाब-हरियाणा में मारे छापे

चंडीगढ़ (हिंस)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने आतंकी संगठन खालिस्तान टाइगर फोर्स की फंडिंग करने वालों पर कार्रवाई करते हुए पंजाब और हरियाणा में दस स्थानों पर छापे मारे। इस दौरान एनआईए ने अलग-अलग स्थानों पर भारी मात्रा में दस्तावेज भी बरामद किए हैं। केटीएफ के लिए फंड जुटाने के अलावा सीमा पार से हथियारों की तस्करी की साजिश में शामिल लोगों पर भी ये रेड हुई। एनआईए की टीम ने पंजाब के श्री मुक्तसर साहिब जिले में खिलौना बेचने वाले पर रेड की है। टीम ने अबोहर रोड बाइपास पर रहने वाले व्यक्ति से करीब छह घंटे तक पूछताछ की। इसके अलावा फिरोजपुर के तलवंडी भाई क्षेत्र में भी रेड की गई। यहां के करीब पांच गांवों से कुछ संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है। उनसे केटीएफ की फंडिंग और हथियार तस्करी की साजिश में शामिल होने को लेकर पूछताछ की जा रही है। हरियाणा के कैथल में दवा कारोबारी भाईयों प्रदीप और कुलदीप के घर सुबह 6 बजे रेड हुई। गांव चूहड़माजरा में यह कार्रवाई करीब चार घंटे चली। टीम के पास जानकारी थी कि प्रदीप और कुलदीप के बैंक खातों में असामान्य ट्रांजेक्शन हुए हैं। दोनों अवैध रूप से दवाइयों की सप्लाई करते हैं। प्रदीप के बड़े भाई कुलदीप के अनुसार, शक के आधार पर एनआईए की टीम उनके घर पूछताछ के लिए आई थी। बैंक खातों की पासबुक और अन्य ट्रांजेक्शन की जांच की गई।

ईडी की कार्रवाई दूसरे दिन भी जारी

पेपर लीक और रुपए के लेन-देन के मिले कई सबूत

जयपुर (हिंस)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट) पेपर लीक मामले में कार्रवाई मंगलवार को दूसरे दिन भी जारी है। गौरतलब है कि जयपुर, उदयपुर, अजमेर, जालोर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और सिरोही में 28 जगहों पर ईडी की टीम जांच कर रही है। जहां जानकारी में सामने आया कि ईडी के अधिकारियों को राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के सदस्य बाबूलाल कटारा, मास्टरमाइंड सुरेश ढाका और सुरेश कुमार विश्नोई के घर से अहम दस्तावेज मिले हैं और साथ ही सभी के आवास और कार्यालय को सील कर दिया है। ईडी के अधिकारी आरोपियों के परिजनों के बयान और वित्तीय लेन-देन की जानकारी जुटा रहे हैं। प्रारंभिक जांच में आरोपियों से जुड़े कुछ नए लोगों की जानकारी सामने आई है। पेपर लीक

और रुपए के लेन-देन के सबूत मिले हैं। इसके अलावा ईडी की टीम ने जयपुर में चार जगहों पर सर्च कर रही है, जिसमें कुछ नेताओं और उनके परिचितों से पूछताछ करने की तैयारियां की जा रही है। ईडी सूत्रों के अनुसार एक बड़े नेता के रिश्तेदार से पूछताछ हो सकती है। ईडी को सोमवार को सर्च के दौरान कई सबूत मिले हैं। इसके आधार पर टीम प्रारंभिक जांच (पीई) दर्ज किया है। पीई दर्ज होने के बाद उन सभी से ईडी के अधिकारी पूछताछ करेंगे, जिनके खिलाफ उन्हें दस्तावेज मिले हैं। इनमें राजनेता और ब्यूरोक्रेट सभी शामिल हैं। इधर आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा के आवास पर सर्च के दौरान ईडी को कई दस्तावेज मिले हैं। इनमें कटारा के बेटे के नाम पर 50 लाख रुपए के म्यूचुअल फंड की जानकारी मिली है। वहीं कटारा ने साल 2021-22 में अलग-अलग जिलों में 5 जगह जमीन खरीदी। इस विषय को लेकर कटारा के बेटे और परिवार के अन्य सदस्यों से पूछताछ की जा रही है। जानकारी के अनुसार पेपर लीक मामले के आरोपी शेर सिंह मीणा की दोस्त अनीता मीणा, बाबूलाल कटारा का भांजा विजय डामोर, सुरेश कुमार विश्नोई, सुरेश ढाका के परिजनों से ईडी के अधिकारी पूछताछ करेंगे। अब तक की जांच में साबित हो चुका है कि यह पूरा मामला प्राइमरी मनी लांड्रिंग से जुड़ा है। नौकरी लगाने के नाम पर पूरी गैंग ने काम किया। कई अभ्यर्थियों की नौकरी लगाई। इसमें करोड़ों रुपए का लेन-देन हुआ है। आरपीएससी के अन्य सदस्यों से भी इस बारे में पूछताछ हो सकती है। ईडी को शक है कि कटारा अपने स्तर पर इतना बड़ा घपला नहीं कर सकता था। पुलिस के साथ-साथ ईडी को भी सुरेश ढाका की तलाश है। ईडी के अधिकारी जानते हैं कि सुरेश ढाका के प्रदेश में कई मंत्रियों और ब्यूरोक्रेट्स के साथ संबंध थे। नौकरी लगाने के साथ-साथ उसकी कई कोचिंग सेंटरों में पार्टनरशिप थी। इनमें कई नेताओं और ब्यूरोक्रेट्स का पैसा लगा हुआ था।

छेड़छाड़ के आरोप में सरकारी स्कूल का प्रिंसिपल गिरफ्तार

श्रीनगर (हिंस)। श्रीनगर पुलिस ने छेड़छाड़ के मामले में मंगलवार को एक सरकारी स्कूल के प्रिंसिपल को गिरफ्तार किया है। श्रीनगर पुलिस ने एक ट्वीवट में कहा कि शब्बीर अहमद मीर को शाल्टेंग पुलिस स्टेशन में दर्ज छेड़छाड़ के एक मामले में गिरफ्तार किया गया है। शब्बीर अहमद मीर पुत्र रसूल मीर निवासी जदीबल श्रीनगर सरकारी एचएसएस गुंड हस्सी भट के प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत है को छेड़छाड़ के मामले में गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि आरोपी के खिलाफ आईपीसी की धारा 354डी, 294 और 506 के तहत एफआईआर दर्ज की गई है। इसमें पुलिस आगे की जांच कर रही है।

चुनावी रंजिश में मारी गोली, 32 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

पलवल (हिंस)। जिले के हसनपुर थाना क्षेत्र के भेंडोली गांव में सरपंच पद के चुनाव की रंजिश के चलते मंगलवार को पूर्व सरपंच के देवर के पैर में गोली मार कर घायल किया। उसे इलाज के लिए फरीदाबाद के एक निजी अस्पताल में दाखिल कराया गया है। आरोप है कि गांव की मौजूदा सरपंच व उसके परिजनों ने मारपीट कर फायरिंग की और छत से ईंट-पत्थर भी बरसाए। महिला सरपंच समेत 32 नामजद के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार गांव भेंडोली के रहने वाले पुष्पेंद्र ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई है कि शाम को करीब साढ़े सात बजे वह अपने चाचा रामबीर के साथ बाइक पर सवार होकर खेतों से घर जा रहा था। उसी दौरान गांव की मौजूदा सरपंच कविता ने दर्शना, बीरो व सपना के साथ उनका रास्ता रोक लिया। कविता ने उस पर ईंटों से वार किया। कविता के पति रवि, गब्बर उर्फ नरेश, संजय, राहुल, सचिन, विक्रम उर्फ भोला, पदम सिंह, धीरज, गोलू, करन, तुलसी, किशनपाल, साहिल, सोनू, आकाश, किरणपाल, शीशपाल, विष्णु व सोनू ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी।

गुस्साए जिला परिषद सदस्यों ने किया साधारण सभा की बैठक का बहिष्कार

श्रीगंगानगर (हिंस)। बार-बार मुद्दे उठाने के बाद भी गांवों की समस्याओं का समाधान नहीं होने से आहत जिला परिषद के सदस्यों ने मंगलवार को जिला परिषद की साधारण सभा की बैठक का बहिष्कार कर दिया। खास बात यह है कि बहिष्कार करने वालों में लगभग सभी सदस्य सत्तापक्ष के हैं, जिन्होंने कांग्रेस के कुलदीप इंदौरा को जिला प्रमुख बनाया और अब वे ही बगावत के रास्ते पर हैं। जिला परिषद सदस्यों के आक्रोश से एक बार जिला परिषद सभाकक्ष का माहौल गर्मा गया। गुस्से को भांपते हुए जिला प्रमुख कुलदीप इंदौरा और विधायक राजकुमार गौड़ ने डायरेक्टरों को शांत करने के लिए सभाकक्ष की बजाय अपने चैंबर में बुलाया। इस दौरान जिला परिषद सदस्य और पूर्व सांसद शंकर, सदस्य मंगल सिंह, पूर्व सरपंच सुरेन्द्र पारीक, पूर्व सरपंच

लालचंद मिर्जेवाला सहित अन्य सदस्यों ने जिला प्रमुख इंदौरा और विधायक गौड़ को खरी-खरी सुनाई । उन्होंने कहा कि जब छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान ही नहीं हो रहा तो बैठक करने का क्या औचित्य है? इस दौरान जिला कलेक्टर सौरभ स्वामी भी जिला परिषद पहुंच गए। उन्होंने जिला प्रमुख के चैंबर में डायरेक्टरों से बैठक की और उनकी समस्याओं का समाधान करवाने का आश्वासन दिया, मगर समाचार लिखे जाने तक सदस्य बहिष्कार पर अड़े हुए थे। विभिन्न विभागों के अधिकारी बैठक शुरू होने से पहले पहुंच गए। वे सभाकक्ष में बैठ गए, दूसरी ओर सदस्यों ने बैठक का बहिष्कार कर दिया। जिला प्रमुख इंदौरा और विधायक गौड़ सदस्यों को शांत करने में जुटे रहे। इस दौरान जिला परिषद सीईओ मुहम्मद जुनैद सहित अन्य अधिकारी इंतजार करते रहे कि कब डायरेक्टर शांत हों और बैठक शुरू हो। जिला परिषद की साधारण सभा की बैठक के बहिष्कार की योजना आज से कई दिन पहले ही सदस्यों ने तैयार कर ली थी। उन्होंने कहा था कि बार-बार मुद्दे उठाने के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। ग्राम पंचायतों में होने वाले विकास कार्यों को लेकर उनसे कोई चर्चा तक नहीं की जा रही है।

प्रदेश की सभी दो सौ सीटों पर चुनाव लड़ेगी आप : सह प्रभारी नरेश यादव

जयपुर (हिंस)। राजस्थान विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। जिसको लेकर आम आदमी पार्टी का संगठन भी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है और अब भाजपा-कांग्रेस के विकल्प के रूप में आम आदमी पार्टी लोगों के बीच आ चुकी है। यह बात राजस्थान के सह-प्रभारी और दिल्ली के महरौली से विधायक नरेश यादव ने मंगलवार को कहीं। बतौर जयपुर संभाग प्रभारी यादव ने कहा कि दौसा, सीकर, झुंझुनू, अलवर और जयपुर ज़िलों में जाकर संगठन का काम करते हुए तिरंगा यात्रा निकाल रहे हैं। लगातार हमारा संगठन भी बढ़ता जा रहा है। अभी 18 जून को श्रीगंगानगर में आयोजित की जाने वाली महारैली की तैयारियां भी चल रहीं हैं। नरेश यादव ने कहा कि आम आदमी पार्टी अपने मजबूत संगठन के साथ प्रदेश की सभी 200 सीटों पर चुनाव लड़ने जा रही है। सहप्रभारी ने कहा कि हाल ही जयपुर में संगठन के 5 हजार से ज्यादा पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण की थी। जितने भी हमारे पदाधिकारी बनते जा रहे हैं उनका शपथ ग्रहण कार्यक्रम भी हो रहे हैं। प्रदेश स्तर और जिला स्तर पर हमारे पदाधिकारी बन चुके हैं। जबकि पंचायत स्तर तक पदाधिकारी बनाने का काम जारी है। संगठन के सिलसिले में आने वाले समय में बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिसमें दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल जी और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान पदाधिकारियों को शपथ दिलाने आएंगे। सह-प्रभारी नरेश यादव ने कहा कि राजस्थान में बीजेपी और कांग्रेस से जनता बुरी तरह से त्रस्त हो चुकी है। जबकि आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब में स्वास्थ्य, शिक्षा के क्षेत्र में काम करके दिखाया है। और उसी काम को लेकर हम राजस्थान की जनता के बीच भी जा रहे हैं। अगर जनता ने एक मौका दिया, तो आम आदमी पार्टी राजस्थान को शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था बेहतर करेगी साथ ही राजस्थान में बीजेपी-कांग्रेस द्वारा फैलाए गए भ्रष्टाचार को मिटाने का काम करते हुए प्रदेश को खुशहाली के रास्ते पर ले जाने का काम करेगी।

टैरर फंडिंग में कैथल के दवा कारोबारी के घर एनआईए का छापा

कैथल (हिंस)। मंगलवार को गांव चूहड़माजरा में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की टीम ने सुबह छह बजे एक दवा कारोबारी के घर रेड की। मामला आतंकी संगठन खालिस्तान टाइगर फोर्स की फंडिंग से जुड़ा बताया है। पंजाब में 9 जगहों और हरियाणा में एक जगह पर रेड की गई है। केटीएफ के लिए फंड जुटाने के अलावा बॉर्डर पार से हथियार, गोला-बारूद और एक्सप्लोसिव की तस्करी की साजिश में शामिल लोगों पर भी ये रेड हुई। हालांकि अभी तक इसका ब्यौरा सामने नहीं आया है। मंगलवार सुबह एनआईए की टीम ने गांव चूहड़माजरा के प्रदीप नामक युवक के घर लगभग 4 घंटे तक जांच की। प्रदीप के बड़े भाई कुलदीप ने जानकारी देते हुए बताया कि पंजाब के एक गैंगस्टर से संबंध रखने और हवाला का पैसा ट्रांसफर करने की आशंका के चलते टीम गांव में पहुंची थी। लगभग 4 घंटे की कड़ी तलाशी के बाद एनआईए की टीम वापिस लौट गई। टीम के पास इनपुट था कि जगदीश के दो बेटों प्रदीप और कुलदीप के बैंक खातों में हुई ट्रांजैक्शन संदेहास्पद थी। प्रदीप और उसका भाई कुलदीप दोनों अवैध रूप से दवाइयों की सप्लाई करते हैं। उनका संबंध पंजाब के गैंगस्टर लंडा से होने की आशंका भी जताई जा रही है। इन सभी की जांच करने के लिए ही टीम आई थी। एजेंसी के अधिकारियों ने प्रदीप से खालीस्तान और अमृतपाल के संबंध ने भी सवाल जवाब किए। यह भी पता चला है कि अधिकारी उसका मोबाइल भी अपने साथ ले गए हैं। प्रदीप के भाई कुलदीप ने बताया कि एनआईए के अधिकारी शक के आधार पर पूछताछ करने के लिए उनके घर आए थे। अधिकारियों ने उनके परिवार से कई सवाल जवाब किए। जिसका परिवार के सदस्यों ने जवाब दिया। एमआई के अधिकारियों ने कई कागजों पर प्रदीप के हस्ताक्षर करवाए। भाई प्रदीप के बैंक खातों की पासबुक और अन्य ट्रांजेक्शन की जांच की गई। टीम ने प्रदीप के कई कागजों पर हस्ताक्षर भी करवाए। टीम ने प्रदीप के अतिरिक्त परिवार के किसी अन्य सदस्य से कोई बातचीत नहीं की और ना ही कोई सवाल किया। एनआईए की टीम ने प्रदीप से क्या पूछा और क्या सवाल किए।

हनीट्रैप मामले में अब डायल 112 का थानेदार गिरफ्तार

तीन महिलाएं व एक युवक पहले दबोचे

पलवल (हिंस)। कैंप थाना पुलिस ने चांदहट थाना में तैनात ईएसआई को हनीट्रैप में फंसाकर 20 लाख मांगने के मामले में 5वीं गिरफ्तारी की है। पुलिस ने 5वां आरोपी मंगलवार को अलीगढ़ से गिरफ्तार किया। इसी मामले में 3 महिलाओं सहित अब कुल 5 गिरफ्तार हो चुके है, लेकिन इसके तार आगे जुड़ते ही जा रहे हैं। गिरफ्तार थानेदार को रिमांड पर लेकर हनीट्रैप नेटवर्कहिस्से में आए रुपए बरामद किए जाऐंगे। कैंप थाना प्रभारी ने उदभान ने बताया कि हनीट्रैप में शामिल फरार चल रहे मोहन नगर पलवल निवासी थानेदार ईएसआई हंसराज डायल 112 पर तैनात था। उसको बुलंदशहर से गिरफ्तार किया है। आरोपी थानेदार 18 फरवरी से गैर हाजिर था। इससे पहले जेवर

(यूपी) निवासी नगीना उर्फ नगमा, भरतपुर (राजस्थान) निवासी इंद्रा, गोविंदपुरा (राजस्थान) निवासी प्रीति व रुपडाका (हथीन) निवासी अमित को गिरफ्तार किया चुका है। कैंप थाना प्रभारी ने उदभान ने बताया कि चांदहट थाना में तैनात ईएसआई होशियार सिंह ने 22 मई को मुकदमा दर्ज कराया था कि नवंबर 2022 में वह डायल 112 की गाड़ी पर तैनात था। उसी दौरान रात को उसके पास चंडीगढ़ से एक फोन आया कि अलीगढ़ रोड पर नगीना उर्फ नगमा नामक महिला की गाड़ी खराब हो गई है। वह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचा और दोनों महिलाओं नगीना उर्फ नगमा व प्रीति की मदद की। 2 दिन बाद उसके पास नगीना ने फोन करके अश्लील बातचीत की और बातचीत को रिकॉर्ड कर लिया। रिकॉर्डिंग वायरल करने की धमकी देकर नगीना ने उससे 10 हजार रुपए ले लिए। 12 मई 2023 को रिकॉर्डिंग वायरल करने की धमकी देकर नगीना और प्रीति उससे उसकी गाड़ी और 4 हजार ले गईं। ईएसआई होशियार सिंह के अनुसार इसके बाद नगीना और प्रीति गाड़ी लेकर अमरपुर आई और उन्हें घर छोड़ने के लिए कहा।

ओयो होटलों में पुलिस का छापा, नौ महिलाएं सहित 14 गिरफ्तार

पलवल (हिंस)। होडल में चल रहे ओयो होटलों में देह व्यापार की शिकायतों पर पुलिस ने करमन बार्डर सहित विभिन्न स्थानों के ओयो होटलों पर कल देर सायं एक साथ छापा मारा। इन होटलों से 9 महिलाएं सहित 14 लोगों को गिरफ्तार किया है। डीएसपी शाकिर हुसैन ने मंगलवार को बताया कि पुलिस प्रशासन शिकायतों के बाद ओयो होटलों पर इस प्रकार की कार्रवाई कर रहा है। शहर में अवैध रूप से दर्जनों ओयो होटल चलाए जा रहे हैं, जिनमें अधिकांश होटल संचालकों के पास किसी भी प्रकार की कोई अनुमति नहीं है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने इन होटलों से नौ महिलाएं और पांच पुरुषों के अलावा कई ओयो होटल संचालकों को भी गिरफ्तार किया है।

सर्व ब्राह्मण महासभा का राजनीतिक संगठन से कोई संबंध नहीं : जोशी

बीकानेर (हिंस)। सर्व ब्राह्मण महासभा की राजस्थान इकाई के प्रदेश अध्यक्ष पंडित एसके जोशी ने मंगलवार को बीकानेर में कहा कि हमारा संगठन किसी राजनीतिक पार्टी के साथ नहीं है। जो ब्राह्मण हितों की बात करेगा उसी का साथ संगठन देगा। अजमेर और जयपुर के बाद बीकानेर पहुंचे जोशी ने वरिष्ठ ब्राह्मण नेताओं से संभाग स्तर पर विस्तार के मुद्दे पर चर्चा की। जोशी ने कहा कि बदले परिवेश में ब्राह्मण समाज इतना अधिक जागरूक और संगठित हो गया है कि अब ब्राह्मण समाज के कंधे पर बंदूक रखकर राजनीतिक पार्टियां रोटियां नहीं सेक पाएंगे बल्कि जो भी ब्राह्मण समाज के हित की बात करेगा संगठन उसके साथ खड़ा रहेगा। सर्व ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व संभालने के बाद बीकानेर पहुंचकर दिए बयान में प्रदेश अध्यक्ष पंडित एस के जोशी ने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि, हर बार के लोकसभा और विधानसभा चुनाव में राजनीतिक पार्टियां ब्राह्मण समाज को झूठे दिलासे और आश्वासन देकर ठगने का काम करती रही है, लिहाजा सर्व ब्राह्मण महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा यही फैसला लिया गया है कि पूरी तरह से एकजुट होकर जागरुकता की ओर आगे बढ़ रहे सर्व ब्राह्मण महासभा ने यह फैसला लिया है कि जो भी राजनीतिक पार्टियां ब्राह्मण समाज के हित की बात करेगी सर्व ब्राह्मण महासभा उसका साथ देगी। संभाग स्तर पर कार्यकारिणी गठित करने के साथ समाज को और अधिक संगठित करने के उद्देश्य से विभिन्न सामाजिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया है, उसी के चलते राजस्थान के सभी सात संभागों में कार्यकारिणी स्थापित कर योग्य ब्राह्मण जनों को जिम्मेदारियां सौंपे जाने के साथ भविष्य की योजनाऐं बनाई जा रही है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक संभाग मुख्यालय पर स्थापित किए जा रहे संगठन में संभाग में आने वाले हर जिले को प्रतिनिधित्व मिल सके इस बात का भी पूरा पूरा ध्यान रखा जा रहा और 7 संभाग मुख्यालय पर संगठन कड़ी से कड़ी जोड़ने के साथ पूरे राजस्थान भर में ब्राह्मण समाज को और अधिक एकजुट करने के संकल्प को ध्यान में रखकर कार्य योजना बनाई जा रही है। जोशी ने बताया कि ब्राह्मण समाज के हित में ब्राह्मण हेल्पलाइन शुरू करने के साथ एक मोबाइल नंबर (9509924300) जारी किया गया, जिसमें व्हाट्सएप के जरिए अपनी समस्याएं बता कर नि:शुल्क रूप से समाधान पाने के लिए व्यवस्था की गई है। अन्य समाज की तरह ब्राह्मण समाज में भी कई ऐसे परिवार और व्यक्ति है जो विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ कर परेशान रहते हैं और कई बार खुद को अकेला महसूस करते हैं, इसलिए सर्व ब्राह्मण महासभा की राजस्थान इकाई ने देश और प्रदेश में पहली बार ऑनलाइन समस्या समाधान के प्रयास के चलते ऐसा कदम उठाया गया है, जिसके चलते पूरे राजस्थान के 33 जिलों में रहने वाले ब्राह्मण समाज के उन लोगों को प्रारंभिक तौर पर सहायता, संबल, मदद और मार्गदर्शन मिल सकेगा, जिसके चलते उन्हें राहत दिलवाने के अलावा जिस तरह की भी समस्या होगी, उसके समाधान के लिए स्थाई प्रयास भी किए जाएंगे। राजस्थान के सभी 33 जिलों में इस हेल्पलाइन के लिए प्रतिनिधियों को दायित्व सौंपा गया है।

सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में 13 साल की दूसरी सबसे बड़ी तेजी, मजबूत मांग से दिखी वृद्धि

नई दिल्ली।

मांग की अनुकूल स्थितियों और नए ग्राहकों की मदद से सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में मई, 2023 में 13 साल की दूसरी सबसे बड़ी तेजी रही। इस दौरान सेवा क्षेत्र में वृद्धि की रफ्तार अप्रैल, 2023 के मुकाबले कम रही। एसएंडपी ग्लोबल इंडिया सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक पिछले महीने घटकर 61.2 रह गया। अप्रैल, 2023 में यह 62 था। इस गिरावट के बावजूद सेवा क्षेत्र के उत्पादन में जुलाई, 2010 के बाद दूसरी सबसे तेज बढ़ोतरी देखने को मिली। यह लगातार 22वां महीना है, जब सेवा खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) 50 से ऊपर है। पीएमआई का 50 से अधिक रहना गतिविधियों में विस्तार और इससे नीचे का आंकड़ा सुस्ती का संकेत है। एसएंडपी ग्लोबल इंडिया कंपोजिट पीएमआई उत्पादन सूचकांक अप्रैल, 2023 की तरह मई, 2023 में भी बिना किसी बदलाव के 61.6 रहा।

उत्पादन और रोजगार सृजन में बढ़ोतरी

एसएंडपी ग्लोबल मार्केट इंटेलिजेंस में संयुक्त निदेशक (अर्थशास्त्र) पॉलियाना डी लीमा ने कहा कि मई के पीएमआई आंकड़े मौजूदा मांग में लचीलापन और प्रभावशाली उत्पादन वृद्धि को दर्शाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि भारत के गतिशील सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन हुआ है।

लीमा का कहना है कि सर्वे में शामिल कंपनियों ने नई मांग को पूरा करने के लिए अपने कार्यबल का विस्तार किया। मजबूत मांग और अनुकूल हालात को देखते हुए कंपनियों में अगले 12 महीनों में कारोबारी गतिविधियों में बढ़ोतरी को लेकर उत्साह है।

तो प्रभावित हो सकता है आर्थिक विकास

लीमा का कहना है कि उत्पादन लागत में बढ़ोतरी खरीद शक्ति को कम करने के साथ सेवाओं के शुल्क को प्रभावित कर सकती है। इससे मांग पर विपरीत असर पड़ेगा। कुल मिलाकर, लगातार बढ़ती लागत संभावित रूप से आर्थिक विकास को प्रभावित कर सकती है। साथ ही, इन चुनौतियों से निपटने के लिए कंपनियां वैकल्पिक विकल्प की तलाश कर सकती हैं।

न्यूज ब्रीफ

अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा दान करेंगे निखिल कामथ, ऐसा करने वाले बनेंगे चौथे भारतीय

नई दिल्ली । देश की बड़ी वित्तीय सेवा प्रदाता कंपनी जेरोधा के सह-संस्थापक निखिल कामथ ने अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा दान करने का एलान कर दिया है। इसी एलान के साथ अब कामथ का नाम वारेन बफेट, मेलिंडा फ्रेंच गेट्स और बिल गेट्स की द गिविंग प्लेज में शामिल हो गया है। अजीम प्रेमजी, किरण मजूमदार-शॉ, और रोहिणी व नंदन नीलेकणि के बाद द गिविंग प्लेज लिस्ट में शामिल होने वाले निखिल कामथ चौथे भारतीय व्यक्ति हैं। निखिल कामथ ने द गिविंग प्लेज में शामिल होने के लिए अपना आभार व्यक्त किया और दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए अपने समर्पण का उल्लेख किया। निखिल कामथ ने अपने बयान में कहा कि अपनी कम उम्र के बावजूद, वह दुनिया को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और मानते हैं कि एक अधिक न्यायसंगत समाज बनाने का संगठन का मिशन उनके मूल्यों और आकांक्षाओं के साथ मेल खाता है। निखिल हाल ही में गिविंग प्लेज अभियान में शामिल हुए थे। बता दें कि गिविंग प्लेज एक अभियान है जो दुनिया धनी व्यक्तियों और परिवारों को अपने जीवनकाल के दौरान या अपनी वसीयत में परोपकारी कार्यों के लिए कम से कम आधी संपत्ति दान करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए है। इसकी स्थापना वारेन बफेट और बिल गेट्स ने 2010 में की थी। कारोबारी कामथ लगभग दो दशकों से शेयर बाजार में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। उन्होंने 17 साल की उम्र में फुल-टाइम काम करना शुरू कर दिया था और शेयर बाजार को उन्होंने काफी करीब से जाना। उन्होंने इस क्षेत्र में 18-19 साल बिताए हैं। उनका कहना है कि उनकी विशेषज्ञता ज्यादातर निवेश में है और वह अपना ज्यादातर समय सार्वजनिक और निजी दोनों बाजारों में निवेश करने में लगाते हैं।

सऊदी अरब के फैसले से कच्चा तेल दो फीसदी महंगा, रोजाना दस लाख बैरल और घटाएगा तेल उत्पादन

नई दिल्ली। दुनिया भर में मंदी की आशंका के बावजूद कीमतों को बढ़ाने के लिए सऊदी अरब तेल उत्पादन में रोजाना दस लाख बैरल की और कमी करेगा। इससे कच्चे तेल की कीमतें दो फीसदी उछल गईं और ब्रेंट क्रूड 78.73 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। सऊदी अरब ने यह घोषणा कच्चे तेल निर्यातक देशों के 13 सदस्यीय संगठन (ओपेक) और रूस के नेतृत्व में इसके 10 भागीदारों की बैठक के बाद की है। विश्लेषकों के मुताबिक, सऊदी के उत्पादन में कटौती का फैसला सभी के लिए चौंकाने वाला है। सऊदी अरब ने फैसला किया है कि वह साल 2024 तक प्रति दिन 5 लाख बैरल कटौती को आगे बढ़ाएगा। अप्रैल में ओपेक के कई सदस्य उत्पादन में 10 लाख बैरल प्रतिदिन से अधिक की कटौती करने पर सहमत हुए थे। वहीं, एक और कटौती भारत जैसे आयातक देशों के लिए परेशानी बढ़ा सकती है।

फोनपे ने खाता एग्रीगेटर की सेवा शुरू की, ग्राहकों के लिए क्या हैं इसके फायदे

नई दिल्ली । फिनटेक कंपनी फोनपे ने मंगलवार को खाता एग्रीगेटर सेवा शुरू दी है। एक बयान में कंपनी के सह-संस्थापक और सीटीओ राहुल चारी ने कहा कि एए नेटवर्क डिजिटल कनेक्टिविटी के एक नए युग के लिए मंच स्थापित करेगा। चारी ने फोनपे मीडिया के बयान का हवाला देते हुए कहा कि यह सेवा उपयोगकर्ताओं को अपने स्वयं के वित्तीय डेटा तक पहुंचने और नियंत्रित करने के लिए सशक्त करेगा जिससे वित्तीय सेवाओं के साथ जुड़ने के तरीके में क्रांति आएगी। व्यक्ति अब सूचित वित्तीय निर्णय लेने और अवसरों की दुनिया को अनलॉक करने के लिए अपनी जानकारी की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं। कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी फोनपे टेक्नोलॉजी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड (पीटीएसपीएल) के माध्यम से यह सुविधा शुरू की गई है। यह सेवा ग्राहकों को विनियमित वित्तीय संस्थानों (आरएफआई) के साथ अपने सभी वित्तीय डेटा साझा करने की अनुमति देती है। वित्तीय डेटा में बैंक स्टेटमेंट, बीमा पॉलिसी, टैक्स फाइलिंग आदि शामिल हैं। इनका उपयोग ऋण आवेदन, नए बीमा, निवेश सलाह और अन्य कई तरह के उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

एपल का 15 इंच सेगमेंट में सबसे पतला लैपटॉप लॉन्च

भारत में कीमत 1.34 लाख; पहला मिक्स्ड रियलिटी हेडसेट विजन प्रो ग्लोबल मार्केट में उतारा

कैलिफोर्निया।

टेक कंपनी एपल ने अपनी एनुअल डेवलपर्स कॉन्फ्रेंस में 15 इंच डिस्प्ले वाला दुनिया का सबसे पतला लैपटॉप मैकबुक एयर लॉन्च किया है। भारत में इसकी शुरुआती कीमत 1.34 लाख रुपए है। 10 हजार का स्टूडेंट डिस्काउंट भी मिलेगा। एपल ने 9 जून तक चलने वाली अपनी कॉन्फ्रेंस में लैपटॉप के अलावा 3 और प्रोडक्ट लॉन्च किए हैं। इसमें मिक्स्ड रियलिटी हेडसेट विजन प्रो, डेक्सटॉप मैक प्रो और स्टूडियो शामिल हैं। इसके अलावा एपल ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम के फीचर्स भी अनवील किए हैं।

मैकबुक एयर 15 इंच - 15 इंच वाले दुनिया के सबसे पतले लैपटॉप को भारत में 1.34 लाख रुपए में पेश किया गया है। इसमें 18 घंटे बैकअप वाली बैटरी है। यह चार कलर मिडनाइट, स्टारलाइट, सिल्वर और स्पेस ग्रे में अवेलेबल है। नए मैकबुक के फीचर्स 13-इंच मैकबुक एयर Mw के तरह है। जैसे 3.5 mm हेडफोन जैक के साथ मैगसेफ चार्जिंग, दो थंडरबोल्ट पोर्ट आदि।

आंखों के इशारे चलता है विजन प्रो - यह कंपनी का पहला मिक्स्ड रियलिटी हेडसेट विजन प्रो है। 3,499 डॉलर यानी करीब 2.88 लाख रुपए की कीमत वाला एपल विजन प्रो अगले साल की शुरुआत में अमेरिका में उपलब्ध होगा। भारत में ये कब तक मिलेगा इसकी जानकारी कंपनी ने नहीं दी है। इस हेडसेट को आंखों के रेटिना और हाथों के मूवमेंट से ऑपरेट किया जा सकता है। इस डिवाइस को बनाने के लिए कंपनी पिछले 7 साल से इस पर

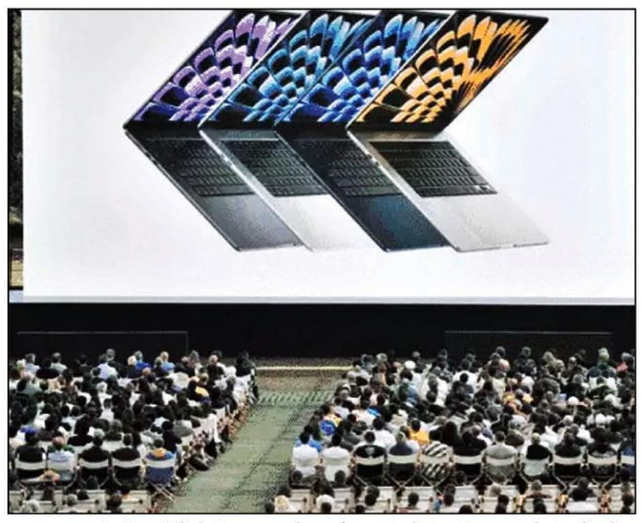

काम कर रही थी। सीईओ टिम कुक ने एपल विजन प्रो को एक नई शुरुआत बताया है। कंपनी का कहना है कि यूजर्स विजन प्रो को पहनने के बाद वर्चुअल स्पेस में अपनी फोटोज और वीडियोज को स्क्रॉल कर सकेंगे। इसके अलावा, 3डी मूवी देख और गेम खेल सकेंगे। एपल के इवेंट में डिज्नी के सीईओ बॉब इगोर ने बताया कि डिज्नी प्लस में पहले से विजन प्रो में देखने वाला कंटेंट अवेलेबल है।

मैक प्रो और मैक स्टूडियो डेस्कटॉप - एपल ने एम2 अल्ट्रा चिपसेट के साथ दो नए डेस्कटॉप मैक प्रो और मैक स्टूडियो भी लॉन्च किए। नया मैक प्रो इन्टेल बेस्ड मैक प्रो से 3 गुना फास्ट है। नया मैक प्रो 64जीबी और 128जीबी यूनिफाइड मेमोरी ऑप्शन के साथ आता है। इसमें स्टोरेज भी मिलता है। इस डेस्कटॉप का फ्रेम स्टेनलेस स्टील से बनाया गया है। कनेक्टिविटी के लिए इसमें ब्लूटूथ 5.3 दिया गया है। भारत में इसकी शुरुआती कीमत 7.29 लाख रुपए है। वहीं, मैक स्टूडियो डेस्कटॉप को दो वैरिएंट में लॉन्च किया गया है। भारत में इसके बेस वैरिएंट को 2.09 लाख रुपए और टॉप वैरिएंट को 4.19 लाख रुपए में खरीदा जा सकेगा। इसमें 12 और 24 कोर और 32 कोर न्यूलर इंजन मिलता है।

आईओएस 17 में कई नए फीचर्स मिलेंगे - एपल ने आईओएस 17 के फीचर्स को अनवील कर दिया है। आईओएस 17 में लाइव वॉयस मेल ट्रांसक्रिप्शन, फेसटाइम मैसेज रिकॉर्ड करने की एबिलिटी, पर्सनलाइज्ड कॉन्टैक्ट पोस्टर जैसे फीचर्स मिलेंगे। यूजर्स फेसटाइम ऐप के जरिए रिकॉर्डेड वीडियो मैसेज भेज सकेंगे। इसके साथ ही अब हे सिरी नहीं बल्कि केवल सिरी बोलकर वॉइस कमांड फीचर को यूज किया जा सकेगा।

एयरडॉप को भी किया अपडेट - एपल ने एयरडॉप को भी अपडेट कर दिया है। इसमें एक नया फीचर मिलेगा, जिससे किसी डिवाइस को पास लाकर आसानी से फाइल ट्रांसफर किया जा सकेगा।

सफारी दुनिया का सबसे फास्ट ब्राउजर - 23 इवेंट में एपल ने सफारी ब्राउजर को दुनिया का सबसे फास्ट ब्राउजर बताया है। कंपनी ने कई नए अपडेट्स दिए हैं, जिसमें प्रोफाइल ऐड करने का फीचर शामिल है। इस फीचर में हर प्रोफाइल के लिए अलग कुकीज, टैब ग्रुप, फेवरेट, सर्च हिस्ट्री होगी।

आईफोन यूजर्स को मिलेगा जर्नल ऐप - आईफोन यूजर्स को साल के अंत तक नया जर्नल ऐप मिलेगा। इसमें यूजर्स डेली रूटीन, म्यूजिक, फोटो, लोकेशन और एक्टिविटी के बारे में लिख पाएंगे।

दुनियाभर के स्टूडेंट्स से मिले टिम कुक - इवेंट से पहले एपल के सीईओ टिम कुक ने दुनियाभर के स्टूडेंट्स से मुलाकात की। उन्होंने अपने ट्वीट में लिखा- जैसा कि हम शुरू करने के लिए तैयार हैं, मैं दुनियाभर के छात्रों से मिला, जो ऐसे ऐप बना रहे हैं जो म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट में बदल देते हैं और हैप्टिक फीडबैक (छूकर महसूस करना) के माध्यम से ब्रेल पढ़ने के अनुभव को में लाते हैं। वर्ल्ड वाइड डेवलपर्स कॉन्फ्रेंस एक एनुअल इवेंट है जिसे कंपनी अपने कैलिफोर्निया के क्यूपर्टिनो हेडक्वार्टर में होस्ट करती है।

अब एटीएम से यूपीआई का इस्तेमाल कर निकाल पाएंगे कैश

एक दिन में 2 ही बार कर सकेंगे ट्रांजैक्शन, अधिकतम 10,000 विड्रॉल होंगे

नई दिल्ली।

बैंक ऑफ बड़ौदा ने इंटरऑपरेबल कार्डलेस कैश विदड्रॉल नाम की एक नई सर्विस शुरू करने की अनाउंसमेंट की है। इस नई सर्विस के जरिए बैंक के कस्टमर्स यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस का यूज कर कैश निकाल सकते हैं।

एक दिन में अधिकतम 10,000 निकाल सकेंगे

बैंक ऑफ बड़ौदा यूपीआई से कैश निकालने की सर्विस देने वाला पब्लिक सेक्टर का पहला बैंक बन गया है। इस सर्विस का इस्तेमाल कर कस्टमर एक दिन में सिर्फ 2 बार ही अपने अकाउंट से ट्रांजैक्शन कर सकता है। बैंक ने इस सर्विस के तहत एक ट्रांजैक्शन की लिमिट 5,000 रुपए रखी है। यानी कस्मटर एक दिन में इस सर्विस से 2 बार ट्रांजैक्शन कर अधिकतम 10,000 रुपए ही निकाल सकता है।

यह फैसिलिटी सिर्फ बैंक ऑफ बड़ौदा के कस्मर्स तक ही सीमित नहीं है। दूसरे बैंकों के कस्टमर्स जो अपने मोबाइल फोन पर बॉब वर्ल्ड यूपीआई फैसिलिटी के लिए सक्षम किसी भी अन्य यूपीआई ऐप का यूज करते हैं, तो वे भी अपने डेबिट कार्ड का इस्तेमाल किए बिना बैंक ऑफ बड़ौदा के एटीएम से कैश निकाल सकते हैं।

बैंक ऑफ बड़ौदा के भारत में 11,000 से ज्यादा एटीएम

बैंक ऑफ बड़ौदा के चीफ डिजिटल ऑफिसर अखिल हांडा ने कहा कि बैंक द्वारा पेश की जा रही नई सुविधा कस्टमर्स को फिजिकल कार्ड के यूज के बिना पैसे निकालने की स्वतंत्रता देती है। यह कैश निकालने का एक सरल, सुविधाजनक और सुरक्षित तरीका है। बैंक ऑफ बड़ौदा के पूरे भारत में 11,000 से ज्यादा एटीएम हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों से क्लोनिंग, स्किमिंग और डिवाइस से छेड़छाड़ जैसी कार्ड धोखाधड़ी को रोकने के लिए एटीएम के जरिएऑप्शन अवेलेबल कराने को कहा है।

बायजू ने उधारदाताओं से विवाद के बाद 1.2 अरब डॉलर के ऋण का भुगतान रोका, बनी संघर्ष की स्थिति

नई दिल्ली।

शिक्षा स्टार्टअप बायजू ने उधारदाताओं के साथ विवाद के बाद 1.2 बिलियन डॉलर के ऋण पर आगे भुगतान नहीं करने का फैसला किया है। इससे एक संघर्ष की स्थिति बन गई है और यह संघर्ष भारत के सबसे अधिक उड़ान भरने वाले स्टार्टअप में से एक के भविष्य को खतरे में डाल सकता है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों के अनुसार, बायजू ने ब्याज के रूप में 40 मिलियन डॉलर का भुगतान नहीं किया। कंपनी ने 6 जून को एक बयान में कहा कि उसने न्यूयॉर्क सुप्रीम कोर्ट में ऋण के संबंध में शिकायत दर्ज की है। कंपनी ने 1.2 अरब डॉलर के टर्म लोन बी का जिक्र करते हुए कहा, यह देखते हुए कि डेलावेयर और न्यूयॉर्क दोनों में कानूनी कार्यवाही चल रही है, यह स्पष्ट है कि पूरा टीएलबी विवादित है। जब तक विवाद का फैसला अदालत में नहीं हो जाता वह टीएलबी ऋणदाताओं को पुर्नभुगतान नहीं करेगा साथ ही किसी भी तरह के ब्याज का भी भुगतान नहीं किया जाएगा। महामारी के दौर में ऑनलाइन ट्यूटरिंग बूम के कम होने और उसकी वित्तीय स्थिति में गिरावट आने के बाद बायजू कर्जदाताओं के साथ कर्ज के पुनर्गठन के लिए लेनदारों के साथ एक सौदा करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन त्वरित पुनर्भुगतान की मांग करने वाले लेनदारों ने लंबे समय से चल रही बातचीत को रद्द कर दिया। सूत्रों ने निजी मामला होने के कारण नाम न बताने की शर्त पर बताया है कि 5 जून को न्यूयॉर्क में शाम 6 बजे तक भुगतान नहीं किया गया था। सूत्रों ने कहा कि कुछ ऋणदाता संभावित भुगतान चूक को दूर करने के विकल्पों पर विचार कर रहे हैं।पूर्व शिक्षक बायजू रवींद्रन के नेतृत्व वाली कंपनी वित्तीय खातों की फाइलिंग की समय सीमा से चूक गई थी। इसके कार्यालयों की विदेशी मुद्रा नीतियों के उल्लंघन की जांच करने वाली भारतीय एजेंसी ने जांच की थी।

सरकारी-बैंकों का मुनाफा पहली बार 1 लाख करोड़ रुपए पार: महंगे लोन से आय बढ़ने और फिनटेक के चलते खर्च घटने से बढ़ा प्रॉफिट

नई दिल्ली।

मार्च में खत्म वित्त वर्ष में सरकारी बैंकों का कुल मुनाफा पहली बार 1 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा 1,04,649 करोड़ हो गया। 2017-18 में इन बैंकों को 85 हजार करोड़ का घाटा हुआ था। रेटिंग एजेंसी क्रिसिल के सीनियर डायरेक्टर अरुण कुमार अय्यर ने कहा, 'बैंकों ने फिनटेक कंपनियों को बिजनेस पार्टनर बनाया। इससे डिपॉजिट, निकासी और फंड ट्रांसफर जैसे काम बैंक से बाहर होने लगे। यदि ये सारे ट्रांजेक्शन बैंक ब्रांच या एटीएम के जरिये होते तो बैंकों का खर्च बढ़ता।' इंडियन ओवरसीज बैंक के पूर्व सीएमडी एम नरेंद्र ने बताया कि फिनटेक ने बैंकों के छोटे लोन पर खर्च बचा दिए। ये नए खाते खोलने में भी मददगार साबित हुए।

लोन पर डिफॉल्ट कम हुए

यूको बैंक के रिटायर्ड ईडी अजय व्यास कहते हैं, 'फिनटेक के बेहतर रिस्क एनालिसिस से लोन डिफॉल्ट और खर्च घटे हैं। मसलन, 2017-18 में सबसे बड़े बैंक एसबीआई की आय के मुकाबले खर्च का अनुपात 50.18प्रतिशत था। अभी ये घटकर 35.58प्रतिशत पर आ गया है।

यूपीआई ट्रांजेक्शंस से बचत

2022-23 में 83.71 अरब लेनदेन यूपीआई के जरिये हुए। तीन साल में ये 4 गुना बढ़े हैं। ब्रांच में हर लेनदेन पर 24 रुपए, एटीएम ट्रांजेक्शन पर 15-18 रुपए और पीओएस पर हर कार्ड स्वैप का खर्च 3-5 रुपए बैठता है। फिनटेक के जरिये ट्रांजेक्शन से ये खर्च बच रहे हैं।

फिनटेक ने बढ़ाया कवरेज

पेनियरबॉय फिनटेक के सीईओ आनंद बजाज कहते हैं कि 7.25 लाख गांवों के लिए सिर्फ 25 हजार बैंक ब्रांच हैं। फिनटेक ने गांवों को फाइनेंशियल सर्विसेज से जोड़ा। ऐसे प्लेटफॉर्म से लेनदेन का 50प्रतिशत बैंकों को जाता है। ये न लोन देते और न ही डिपॉजिट लेते हैं।

चीन सहित दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में इस दशक में सबसे तेज बढ़ेगा भारत, एशिया को होगा लाभ

नई दिल्ली।

तुलनात्मक लाभ और कई सहायक कारकों के कारण इस दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था चीन सहित पूरे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में सबसे तेजी से बढ़ेगी। ब्रोकरेज हाउस नोमुरा को उम्मीद है कि भारत वित्त वर्ष 2023 से 2030 के बीच लगभग 6.6 प्रतिशत की दर से विकास करेगा। यह वित्त वर्ष 2010 के बाद सबसे तेज वृद्धि होगी।

कोविड की शुरुआत के बाद से दुनिया की अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में पहले से ही तेज गति से बढ़ने के बाद भारत का समय अब चीन को पीछे छोड़ने का है। समय के साथ जापान, दक्षिण कोरिया, हांगकांग और सिंगापुर को चीन ने पीछे छोड़ा था। उसी तर्ज पर अब भारत चीन को पीछे छोड़ने की तैयारी में है। नोमुरा के अर्थशास्त्रियों का कहना है कि चीन ने अपने कम लागत वाले तुलनात्मक लाभ को खो दिया है।

दुनिया भर की कंपनियां चीन पर निर्भरता कम कर दूसरे देशों में जा रही हैं। यह भारत, इंडोनेशिया और फिलीपीन जैसे अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देश हैं जो एशिया के नए उड़ान के रूप में उभर रहे हैं। आसियान में परिचालन का विस्तार करने की इच्छुक कंपनियां लगातार दूसरे वर्ष बढ़ी हैं। इसमें

से आधे से अधिक कंपनियां एक से दो वर्षों के भीतर भारत और वियतनाम में परिचालन बढ़ाने वाली हैं।

एशिया को होगा सर्वाधिक लाभ

नोमुरा ने रिपोर्ट में कहा, 3-5 साल में इस प्रक्रिया में तेजी आनी चाहिए। भारत और आसियान के नेतृत्व में एशिया को सबसे अधिक लाभ की संभावना है।

हाल के वर्षों में भारत के संरचनात्मक सुधार और भारी-भरकम खर्च एवं निवेश से सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि मध्यम अवधि में लगभग 6.6 प्रतिशत रहेगी। इससे कमजोर रुपये को भी मजबूत होने में मदद मिलेगी।

लेकिन ये है भारत के लिए चिंता का विषय

रिपोर्ट में कहा गया है, समय पर परियोजनाओं को पूरा करना चिंता का विषय बना हुआ है। इससे लागत में वृद्धि हो रही है। देरी के प्रमुख कारणों में भूमि अधिग्रहण, वन और पर्यावरण मंजूरी मिलने और बुनियादी ढांचे के समर्थन है। अन्य कारणों में परियोजना वित्तपोषण के लिए गठजोड़ में देरी, कार्यक्षेत्र में बदलाव, निविदा और उपकरण आपूर्ति के साथ कानून व्यवस्था भी है। अप्रैल 2023 तक 1,605 परियोजनाओं में से 800 में देरी हुई।

ये हैं भारत की तेजी के कारण

नोमुरा का कहना है कि स्थिर राजनीतिक व्यवस्था, सुधारों पर ध्यान केंद्रित करने, कर प्रशासन का सरलीकरण, पीएलआई योजनाओं जैसे विभिन्न कारकों से भारत अगले दशक में तेजी से बढ़ेगा। बैंकों ने अपने खाता बही से भी बुरे फंसे कर्जों को हटा दिया है, जिससे ये अब तेजी से कर्ज दे रहे हैं।

आयकर विभाग के अतिरिक्त आयुक्त को ईडी ने किया गिरफ्तार, अहमदाबाद में पीएमएलए के तहत कार्रवाई

नई दिल्ली । प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), अहमदाबाद ने धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत आयकर के अतिरिक्त आयुक्त संतोष करनानी को गिरफ्तार किया है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार संतोष करनानी को 30 लाख रुपये का अनुचित लाभ मांगने और स्वीकार करने के मामले में पीएमएलए, 2002 के प्रावधानों के तहत की जा रही जांच को आगे बढ़ाने के लिए इस साल दो जून को गिरफ्तार किया गया। ईडी ने सीबीआई, गांधीनगर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की ओर से दर्ज प्राथिमिकी के आधार पर संतोष करनानी के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1988 के तहत जांच शुरू की थी।

जिओ सिनेमा ने किए अरशद व वरुण स्टारर असुर सीजन-2 के सभी एपिसोड रिलीज

देश भर के मनोरम थ्रिलर सीरीज के प्रशंसकों ने की थी रिलीज करने की मांग

मुंबई (ईएमएस)। जिओ सिनेमा ने अरशद वारसी एवं वरुण सोबती स्टारर मनोवैज्ञानिक मिस्ट्री थ्रिलर असुर सीजन-2 को एक जून को रिलीज किया तो सनसनी फैल गई। दर्शकों को इसकी मनोरंजक कहानी से रूबरू कराया। पहले तीन एपिसोड्स की सफलता के बाद देश भर के मनोरम थ्रिलर सीरीज के प्रशंसकों ने मंच से शेष एपिसोड्स को एक बार में रिलीज करने की अपील की। सोशल मीडिया पर ये सिलसिला बीते 3 दिनों से लगातार ट्रेंड कर रहा था। ऐसा उत्साह रहा है कि जियो सिनेमा ने अब अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करते हुए दर्शकों की मांग को देखते हुए इसके शेष 5 एपिसोड को भी जारी कर दिया है। असुर सीजन-2 पहले एक एपिसोड एक दिन के लिए निर्धारित किया गया था, जियो सिनेमा पर मुफ्त उपलब्ध है। अरशद वारसी, बरुण सोबती, रिधि डोगरा, अनुप्रिया गोयनका, अमेय वाघ, मियांग चांग, अभिषेक चौहान, और गौरव अरोड़ा अभिनीत मनोरम और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित वेब श्रृंखला, असुर की बहुप्रतीक्षित अगली कड़ी ने प्रशंसकों और व्यापक लोगों के बीच अपार उत्साह पैदा किया है। हालांकि कहा यह भी जा रहा है कि जियो सिनेमा को असुर सीजन-2 के सभी एपिसोड एक साथ इसलिए जारी करने पड़े क्योंकि असुर-2 ऑनलाइन साइट्स पर लीक हो गई थी। दर्शक इसके एक साथ डाउनलोड करके इसे देख रहे थे, जिसके चलते जियो सिनेमा को नुकसान हो रहा था।

शाहरुख खान की बेटी ने एक्टिंग की तो बड़े बेटे ने चुनी डायरेक्शन की राह

आर्यन खान ने शुरू की स्टारडम की शूटिंग, शाहरुख खान ने बढ़ाया बेटे का हौसला

मुंबई (ईएमएस)। बॉलीवुड में शाहरुख खान का हमेशा से परचम लहराता आया है, लेकिन अब उनके बच्चे भी अपने-अपने करियर पर ध्यान दे रहे हैं। एक तरफ एक्टर की बेटी अपने पापा के नक्शे कदमों पर चलते हुए एक्टिंग में करियर बनाना चाहती है तो, वहीं दूसरी ओर शाहरुख खान के बड़े बेटे ने डायरेक्शन की राह चुनी है। हाल ही में आर्यन खान ने अपने क्लोदिंग ब्रांड द यओल को शूट किया था, जिसे उन्होने खुद ही डायरेक्ट किया था। उन्होने अपने ब्रांड के लिए अपने पापा को ही चुना था। आर्यन खान डायरेक्टर और लेखक बनकर अपने करियर की गाड़ी को आगे बढ़ना चाहते हैं। काफी पहले से उन्हें लेकर चर्चा थी कि वह स्टारडम नाम की वेब सीरीज पर कम कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार स्क्रिप्ट पर काम पूरा हो चुका है और शो की शूटिंग भी शुरू हो चुकी है। स्टारडम कई मायनों में आर्यन खान के लिए खास हो सकता है। इस शो के जरिए वह अपने सपनों को उड़ान देने के लिए पहला कदम बढ़ा चुके हैं। इस मौके पर डैडी शाह रुख खान उनका हौसला बढ़ाने के लिए सेट पर मौजूद थे। एक पोर्टल के अनुसार, शाह रुख सेट पर आर्यन खान को सरप्राइज देने पहुंचे, जहां वह पहले से ही बतौर डायरेक्टर काम कर रहे थे। स्टारडम की शूटिंग मुंबई में बीते शुक्रवार से शुरू हो गई है। रिपोर्ट्स के अनुसार आर्यन के इस स्पेशल डे पर शाहरुख सुबह-सुबह उन्हें सरप्राइज देने के लिए सेट पर पहुंच गए। बताया जा रहा है कि सुबह सात ही बस सेट पर आ गए थे, और उन्होंने टीम से मुलाकात की। आर्यन खान की यह वेब सीरीज एक्टर्स और उनके स्टारडम को दिखाएगी। यह छह एपिसोड की सीरीज होगी, जिसके प्रोडक्शन की कमान शाहरुख खान के प्रोडक्शन हाउस रेड चिलीज एंटरटेनमेंट ने संभाला है।

परवीन बाबी की बायोपिक में नजर आएंगी उर्वशी रौतेला

पोस्ट शेयर कर लिखा- नया सफर जादुई है

मुंबई (ईएमएस)। बॉलीवुड इंडस्ट्री में पिछले कुछ सालों से बायोपिक्स का दौर चल रहा है। हर कोई एक्टर किसी-न-किसी की कहानी पर्दे पर दिखाता नजर आ रहा है। अब इस लिस्ट में उर्वशी रौतेला का नाम भी शामिल हो चुका है। अदाकारा भी अब पर्दे पर इंडस्ट्री की दिग्गज एक्ट्रेस परवीन बाबी की बायोपिक लेकर आ रही है। इसकी चर्चा पिछले काफी समय से थी। ऐसे में अब एक्ट्रेस ने एक पोस्ट भी शेयर किया है, जिसमें उन्होंने प्राउड फील करने की बात कही है। उर्वशी रौतेला ने इंस्टाग्राम पर तस्वीर साझा की है, जिसमें लिखा है फिल्म बाय वसीम एस खान। आगे बोल्ड लेटर्स में परवीन बाबी का नाम लिखा है और साथ ही दो पैराग्राफ हैं, जिसमें लिखा है कि ये फिल्म एक्ट्रेस के फिल्मी करियर के साथ-साथ उनकी पर्सनल लाइफ के बारे में बताएगी। उसके सुनहरे पलों को पर्दे पर पेश करेगी। एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा है कि बॉलीवुड असफल रहा, लेकिन मैं आपको गर्व महसूस करवाऊंगी परवीन बाबी। ऊं नमः शिवाय। वाकई ये नया सफर जादुई है। परवीन बाबी की बायोपिक में उर्वशी रौतेला को देखने का फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। परवीन ने अपने करियर की शुरूआत साल 1972 में मॉडलिंग से की थी और साल 1973 में उन्होंने फिल्म चरित्र से अपने फिल्मी करियर शुरू किया था। पर्दे पर उन्होंने एक से बढ़कर एक फिल्मों में काम किया। प्रोफेशनल लाइफ के साथ-साथ परवीन अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी सुर्खियों में रही थी। एक्ट्रेस का नाम कई स्टार्स के साथ जुड़ा था। 22 जनवरी 2005 को उन्होंने दुनिया से अलविदा कह दिया था। एक्ट्रेस अपने फ्लैट में मृत पाई गई थीं ।

जस्टिन संग स्पाट हुई हैली बीबर

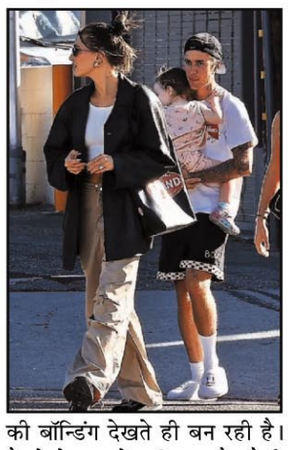

हॉलीवुड इंडस्ट्री के पॉवर कपल्स में से सिंगर जस्टिन बीबर एवं उनकी पत्नी हैली बीबर एक हैं। दोनों को अक्सर क्वालिटी टाइम स्पैंड करते एक साथ स्पॉट किया जाता है। बीते शुक्रवार कपल को हाथों में हाथ डाले लॉस एंजिल्स में थिएटर के बाहर देखा गया, जहां से दोनों की तस्वीरें इंटरनेट पर खूब वायरल हो रही हैं। लुक की बात करें तो इस दौरान 26 वर्षीय हैली ग्रे क्रॉप टॉप के साथ ब्लू पैंट में नजर आ रही हैं, जिसके ऊपर उन्होंने ब्लैक कलर का लॉन्ग लैदर कोट पेयर किया है। चेहरे पर चश्मा और खुले बालों से एक्ट्रेस ने अपने लुक को कंप्लीट किया है। वहीं उनके पति ग्रे हुडी के साथ खाक लूज पैंट में काफी स्टाइलिश लग रहे हैं। हाथों में हाथ डाल एक साथ चलते कपल की बॉन्डिंग देखते ही बन रही है। कैमरे के सामने जस्टिन और हैली जबरदस्त पोज दे रहे हैं। कपल की इन तस्वीरों को फैंस खूब पसंद कर रहे हैं।

फिल्म जरा हटके जरा बचके की हो रही जमकर कमाई, फास्ट एक्स भी पीछे नहीं

नई दिल्ली (ईएमएस)। बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों सारा अली खान और विक्की कौशल की जरा हटके जरा बचके जहां जमकर कमाई कर रही है, वहीं फास्ट एक्स ने भी करोड़ों का टारगेट हासिल किया है। गौरतलब है कि हाल ही में हॉलीवुड और बॉलीवुड दोनों मीडियम की फिल्में रिलीज हुईं। इनमें सारा अली खान और विक्की कौशल की जरा हटके जरा बचके से लेकर विन डीजल की फास्ट एंड फ्यूरियस 10 तक शामिल है। जानकारी के अनुसार 2 जून को विक्की कौशल और सारा अली खान की फिल्म जरा हटके जरा बचके रिलीज हुई है। फिल्म ने पहले दिन से लेकर अभी तक टिकट विंडो पर उम्मीद से बेहतर परफॉर्मेंस दिया है। करीब 40 करोड़ के बजट पर बनी इस फिल्म ने दो दिनों में 12 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया। तीसरे दिन भी मूवी ने अच्छा कलेक्शन किया है। गौरतलब है कि फिल्म जरा हटके जरा बचके ने पहले दिन 5.49 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया। दूसरे दिन कमाई में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखने को मिली, जिस की फिल्म की कमाई 7.20 करोड रुपए हो गई। वहीं, रिपोर्ट्स के अनुसार फिल्म ने तीसरे दिन 9.90 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया है। फिल्म का टोटल कलेक्शन 22.59 करोड़ हो गया है। गौरतलब है कि स्पाइडर-मैन सीरीज की अब तक जितने भी फिल्में रिलीज हुई हैं, उन सब ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कलेक्शन ही किया है। यही हाल एनिमेटेड फिल्म स्पाइडर-मैनः एक्रॉस द स्पाइडर वर्स का भी है।

पहले दिन फिल्म ने भारत में 4.2 करोड़ का कलेक्शन किया। दूसरे दिन फिल्म का कलेक्शन 3.85 करोड़ हो गया। तीसरे दिन मूवी ने 6.2 करोड़, और फिर चौथे दिन 6.75 करोड़ का कलेक्शन किया। मूवी का कुल कारोबार 21 करोड़ पर आ थमा है। इधर मल्टी स्टार पॉपुलर फिल्म फास्ट एंड फ्यूरियस फ्रेंचाइजी की फिल्म फास्ट एक्स घरेलू बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ बिजनेस कर रही है। फिल्म ने 17वें दिन कुल 103.89 करोड़ कमाए। जबकि 18वें दिन फिल्म का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 2 करोड़ के आसपास आकर रुका है। इसके अनुसार मूवी ने 105.89 करोड़ कमाए हैं। वहीं, फिल्म का वर्ल्डवाइड कलेक्शन 4,550 करोड़ के पार हो गया है। फिल्म जोगीरा सारा रा रा को लेकर जितने चर्चे थे, उतना टिकट विंडो पर इसका प्रदर्शन देखने को नहीं मिल रहा है। नवाजुद्दीन सिद्दीकी और नेहा शर्मा स्टारर यह फिल्म दर्शकों को लुभाने में नाकामयाब साबित हो रही है।

फिल्म अजमेर-92 से जमीयत को ऐतराज, प्रदर्शन पर बैन की मांग

मुंबई (ईएमएस)। बॉलीवुड फिल्म फिल्म अजमेर-92 को लेकर विवाद शुरू होता नजर आ रहा है। जमियत उलेमा-ए-हिंद चाहता है कि इस फिल्म पर प्रतिबंध लगाया जाए। जानकारी के अनुसार रविवार को अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी ने आरोप लगाए हैं कि यह फिल्म समाज को बांट देगी और दरार पैदा कर देगी। फिल्म साल 1992 में राजस्थान के अजमेर में हुए कई गैंगरेप और सैकड़ों स्कूली बच्चियों के ब्लैकमेलिंग की घटनाओं पर आधारित है। खास बात है कि हाल में द केरल स्टोरी भी विवादों में आ गई थी। साल 1992 में मीडिया में एक खबर आई थी जिनमें कहा गया कि एक गैंग ने कॉलेज और स्कूल की कई लड़कियों के साथ कथित तौर पर यौन उत्पीड़न किया। इस मामले में खादिम परिवार के सदस्य फारूख और नफीस चिश्ती का नाम प्रमुख रूप से सामने आया। कहा जाता है कि पीड़िताओं को बहाने से एक फार्महाउस में बुलाया जाता था, जहां एक-एक कर कई पुरुष उनका यौन उत्पीड़न करते थे। एक मीडिया रिपोर्ट में पुलिस के हवाले से बताया गया कि गैंग पीड़िताओं के अश्लील फोटों खींच लेता था और फिर उनपर अपनी सहेलियों को भी लाने का दबाव बनाता था। साथ ही इन आपत्तिजनक तस्वीरों की मदद से आरोपी बार-बार उन लड़कियों को हवस का शिकार बनाते थे। राजस्थान के रिटायर्ड डीजीपी ओमेंद्र भारद्वाज उस दौरान पुलिस उपमहानिदेशक थे। वह बताते हैं, आरोपी सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभावी वर्ग के थे और इसकी वजह से लड़कियों का सामने आना और मुश्किल हो गया। जैसे ही ये खबरें सामने आईं, तो अजमेर में बवाल शुरू हो गया और प्रदर्शनों के चलते शहर पर कुछ दिनों के लिए ताला लग गया।

खास बात है कि इस घटना में अधिकांश आरोपी मुस्लिम और अधिकांश पीड़ित हिंदू थे। संभवतः यह फिल्म 14 जुलाई को रिलीज हो सकती है। फिल्म में करण वर्मा, सुमित सिंह, सायाजी शिंदे, मनोज जोशी, शालिनी कपूर सागर, बृजेंद्र काला, आकाश दहिया, राजेश शर्मा, ईशान मिश्रा समेत कई एक्टर शामिल हैं। डायरेक्शन पुष्पेंद्र सिंह ने किया है। साल 2001 में राजस्थान हाईकोर्ट ने चार दोषियों को बरी कर दिया। जबकि, कुछ पर दोष बरकरार रखा, लेकिन आंशिक रूप से कुछ आरोप कम कर दिए गए थे। 2003 में सुप्रीम कोर्ट ने उम्रकैद की सजा को घटाकर 10 साल कर दिया था। 2012 में फरार चल रहे सलीम चिश्ती को राजस्थान पुलिस ने गिरफ्तार किया। 2018 में सुहैल गनी चिश्ती ने पुलिस में सरेंडर कर दिया था। मौलाना महमूद मदनी का कहना है कि ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल हैं। उन्होंने कहा, उन्हें देश में शांति और सद्भावना के दूत के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि आज के समय में धार्मिक आधार पर समाज को बांटने के नए-नए तरीके खोजे जा रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाए हैं, आपराधिक गतिविधियों को एक खास मजहब के साथ जोड़ने के लिए फिल्मों और सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया जा रहा है, जो निश्चित हमारी साझा विरासत को नुकसान पहुंचाएगा।

अपकमिंग रोमांचक मूवी आई लव यू का फर्स्ट लुक हुआ सोशल मीडिया पर साझा

आने वाली फिलम आई लव यू का फर्स्ट लुक सोशल मीडिया पर साझा किया गया है। फिल्म में रकुल प्रीत सिंह और पावेल गुलाटी मुख्य भूमिका में होंगे। फिल्म जल्द ही जियो सिनेमा पर आएगी और प्यार में पड़ने के अंधेरे पक्ष पर केंद्रित है। साझा किए गए छोटे टीजर में पावेल एक जुनूनी प्रेमी की भूमिका निभा रहे हैं, जो रकुल के चरित्र के प्यार में पीछा करने सहित चरम सीमा तक जाता है। टीजर दर्शकों को भावनाओं के उतार-चढ़ाव, अनपेक्षित ट्विस्ट और रोमांचक ड्रामा पर ले जाता है। मूवी आई लव यू एक मनोरंजक कहानी है। यह फिल्म जियो स्टूडियो द्वारा प्रस्तुत की गई है, जो ज्योति देशपांडे, सुनीर खेतरपाल, गौरव बोस द्वारा निर्मित और निखिल महाजन द्वारा निर्देशित एक एथेना प्रोडक्शन है।

फिल्म "जरा हटके जरा बचके" की कमाई में हुआ जबर्दस्त इजाफा

विक्की कौशल और सारा अली खान की "जरा हटके जरा बचके" बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। फिल्म शुक्रवार 2 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। फिल्म ने पहले दिन 5 करोड़ रुपये कमाए, क्योंकि इसे दर्शकों का अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। फिल्म की वीकेंड कमाई में इजाफा हुआ है। "जरा हटके जरा बचके" में विक्की कौशल और सारा अली खान पहली बार बड़े पर्दे पर नजर आए हैं । दोनों के बीच की केमिस्ट्री को दर्शकों ने खूब पसंद किया है, ऐसे में फिल्म देखने के लिए दर्शकों का तांता लगा हुआ है। "जरा हटके जरा बचके" ने पहले दिन 5.49 करोड़ रुपये की कमाई की। वीकेंड में कमाई में इजाफा देखने को मिला है। शनिवार को फिल्म ने 7.25 करोड़ रुपये बटोरे। अब रविवार के आंकड़े भी सामने आए हैं। "सैकनिल्क" की शुरूआती ट्रेड रिपोर्ट के मुताबिक, "जरा हटके जरा बचके" ने रिलीज के तीसरे दिन यानी रविवार को 9 करोड़ रुपये की कमाई की है। फिल्म की ओपनिंग वीकेंड की कमाई अब 21.69 करोड़ रुपये हो गई है। महज 40 करोड़ रुपये के बजट में बनी यह फिल्म तीन दिनों में 21 करोड़ रुपये की कमाई करने में सफल रही है। ऐसे में अंदाजा लगाया जा रहा है कि फिल्म इस हफ्ते बॉक्स ऑफिस पर औसत कमाई कर सकती है।

हिट मशीन खेसारीलाल यादव का गाना 'हमार जिला' रिलीज

हिट मशीन व भोजपुरी अभिनेता खेसारीलाल यादव का नया धमाकेदार गाना हमार जिला रिलीज होने के साथ ही सोशलमीडिया पर वायरल हो गया। यह गाना सोमवार को ही आदिशक्ति फिल्म्स के यूट्यूब चैनल से रिलीज हुआ है, जिसे लाखों लोगों ने अब तक देख चुके हैं। इस गाना के रिलीज होने के अवसर पर पटना में खेसारीलाल यादव ने कहा कि मैं अपने काम को सर्वोपरि मानता हूँ, जो भोजपुरी समाज के दर्शकों के लिए मनोरंजन का काम करती है। मैं दिन रात एक कर अपने फिल्म और गानों की मेकिंग में खुद को झोंक देता हूं। यही वजह है कि आज मैं एक बार फिर से आपने श्रोताओं के सामने एक नए धमाकेदार गाने के साथ खड़ा हूँ। खेसारी लाल यादव ने कहा कि मेरा गाना हमार जिला आज आदिशक्ति फिल्म्स से रिलीज हुआ है। मैंने इस चैनल के लिए ढेर सारे गाने गाये हैं, जहां दर्शकों ने मेरे गाने को तो खूब पसंद किया ही। साथ ही इस चैनल को भी नई ऊंचाईओं पर लेकर गए। उन्होंने इस चैनल के ऑनर के समक्ष कहा कि इस चैनल से उनका गहरा नाता है। तभी इस चैनल के लिए जब भी कोई काम करता हूँ, तो लगता है कि यह अपने लोगों के लिए किया। खेसारी ने गाने के बारे में कहा कि यह एक बेहतरीन गाना है। सब लोग इस गाने को सुने और प्यार दें। आगे भी ऐसे एक से बढ़कर एक गाने लेकर आऊँगा। एक गाना और मेरा आने वाला है, जिसे हमने रात में रिकार्ड किया है और रात में ही शूट किया है। वो गाना भी जल्द ही रिलीज होगा। मैं यहां बस यह कहना चाह रहा हूँ कि सफलता को कोई शॉर्ट कट नहीं होता है। मैं मेहनत करता हूँ तो चीजें अच्छी बनती है। इसलिए सभी से से कहूंगा कि आप भी मेहनत से अपने लक्ष्य की प्राप्ति करें।

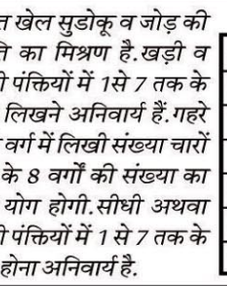

सूडोकु नव्वताल- 6454

सरल

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नव्वताल -6453 का हल

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2

शब्दजाल - 7201

गं	रा	जें	द्र	कु	मा	य	वा	ज	पे	यी	
द	गा	ल	प्रे	व	जी	म	द	ह	कां	रा	
स	स	प	का	को	ह	रा	झे	ल	म	प	
मि	त	स	व	वे	वा	ज	ध	रा	श	दु	
श	आ	ल	ग	म	री	ना	तू	वी	झ	प	
न	ल	ला	ज	दि	म	गो	ती	ना	घ	य	
क	व	चि	ना	ब	प	दा	ज	ती	व	मु	
श	एं	वा	ई	द	ब	व	डू	ए	श	ना	
मी	ड	ल	फू	ल	औ	री	आ	ग	शी	आ	
र	गॉ	ल	प	लि	जी	शी	व्या	स	री	द	
वि	ज	अ	ब्र	म्ह	पु	त्र	त	ब	प	म	

शब्दजाल में दस नदियों के नाम ढूंढिए. दिए गए नाम उपर से नीचे व तिरछे भी हो सकते हैं.

गंगा,यमुना,सतलज,रावी,झेलम,चिनाब, ब्रम्हपुत्र,कावेरी,गोदावरी,व्यास,

शब्दजाल - 7200 का हल

ग	क	ल	ड	व	ल	र्प	धी	ऊं	ल	ज	
र	धा	ल	भैं	स	ति	ब्ब	इं	ट	ट	वा	
त	स	या	ल	बि	ल्ली	रा	रा	आ	ख	गा	
ब	ज	ज	सु	पु	र	रा	प	ए	ली	य	
म	क	दो	ग	त्ला	लं	स	तू	उ	झ	म	
स	क	री	प	ख	न	पू	ना	फ	घ	त	
त्ते	अ	स	त	र	प	न	श	ज	ला	ट	
पे	ता	दा	ई	गो	ब	कु	फ	रा	श	न	
बं	बा	चे	न	श	जी	ई	ता	ल	प	रु	
द	पा	ला	ल	न	क	दु	र	शा	स्त्री	ता	
र	रा	जी	घो	ड़	धी	रा	इ	फ	ई	त	

Jagrutidaur.com, Bangalore

अष्टयोग - 6154

7	4	5			6	1
	38		32		27	
	3		5	6		2
3	29	2	45	7	33	
1			7			4
	24	1	36	4	30	
6		4		2		3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 6153 का हल

5	1	3	6	7	2	4
6	34	6	33	1	33	7
7	5	1	3	6	4	2
1	29	2	31	4	31	5
2	4	7	5	3	6	1
3	30	4	37	5	33	6
4	1	5	6	2	7	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

कैस्पर रूड तीसरी बार ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल में, अंतिम-8 में भिड़ेंगे अल्कारेज-सितसिपास

पेरिस।
नॉर्वे के कैस्पर रुड ने चिली के निकोलस जैरी की चुनौती को 7-6, 7-5, 7-5 से तोड़कर फ्रेंच ओपन टेनिस के चौथे दौर में प्रवेश कर लिया। चौथी वरीयता के खिलाड़ी ने 17 में से 14 ब्रेक प्वाइंट बचाए। वह तीसरी बार किसी ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे हैं। इसके अलावा यूनान के स्टेफानोस सितसिपास भी पुरुष वर्ग के अंतिम-8 में पहुंच गए, जहां उनकी टक्कर स्पेन के शीर्ष वरीय 20 साल के कार्लोस अल्कारेज से होगी। रुड ने तीन घंटे 20 मिनट चले मुकाबले में पहला सेट टाईब्रेकर में जीता और 1-4 से पिछड़ने के बाद दूसरा और 2-4 से पिछड़ने के बाद तीसरा सेट जीतकर मैच अपने नाम किया। पिछले साल फाइनल में पहुंचे रुड ने 2020 से टूर पर क्लेकोर्ट पर 85 मैच जीते हैं। चौबीस साल के खिलाड़ी का अंतिम आठ में मुकाबला होल्गर रुने और फ्रांसिसको सेरुनडोलो के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा। रुड को अभी अपने पहले ग्रैंडस्लैम खिताब की तलाश है।

सितसिपास ने सबेस्टियन ओफनर को हराया

इससे पहले दो बार के ग्रैंडस्लैम उप विजेता सितसिपास ने क्वालिफायर सबेस्टियन ओफनर को 7-5, 6-3, 6-0 से हराया। अब उनके सामने अल्कारेज की चुनौती है। अगर अल्कारेज क्वार्टर फाइनल में सितसिपास से जीतने में सफल रहते हैं तो सेमीफाइनल में उनकी भिड़त नोवाक जोकोविच से हो सकती है जिन्होंने रिकॉर्ड 17वीं बार फ्रेंच ओपन क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। जोकोविच ने जुआन पाब्लो वारिलास को 6-3, 6-2, 6-2 से हराया।

माइया 55 साल में अंतिम 8 में पहुंचने वालीं पहली ब्राजीली महिला

14वीं वरीयता की बिटरिज हदाद माइया 55 साल में किसी ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वालीं पहली ब्राजीली महिला हो गई। माइया ने सारा सोरिबेस टोरमो को तीन घंटे 51 मिनट में 6-7, 6-3, 7-5 से हराया। महिला वर्ग में यह इस सत्र का सबसे लंबा मुकाबला रहा। माइया से पहले ब्राजील की ओर से मारिया बूइनो ने 1968 में रोलां गैरो के अलावा विंबलडन के अंतिम आठ में प्रवेश किया था और उसके बाद यूएस ओपन के सेमीफाइनल में पहुंची थीं। ओपन युग (1968) से पहले बूइनो ने सात खिताब जीते थे। फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने से पहले माइया किसी ग्रैंडस्लैम के दूसरे दौर से आगे नहीं बढ़ीं थी।

यूक्रेनी खिलाड़ी ने रूसी प्रतिद्वंद्वी से नहीं मिलाया हाथ

अक्तूबर में बच्चे के जन्म के बाद पहली बार किसी ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट में खेल रही यूक्रेन की एलिना स्वितोलिना ने नौवें नंबर की दारिया को 6-4, 7-6 से हराकर महिला एकल के अंतिम आठ में जगह बनाई। इसके अलावा स्वितोलिना ने मैच के बाद रूस की विरोधी से हाथ नहीं मिलाया और इसकी जगह 'थंब्स अप' किया।

न्यूज ब्रीफ

वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल से पहले कोहली बोले: ऑस्ट्रेलिया अब टीम इंडिया को हल्के में नहीं लेता, टेस्ट टीम के रूप में भारत को रेस्पेक्ट मिला

लंदन। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल से पहले टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने कहा, भारतीय टेस्ट टीम ने ऑस्ट्रेलिया को उसकी ही सरजमीं पर दो बार हराकर सम्मान हासिल कर लिया है, अब टीम इंडिया को एक टेस्ट टीम के रूप में हमें हल्के में नहीं लिया जा सकता। कोहली ने एक स्पोर्ट्स चैनल से कहा, शुरुआत में प्रतिद्वंद्विता काफी कड़ी थी, माहौल भी काफी तनावपूर्ण हुआ करता था। लेकिन जब से हमने ऑस्ट्रेलिया में दो बार जीत हासिल की है, प्रतिद्वंद्विता सम्मान में बदल गई है और अब हमें एक टेस्ट टीम के रूप में हल्के में नहीं लिया जाता है। उन्होंने आगे कहा, हम उस सम्मान को महसूस कर सकते हैं जब हम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलते हैं कि हमें उन्हें उनकी सरजमीं पर लगातार दो बार हराया है और यह बराबरी की लड़ाई होगी।

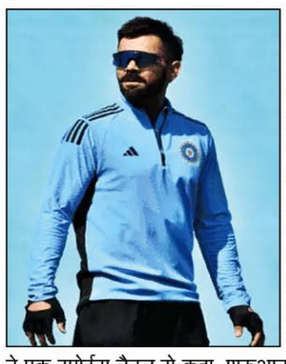

बेंजेमा ने रियल मैड्रिड के लिए खेला विदाई मैच, पेनल्टी पर किया गोल

मैड्रिड। फ्रांस के दिग्गज फुटबॉलर करीम बेंजेमा ने रियल मैड्रिड की ओर से अपने अंतिम मैच में पेनल्टी किक पर गोल किया। एथलेटिक बिलबाओ के साथ यह मुकाबला 1-1 से ड्रॉ रहा। रियल के साथ बेंजेमा ने 14 सीजन में भाग लिया। क्लब ने घोषणा की थी कि अगले सत्र में बेंजेमा उनके क्लब के लिए नहीं खेलेंगे। चर्चा है वह सऊदी अरब में खेल सकते हैं। मैच के बाद साथियों ने उन्हें हवा में उछाल दिया। स्पेनिश लीग के मैच में विनसियस जूनियर ने भी मैदान में वापसी की। दो हफ्ते पहले उन पर वेलेंसिया के खिलाफ मैच में नस्ली टिप्पणी की गई थी। उस मुकाबले के बाद यह उनका पहला मैच था। इस दौरान वह दो मैच में नहीं उतरे। बेंजेमा ने मैड्रिड के साथ 24 ट्राफियां जीती हैं, जिसमें पांच चैंपियंस लीग, चार ला लीगा खिताब और तीन कोपा डेल रे शामिल हैं। उन्हें शानदार फुटबॉल के लिए पिछले साल बैलोन डी ओर दिया गया था। वह रियल मैड्रिड के सर्वकालिक दूसरे शीर्ष स्कोरर हैं। मैड्रिड के लिए बेंजेमा ने 354 गोल दागे। रोनाल्डो के 450 गोल के बाद वह दूसरे नंबर पर हैं। मैड्रिड ने पुष्टि की थी कि ईडन हजार्ड, मार्को असेंसियो और मारियानो डियाज समेत कुछ खिलाड़ी इस समर क्लब को छोड़ रहे हैं। वहीं, कोच एंसेलोटी ने इंग्लैंड और टोटेनहम के स्टार स्ट्राइकर और कप्तान हैरी केन में मैड्रिड की कथित दिलचस्पी के बारे में बात करने से परहेज किया था। एंसेलोटी ने कहा था, मैं टीम के भविष्य के बारे में बात नहीं करने जा रहा हूं। केन एक महान खिलाड़ी हैं। वह फिलहाल टोटेनहम में हैं। हमें उनका और टोटेनहम का सम्मान करना होगा।

धनुष श्रीकांत ने आईएसएसएफ जूनियर वर्ल्ड कप में जीता गोल्ड: टूर्नामेंट में भारत को तीसरा स्वर्ण दिलाया, टीम इंडिया मेडल टैली के टॉप पर

नई दिल्ली। भारतीय निशानेबाज धनुष श्रीकांत ने आईएसएसएफ जूनियर वर्ल्ड कप में गोल्ड मेडल जीता है। उन्हें यह सफलता पुरुषों के 10 मीटर एयर राइफल इवेंट में मिली है। श्रीकांत ने भारत को तीसरा गोल्ड दिलाया है। श्रीकांत के इस गोल्ड के बाद मेडल टैली में भारत के कुल 9 मेडल हो गए हैं। भारतीय टीम के हिस्से में 3 गोल्ड, 4 सिल्वर और 2 ब्रॉन्ज शामिल हैं। भारतीय टीम टेबल में टॉप पर है, जबकि अमेरिका कुल छह पदक के साथ दूसरे नंबर पर है। जर्मनी के सुहल में चल रहे जूनियर शूटिंग वर्ल्ड कप के 10 मीटर एयर राइफल इवेंट में धनुष श्रीकांत ने 249.4 अंक अर्जित किए। जबकि सिल्वर मेडलिस्ट स्वीडन के पोंटस कालिन ने 248.1 और ब्रॉन्ज मेडलिस्ट फ्रांस के रोमैन औफ्रेरे ने 227.1 अंक स्कोर किए। पुरुषों के 10 मीटर एयर राइफल में तीन भारतीय निशानेबाजों ने फाइनल में जगह बनाई। धनुष क्वालिफिकेशन में 628.4 अंक बनाकर छठे स्थान पर रहते हुए फाइनल में पहुंचे। प्रथम भड़ाना ने 628.7 अंक बनाए और वह क्वालिफिकेशन में धनुष से आगे पांचवें स्थान पर रहे। अभिनव साव ने 626.7 अंक बनाए और वो आठवें नंबर पर रहकर फाइनल में पहुंचे। अभिनव फाइनल में सातवें स्थान पर रहकर बाहर हो गए जबकि प्रथम चौथे स्थान पर रहे।

इंडिया-ऑस्ट्रेलिया का वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल आज

4 ऑस्ट्रेलियाई बैटर का स्कोर 1000 प्लस, अश्विन-जडेजा ने सबसे ज्यादा 47 कंगारू बल्लेबाज आउट किए

लंदन।
भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच बुधवार से वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल खेला जाएगा। लंदन के ओवल मैदान पर होने वाले फाइनल को जीतने वाली टीम आईसीसी के सभी टूर्नामेंट की ट्रॉफी जीतने वाली पहली टीम भी बन जाएगी। वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप 2019 से शुरू हुई। पहला फाइनल 2021 में भारत और न्यूजीलैंड के बीच इंग्लैंड में खेला गया। खिताब न्यूजीलैंड ने जीता था। 2021 से शुरू हुई दूसरी चैम्पियनशिप में भारत और ऑस्ट्रेलिया टेबल की टॉप दो टीमें बनी हैं। इसलिए दूसरा फाइनल इनके बीच खेला जा रहा है।

बल्लेबाजी में ऑस्ट्रेलिया और इंडिया

4 कंगारू बल्लेबाजों ने 1000+ रन बनाए, भारत में ऐसा कोई नहीं - बैटिंग में ऑस्ट्रेलियाई टीम भारत से मजबूत नजर आ रही है। इस सीजन में कंगारू टीम के 4 बैटर्स ने 1000 से ज्यादा रन बनाए है, जबकि भारतीय खेमे का कोई भी बल्लेबाज 1000 रन के आंकड़े को पार नहीं कर सका।

टॉप स्कोरर्स में 2 ऑस्ट्रेलियाई, इंडिया का कोई नहीं - सीजन के टॉप-5 रन स्कोरर में भी 2 ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों के नाम हैं। इसमें उस्मान ख्वाजा (1608 रन) और मार्नस लाबुशेन (1509 रन) शामिल हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम के ओपनर उस्मान ख्वाजा हर पांचवीं पारी में सेंचुरी और चौथी पारी में हाफ सेंचुरी जमा रहे हैं।

पुजारा टॉप स्कोरर, हर 5वीं पारी में फिफ्टी जमाते हैं - भारत की ओर से टॉप स्कोरर चेतेश्वर पुजारा हैं, लेकिन इस चैंपियन के टॉप बैटर्स की लिस्ट में वो 19वें नंबर पर हैं। पुजारा ने 30 पारियों में एक सेंचुरी जमाई है। वे हर 5वीं पारी में फिफ्टी बना देते हैं।

भारत के खिलाफ टॉप-5 स्कोरर्स में 2 ऑस्ट्रेलियाई - वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप के इस सीजन में भारत के खिलाफ इंग्लैंड के जो रूट (737 रन) ने सबसे ज्यादा रन बनाए हैं। टॉप-5 की इस सूची में उस्मान ख्वाजा (333 रन) तीसरे और मार्नस लाबुशेन (244 रन) पांचवें नंबर पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के उस्मान ख्वाजा ने भारत के खिलाफ हर दूसरे मैच में फिफ्टी भी लगाई है। कंगारुओं के खिलाफ टॉप-5 बैटर्स की सूची में चार पाकिस्तानी बैटर्स के नाम हैं। अब्दुल्ला शफीक टॉप पर हैं। उन्होंने 397 रन बनाए हैं।

ओवल पर ऑस्ट्रेलिया के स्टीव का मौजूदा फॉर्म बेहतरीन, स्पिनर्स कंगारुओं की कमजोरी - ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ ओवल पर अब तक खेले 3 मैचों में 97.75 के बेहतरीन औसत से 391 रन बना चुके हैं। वे मार्नस लाबुशेन के साथ पिछले दिनों इंग्लैंड में ही काउंटी क्रिकेट भी खेल रहे थे। जिसका टीम को फायदा मिलेगा। ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों की कमजोरी स्पिन है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले टॉप 5 गेंदबाजों में अश्विन (25 विकेट) पहले, रवींद्र जडेजा (22 विकेट) दूसरे और श्रीलंकाई स्पिनर प्रबाथ जयसूर्या (12 विकेट) 5वें नंबर पर हैं।

तेज गेंदबाजी के आगे फंसते हैं इंडियन बैटर्स, टीम की बॉलिंग में मजबूती - भारतीय बल्लेबाजी की कमजोरी तेज गेंदबाजी है। भारत के खिलाफ सबसे ज्यादा विकेट तेज गेंदबाजों ने चटकाए हैं, हालांकि भारत के खिलाफ टॉप विकेट टेकर ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर नाथन लायन हैं। लायन के बाद भारत के खिलाफ सबसे ज्यादा विकेट 4 पेसर्स ने लिए, इनमें साउथ अफ्रीका और इंग्लैंड के 2-2 बॉलर्स हैं। टीम इंडिया में 5 पेसर्स हैं, जिनमें से 4 का खेलना तय माना जा रहा है। इनमें मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, शार्दूल ठाकुर और उमेश यादव चारों को ही इंग्लैंड में खेलने का एक्सपीरियंस है। इन्हीं बॉलर्स की मदद से भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ पिछली सीरीज में 2 टेस्ट मैच जीते थे।

गेंदबाजी में ऑस्ट्रेलिया और इंडिया

लायन टॉप पर, अश्विन का नंबर तीसरा - इस चैम्पियनशिप में 3 ऑस्ट्रेलियाई बॉलर्स ने 50 से ज्यादा विकेट लिए हैं। भारत से केवल एक रविचंद्रन अश्विन ही 50 विकेट के आंकड़े को पार कर सके। इस सीजन 83 विकेट लेने वाले ऑस्ट्रेलिया के नाथन लायन टॉप विकेट टेकर हैं। 61 विकेट लेकर अश्विन तीसरे नंबर पर हैं।

अश्विन 50+ विकेट लेने वाले इकलौते भारतीय - भारत की ओर से 50+ विकेट लेने वाले अश्विन इकलौते बॉलर हैं। कंगारू टीम की ओर से लायन (83 विकेट), पैट कमिंस (53 विकेट) और मिचेल स्टार्क (51 विकेट) ने 50+ विकेट लिए हैं।

अश्विन का स्ट्राइक रेट लायन से बेहतर, जडेजा के साथ 47 ऑस्ट्रेलियाई बैटर्स को आउट किया - स्ट्राइक रेट के मामले में भारतीय स्पिनर अश्विन नाथन लायन से बेहतर साबित हो रहे हैं। रविचंद्रन अश्विन हर 47.59 बॉल पर विकेट लेते हैं, जबकि लायन 62.87 बॉल पर विकेट चटकाते हैं। अश्विन ने वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप में जडेजा के साथ मिलकर 47 ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को आउट किया है। अश्विन ने 25 और जडेजा ने 22 ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों के विकेट लिए।

पाकिस्तान की निकली हेकड़ी, रिजेक्ट हुआ हाइब्रिड मॉडल, क्या टूर्नामेंट से बाहर हो सकता है पाक

नई दिल्ली।
एशिया कप में पाकिस्तान की ओर से प्रस्तावित हाइब्रिड मॉडल का श्रीलंका, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के समर्थन न करने के बाद अब पाकिस्तान के पास कोई ऑप्शन नहीं बचा है। मेजबान पाकिस्तान सितंबर में होने वाले एशिया कप से बाहर हो सकता है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के प्रमुख नजम सेठी द्वारा प्रस्तावित हाइब्रिड मॉडल के अनुसार पाकिस्तान को एशिया कप के 3 से 4 मैच का आयोजन अपने देश में करना था जबकि बाकी भारत से जुड़े मैचों का आयोजन किसी अन्य देश (न्यूट्रल स्थान) में किया जाना था।

हाइब्रिड मॉडल हुआ रिजेक्ट-

सुरक्षा के मुद्दे को लेकर भारत द्वारा पाकिस्तान की यात्रा करने से इंकार के बाद पाकिस्तान ने हाइब्रिड मॉडल का विचार पेश किया था, लेकिन अब श्रीलंका, बांग्लादेश और अफगानिस्तान ने भी कप को पाकिस्तान से बाहर आयोजित करने के बीसीसीआई के दबाव का समर्थन किया है।

जल्द होगी एसीसी की बैठक-

अब अगले महीने या इस महीने के अंत में केवल औपचारिकता के तौर पर एशियाई क्रिकेट परिषद के कार्यकारी बोर्ड सदस्य वर्चुअली या पूरी तरह से एक बैठक बुलाएंगे। पीसीबी अब इस बात को जानता है कि श्रीलंका, बांग्लादेश और अफगानिस्तान एशिया कप के लिए उनके हाइब्रिड मॉडल प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार सेठी पहले ही क्रिकेट मैनेजमेंट कमेटी के सदस्यों और संबंधित सरकारी अधिकारियों संपर्क में हैं कि अगर पाकिस्तान को घर में एशिया कप के किसी भी मैच की मेजबानी नहीं मिलती है तो पीसीबी का रुख क्या होगा। सेठी ने बार-बार एक बात को कहा कि अगर कप का आयोजन पाकिस्तान के अलावा किसी और देश में हुआ तो टीम टूर्नामेंट का हिस्सा नहीं बनेगी। पाकिस्तान के पास अब सिर्फ दो ऑप्शन है टूर्नामेंट को किसी दूसरे देश में खेले या हिस्सा न बने।

केरला ब्लास्टर्स ने अपनी महिला फुटबॉल टीम की गतिविधियों पर अस्थायी रूप से रोक लगाई

नई दिल्ली।
इंडियन सुपर लीग क्लब केरला ब्लास्टर्स ने अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) द्वारा क्लब पर लगाए गए वित्तीय प्रतिबंधों के कारण मंगलवार को अपनी महिला फुटबॉल टीम की गतिविधियों पर अस्थायी रोक लगाने की घोषणा की। एआईएफएफ ने केरला ब्लास्टर्स एफसी की उस अपील को खारिज कर दिया, जिसमें तीन मार्च को बेंगलुरू के खिलाफ आईएसएल प्लेऑफ मैच के दौरान उस पर चार करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया था। उन पर 10 मैचों का बैन लगा है। एआईएफएफ के फैसले के कुछ दिनों बाद, केरला ब्लास्टर्स ने अपनी महिला टीम के संचालन को रोकने के बारे में एक बयान जारी किया। केरला ब्लास्टर्स ने कहा, यह भारी मन के साथ है कि हमें अपनी महिला टीम के अस्थायी ठहराव की घोषणा करनी पड़ रही है। यह निर्णय फुटबॉल महासंघ द्वारा हमारे क्लब पर हाल ही में लगाए गए वित्तीय प्रतिबंधों के कारण आवश्यक है। जबकि हम महासंघ के अधिकार और निर्णयों का सम्मान करते हैं, हम हमारे क्लब के विभिन्न कार्यों पर पड़ने वाले प्रभाव पर हमारी निराशा को नकार नहीं सकते। क्लब ने कहा, एक बहुत ही उत्साहजनक पहले सीजन के बाद, जिसमें हमारी महिला टीम ने जबरदस्त परिणाम प्राप्त किए, इस साल क्लब की हमारी महिला टीम के लिए निवेश बढ़ाने की योजना थी। इन निवेशों में हमारी पुरुष टीम के साथ अपनी तरह का पहला विदेशी प्री-सीजन दौरा शामिल था, खिलाड़ियों का आदान-प्रदान, एक्सपोजर टूर और बहुत कुछ। हालांकि, वित्तीय प्रतिबंधों ने हमें एक दुर्भाग्यपूर्ण चुनौती पेश की है। एक क्लब के रूप में, हमें अधिक तात्कालिक उद्देश्यों और दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को प्राथमिकता देनी चाहिए।

ब्लास्टर्स ने यह भी कहा कि हम अपनी महिला टीम की गतिविधियों को तब तक जारी नहीं रख सकते जब तक कि इस मामले पर पूरी स्पष्टता नहीं हो जाती। उनकी गतिविधियों को रोकने का निर्णय वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर सावधानीपूर्वक विचार और मूल्यांकन के बाद किया गया है।

क्लब ने आगे उल्लेख किया कि यह एक अस्थायी झटका था, और महिला टीम को इस मामले को पूरी तरह से बंद करने पर बहाल किया जाएगा।

बयान में कहा गया है, यह उजागर करना महत्वपूर्ण है कि यह ठहराव अस्थायी है। हम इस मामले को पूरी तरह से बंद करने पर अपनी महिला टीम को बहाल करेंगे।

गगन नारंग शूटिंग अकादमियों ने राइफल कोच के रूप में अनुभवी पीटर सिदी को नियुक्त किया

पुणे।
गगन नारंग स्पोर्ट्स प्रमोशन फाउंडेशन (जीएनएसपीएफ), जो पूरे भारत में गन फॉर ग्लोरी शूटिंग अकादमी चलाता है, ने पांच बार के ओलंपियन और विश्व चैंपियनशिप में कई पदक जीतने वाले हंगरी के पीटर सिदी को अपने प्रमुख कार्यक्रम - प्रोजेक्ट लीप के लिए राइफल कोच के रूप में अपने साथ जोड़ा है। प्रोजेक्ट लीप 60 दिनों की एक बहु-चरणीय परियोजना है जिसमें निशानेबाजों को उनके कौशल का पोषण और परिशोधन करने और उन्हें उपलब्धि के उच्चतम स्तर तक ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है। ओलंपिक गोल्ड क्वेस्ट (ओजीक्यू) द्वारा समर्थित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम ने अब तक 95 अंतरराष्ट्रीय पदक, दो डीफ्लैम्पिक स्वर्ण पदक, पांच विश्व रिकॉर्ड, एक ओलंपियन (रिजर्व टीम में तीन के साथ) और एक पैरालिंपियन सहित अन्य उपलब्धियां हासिल की हैं। गन फॉर ग्लोरी के सह-संस्थापक और सीईओ पवन सिंह ने कहा, हम जीएफजी परिवार में पीटर सिदी का स्वागत करते हुए रोमांचित हैं। उनकी विशेषज्ञता और अनुभव निस्संदेह हमारे उच्च-प्रदर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। हमें विश्वास है कि हमारा सहयोग उत्कृष्टता का माहौल तैयार करेगा, जिससे हमारे एथलीट राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकेंगे। मंगलवार को एक विज्ञप्ति में सूचित किया गया कि सम्मानित कोच और मेंटर सिदी के साथ मिलकर जीएनएसपीएफ का लक्ष्य शूटिंग बिरादरी में उच्च-प्रदर्शन प्रशिक्षण के मानकों को फिर से परिभाषित करना है। सिदी के मार्गदर्शन में, उच्च-प्रदर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शामिल करता है जो तकनीकी दक्षता, मानसिक लचीलापन और शारीरिक कंडीशनिंग पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो निशानेबाजों को उनकी पूरी क्षमता तक शूटिंग कौशल विकसित करने में मदद करेंगे। सिदी, जिनके नाम पर कई विश्व कप खिताब, यूरोपीय चैम्पियनशिप जीत और एक विश्व रिकॉर्ड शामिल हैं, ने कहा, प्रोजेक्ट लीप के कोच के रूप में जीएनएसपीएफ से जुड़कर मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूं। गन फॉर ग्लोरी हमेशा निशानेबाजी प्रतिभा को बढ़ावा देने में सबसे आगे रहा है, और मैं उत्साही एथलीटों के साथ काम करने और उनके विकास में योगदान करने के लिए उत्सुक हूं।

साक्षी, विनेश, बजरंग के नौकरी जॉइन करने से खाप-किसान नाराज

जंतर-मंतर पर प्रदर्शन टाला; कहा- रेसलर-शाह की मुलाकात का पता तक नहीं चला

रेवाड़ी।
भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ चल रहे आंदोलन के बीच रेसलर्स विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया और साक्षी मलिक के रेलवे में नौकरी जॉइन करने से किसान और खाप नेता नाराज हो गए हैं। ये लोग कुरुक्षेत्र में महापंचायत करने वाले थे। अब इन्होंने 9 जून को जंतर-मंतर पर होने वाले प्रदर्शन को टाल दिया है। इन किसान नेताओं ने कुरुक्षेत्र की महापंचायत में अल्टीमेटम दिया था कि 9 जून तक बृजभूषण की गिरफ्तारी नहीं हुई तो वे जंतर-मंतर पर पहलवानों का फिर से प्रदर्शन शुरू कराकर आएंगे। पिछले दिनों दिल्ली पुलिस ने रेसलर्स को जंतर-मंतर से हटा दिया था। विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया और साक्षी मलिक ने गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के एक दिन बाद रेलवे में नौकरी जॉइन कर ली थी।

किसानों नेताओं ने हैरानी जताई, कहा- समझौते पर हम कुछ नहीं कर सकते - बीकेयू के नरेश टिकैत ने रेसलर्स के नौकरी पर लौटने पर हैरानी जताई। उन्होंने कहा, गृहमंत्री अमित शाह और पहलवानों के बीच क्या समझौता हुआ, मैं नहीं जानता, अगर उन्होंने खुद समझौते का फैसला ले लिया है तो इसमें हम कुछ नहीं कर सकते। बीकेयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने कहा, प्रस्तावित विरोध को रद्द कर दिया गया है। सरकार ने प्रदर्शनकारी पहलवानों से बातचीत शुरू कर दी है। अब पहलवानों और सरकार के बीच बातचीत के नतीजे के आधार पर आगे के विरोध के बारे में फैसला लिया जाएगा। बीकेयू नेता गौरव टिकैत ने कहा, अब पहलवान जो कॉल लेंगे, जिस तरह की बात पहलवान कहेंगे, उसका समर्थन किया जाएगा। जब उत्तर प्रदेश में सोरम पंचायत हुई थी, तब ही सरकारों के मैसेज आने शुरू हो गए थे कि इस मामले में बातचीत करनी है। उस दौरान यूनियन ने कहा था कि पहलवानों से बात की जानी चाहिए। मगर इसके बाद पहलवान अमित शाह से कब मिल कर आए, इसका नहीं पता लगा। वहीं अब विनेश फोगाट के गांव बलाली में सर्वखाप सर्वजातीय महापंचायत बुला ली गई है। यह महापंचायत 7 जून को होगी।

कोको गॉफ-रूड फ्रेंच ओपन के क्वार्टरफाइनल में: 55 साल की बिटरिज हदाद माइया ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वालीं पहली ब्राजीली महिला

पेरिस। फ्रेंच ओपन में अमेरिका की टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई हैं। वहीं मेंस सिंगल्स में नॉर्वे के कैस्पर रूड तीसरी बार ग्रैंड स्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। इनके अलावा विमेंस सिंगल्स में टूर्नामेंट में 14वीं सीड प्राप्त बिटरिज हदाद माइया 55 साल की उम्र में किसी ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वालीं पहली ब्राजीली महिला हो गई हैं। अमेरिकी खिलाड़ी कोको गॉफ पहले सेट में चोटिल होने के बावजूद मुकाबले में बनी रहीं और अंत में इसे जीत कर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। गॉफ को पहले सेट के दौरान घुटने में चोट लग गई थी। इस सेट में वह 5-2 से आगे चल रही थीं। अन्ना करोलिना शमीडलोवा ने वापसी करते हुए स्कोर को 5-5 कर दिया। इसके बाद वह फिसल कर गिर गईं। जिससे उनका दायां घुटना छिल गया। कुछ देर मैच मेडिकल टाइम के लिए रुका रहा। उन्होंने पट्टी बांध कर मैच में वापसी की और पहले सेट को 7-5 से जीत लिया। वहीं दूसरा सेट ने आसानी से 6-2 से जीतकर तीसरी बार फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने में सफल हुई। वहीं क्वार्टर फाइनल में उनका मुकाबला इगा स्वियातेक से होगा।

इस बारिश सेहत का कुछ ऐसे रखें ख्याल

गर्मी के मौसम के तुरंत बाद बारिश का मौसम आना जैसे बंजर जमीं पर पानी की बूंद गिरने जैसा होता है। गर्मी के बाद बारिश सबको अजीब सा सुकून देता है। बारिश में लोग भीगना पसंद है। मगर ज्यादा तर बीमारियां बारिश के आने के बाद आती हैं। तो किस तरह से इस बारिश के मौसम में रखें अपने सेहत का ख्याल आपको बतातें हैं। देश में जहां कई जगहों पर बारिश शुरू हो चुकी है वहीँ कई कोनो में लोग अभी बेसब्री से बारिश का इंतजार कर रहे हैं। तो इस तरह से सभी को मानसून एन्जॉय करने के साथ इसके साथ आने वाली बीमारियों का भी ख्याल रखना चाहिए। क्यों की मानसून जरूर ठंडक लाता है मगर साथ में वह अपने बहुत सारी बीमारियां भी लाता है।

खानपान का रखें ध्यान: बारिश के दिनों में बाहर का खाना सबको बहुत अच्छा लगता है मगर वहीँ खाना पेट की बिमारियों को जन्म देता है। बारिश में गलत खाना खाने से पीलिया, मलेरिया, टायफाइड, पेट व आंतों संबंधी बीमारियां, खांसी, जुकाम, जोड़ों में दर्द, त्वचा में इंफेक?शन, बुखार और फ्लू जैसी सकती है। इस तरह से इस बारिश जो भी आप खाते है उसे अपनी सेहत के अनुसार खाएं।

तुलसी और कड़ी पत्ते का प्राकृतिक क्लींजर

कड़ी पत्ते और तुलसी दोनों में एंटी-आक्सीडेंट होते हैं। जो आपकी त्वचा को इंफेक्शन और मुंहासों से बचाते हैं। साथ ही यह आपकी त्वचा को कोमल व नर्म बनाने के साथ पिग्मेंटशन (झांइयों) और झुर्रियों को कम करने में मदद करता है। इसके अलावा इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी और मॉश्चराइजिंग गुण भी होते हैं जिसे त्वचा पर लगाने से त्वचा में निखार आने लगता है।

रेड बर्थमार्क के कारण, निदान और इलाज

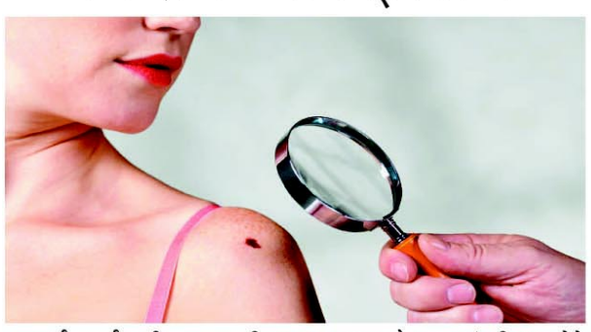

बर्थमार्क्स यानी जन्मजात निशान त्वचा पर मौजूद बदरंग निशान होते हैं। कई नवजात शिशुओं में लाल अथवा कुछ अन्य प्रकार के निशान होते हैं। आमतौर पर ये निशान जन्म के कुछ सप्ताहों के भीतर ही नजर आ जाते हैं। ये निशान त्वचा के करीब मौजूद रक्त वाहिनियों द्वारा बनते हैं। इन निशानों के बनने की बड़ी वजह त्वचा में पिग्मेंटशन के कारण रक्तवाहिनियों का अधिक निर्माण होता है।

कारण

आमतौर पर इन निशानों का मुख्य कारण किसी को नहीं पता। और साथ ही इन निशानों को होने से रोकने के लिए ही कुछ किया जा सकता है। बर्थमार्क्स के कारकों के बारे में भले ही अधिक जानकारी न हो, लेकिन इतना तो साफ है कि वाहिकीय समस्याओं से होने वाले बर्थमार्क्स अनुवांशिक नहीं होते। जानकार मानते हैं कि इसके पीछे त्वचा कोशिकाओं को प्रभावित करने वाले स्थानिक कारण अधिक उत्तरदायी होते हैं।

पोर्ट वाइन स्टेन

इन निशानों की मुख्य वजह रक्तवाहिनियों की चौड़ाई निर्धारित करने वाली प्रक्रिया में असंतुलन का होना है। परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र में निरंतर प्रवाहित होने वाला रक्त लाल अथवा बैंगनी हो जाता है। पोर्ट वाइन स्टेन इसके अलावा स्टर्ग-वेबर-सिंड्रोम और क्लिपल ट्रेनायूने सिंड्रोम के कारण भी हो सकता है।

निदान

रेड बर्थमार्क्स के निदान की प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि आखिर ये निशान नजर कैसे आते हैं। डॉक्टर इनका इलाज करने से पहले इनकी अच्छी तरह जांच करते हैं। बर्थमार्क्स की गहरी जांच करने के लिए डॉक्टर बॉयोप्सी, सीटी स्कैन और एमआरआई भी करने की सलाह दे सकता है।

इलाज

अधिकतर बर्थमार्क्स किसी प्रकार की परेशानी खड़ी नहीं करते और उन्हें किसी इलाज की जरूरत नहीं होती। हालांकि, कुछ रेड बर्थमार्क्स से परेशानी हो सकती है। कुछ निशान तो कैंसर का रूप भी ले सकते हैं। रेड बर्थमार्क्स बच्चे के थोड़ा बड़े होने के साथ ही गायब भी हो जाते हैं। बहुत कम निशान ही रक्तवाहिनियों के ट्यूमर में परिवर्तित हो सकते हैं। इन्हें हेमेन्गिओमस कहा जाता है। कुछ निशान ऐसे भी होते हैं, जो ठीक नहीं होते और स्थाई रूप से साथ रहते हैं।

हेमेन्गिओमस को इलाज करवाने की जरूरत तब पड़ती है, जब इनका असर आपके लुक पर पड़ता हो। इसके साथ ही अगर इससे आपको भावनात्मक तनाव अथवा दर्द होता हो, तो भी आपको इसका इलाज करवाना चाहिए। इतना ही नहीं अगर हेमेन्गिओमस के आकार, स्वरूप अथवा रंग में किसी प्रकार के बदलाव का आभास होने पर भी इलाज करवाया जाना चाहिए। हेमेन्गिओमस यदि बच्चे की आंख के करीब हो, तो उसका इलाज जरूर करवाना चाहिए, क्योंकि इसका असर उसके देखने की क्षमता पर पड़ सकता है।

बर्थमाक्स के आकार पर निर्भर करता है कि इसके इलाज में किस प्रकार की इलाज पद्धति को अपनाया जाए। इसके लिए लेजर ट्रीटमेंट से लेकर कॉस्मेटिक के अन्य तरीके भी आजमाए जा सकते हैं। इसके अलावा बर्थमार्क्स के निशान को छोटा करने क लिए दवाओं अथवा इंजेक्शन का भी प्रयोग किया जा सकता है।

बहुत ही दुर्लभ मामलों में बर्थमार्क्स का संबंध किसी अन्य बीमारी से होता है। लेकिन, कुछ मामलों में देखा गया है कि लिवर, फेफड़े, पेट अथवा अंत्राशय की बीमारियों के फलस्वरूप भी बर्थमार्क्स हो सकते हैं। यदि ऐसी कोई समस्या नजर आए, तो आपको डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

क्या 30 साल के बाद भी बढ़ सकती है लंबाई?

एक बार हड्डियां के बढ़ना रूकने के बाद, लंबाई को बढ़ाने की सीमा तय हो जाती है। फिर लंबाई को बढ़ना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि स्ट्रेचिंग की मदद से अपने पॉश्चर में सुधार कर अपनी लंबाई बढ़ा सकते हैं।

लड़कियों की लंबाई 11.5 वर्ष और लड़कों की लंबाई 13.5 वर्ष तक ही बढ़ती है। डॉक्टर के अनुसार, लड़कों को लड़कियों की तुलना में हड्डियों की ग्रोथ बंद होने से पहले लंबाई बढ़ाने का दो साल का लंबा समय मिलता है। लेकिन वयस्कों में लंबाई बढ़ाने के लिए स्ट्रेच एक अच्छा आइडिया है, क्योंकि यह रीढ़ की हड्डी में संकोचन को कम करता है। स्ट्रेचिंग से आपको पॉश्चर में सुधार करने और लंबाई की सीमा बढ़ाने में मदद मिलती हैं।

स्टेप 1

ताड़ासन को पर्वत योग मुद्रा भी कहते हैं। इस स्ट्रेच योग को करने के लिए सबसे पहले जमीन पर दरी बिछाकर सीधे खड़े हो जाएं। अपने दोनों पैर को आपस में मिलाकर और दोनों हथेलियों को अपने बगल में रखें फिर पूरे शरीर को स्थिर रखें और दोनों पैरों पर अपने शरीर का वजन सामान रखें। उसके बाद दोनों हथेलियों की अंगुलियों को मिलाकर सिर के ऊपर ले जाएं। हथेलियों सीधी रखें और सांस भरते हुए अपने हाथों को ऊपर की ओर खींचिए, जिससे आपके कंधों और चेस्ट में भी स्ट्रेच आएगा। इसके साथ ही पैरों की एड़ी को भी ऊपर उठाएं और पैरों की अंगुलियों पर शरीर का संतुलन बनाए रखिए। इस स्थिति में कुछ देर रहें। इस योगाभ्यास करते समय में पूरे शरीर में उपयुक्त रूप से स्ट्रेच महसूस होता है। योग जर्नल वेबसाइट के अनुसार यह मुद्रा आपको रीढ़ की हड्डी को सीधा करने में मदद करती है। सीधा खड़ा होना, गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव का विरोध कर आपकी लंबाई को 30 की उम्र के बाद भी बढ़ता है।

स्टेप 2

भुजंगासान को कोबारा पोज भी कहते हैं। इस आसान में चेहरे पर स्ट्रेच महसूस करते हुए अपनी उंगालियों को कंधों की तरफ और कोहनी को अपनी साइट में रखते हैं। साथ ही अपने शरीर के निचले हिस्से पर दबाव बनाए रखते हैं। अपनी बाहों को सीधा रखते हुए शरीर के ऊपरी हिस्से को ऊपर की तरफ और निचले हिस्से को जमीन पर रखते हैं। ऊपरी हिस्से को तब तक ही उठाते हैं, जितना की आप आराम से उठा सकें। अपनी रीढ़ में स्ट्रेच महसूस करें। सांस छोड़ते और 15 की गिनती करते हुए धीरे-धीरे अपने ऊपरी हिस्से को नीचे लाएं। इससे आपके चेस्ट और पेट की मसल्स में स्ट्रेच होगा। इसको नियमित करने से लंबाई बढाई जा सकती है। इस मुद्रा को नियमित रूप से करने लंबाई बढ़ाने में मदद मिलती है क्योंकि इससे आप बैठते, उठते और खड़े होते समय रीढ़ की हड्डी लंबा बनाये रखने में मदद मिलती है।

स्टेप 3

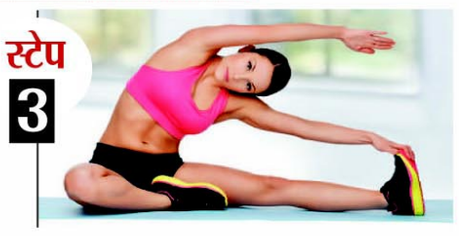

शॉवर लेने के बाद भी नियमित रूप से स्ट्रेच करें क्योंकि इस समय आपकी मसल्स गर्म होती है। पांच मिनट एक ही जगह चलने के बाद धीरे-धीरे अपने दोनों हाथों को हिलाएं और पैरों को ढीला छोड़कर तनाव को रिलीज करें। फिर एक समय में एक हाथ को ऊपर की तरफ स्ट्रेच करें। अब अपने पैर की उंगलियों से लेकर हिप्स और कंधे तक बॉडी की एक साइड को स्ट्रेच करें। फिर दूसरी तरफ से ऐसा ही करें और तीन से पांच बार दोहराएं।

स्टेप 4

क्लॉस या होम एक्सरसाइज वीडियो के माध्यम से योग या पिलेट्स करें, जिससे आपके पूरे शरीर का स्ट्रेच हो सके। योग या पिलेट्स को नियमित करने अच्छी मुद्रा को एक आदत बनाने में मदद मिलती है और मसल्स को मजबूती मिलती है जिससे आपकी रीढ़ और अंगों को उचित एलाइनमेंट मिलती है। नियमित रूप से स्ट्रेचिंग रीढ़ की हड्डी पर संकोचन को कम करने में मदद करता है जिससे आप 30 साल की उम्र के बाद भी लंबाई बढ़ा सकते है। हालांकि इस बात के कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

टिप्स

- योग के सही मुद्रा एक योग्य योग प्रशिक्षक की मदद से सीखें।
- कई स्वास्थ्य केन्द्र, योग केंद्र और सामुदायिक कॉलेज योग शिक्षा प्रदान करते हैं।
- लंबाई बढ़ाने का दावा करने वाले प्रोडक्ट के बारे में पूरी जानकारी लें।
- ऐसा कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि, सप्लीमेंट की मदद से किसी भी वयस्क की लंबाई को स्थायी रूप से बढ़ाया जा सकता है।

स्किन के लिए वरदान है एक कप चाय

ज्यादातर हम सभी के दिन की शुरूआत एक कप चाय से होती है। चाय से थकान दूर होती है और ताजगी आ जाती है। दिन भर की थकान को दूर करने के लिए भी एक कप चाय मिल जाए तो क्या ही बात। लेकिन अक्सर चाय और कॉफी को सेहत के लिए नुकसानदायक माना जाता है। कहा जाता है ज्यादा चाय पीने से काले हो जाते हैं, लेकिन ये सही नहीं है। चाय स्वास्थ्यवर्धक भी होती है। ये आपको ताजगी देने के साथ-साथ खूबसूरती बढ़ाने में भी मदद करती है, क्योंकि इसमें प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं।

स्किन बनाए हेल्दी

हेल्दी स्किन यानी नम त्वचा। शरीर में नमी बनाए रखने के लिए पर्याप्त लिक्विड लेना जरूरी है। इसमें सभी तरह की चाय शामिल हो सकती है, क्योंकि गर्मी के दिनों में शरीर को ज्यादा पानी की जरूरत होती है। लिक्विड लेने से स्किन फ्रेश रहती है और पानी की कमी नहीं होती है।

ग्रीन टी

अगर आपकी स्किन रूखी और बेजान हो गई है तो ठंडी ग्रीन टी अपने चेहरे पर छिड़कें। ये एक बेहतरीन मॉइस्चराइजर का काम करती है। इससे आपकी स्किन तरोताजा हो जाएगी और चेहरा साफ व ग्लोइंग लगेगा।

डार्क सर्कल

दरअसल चाय में कैफीन होता है, जो आपके ब्लड वेसल को सिकुड़ने में मदद करता है। नींद पूरी न होने या अन्य कारणों से अगर आप की आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स पड़ गए हैं या सूजन आ गई है तो टी बैग इसे सही करने में आपकी मदद करेगा। उसे फ्रिज में ठंडा होने के लिए रख दें। ठंडा होने पर उसे आंखों के नीचे रखें। इससे आंखों की थकान दूर होती है।

पैरों की बदबू से छुटकारा

पैरों में बदबू आने पर अगर आप डीओ का इस्तेमाल करती है तो ऐसा न करें। इसके लिए आप उबली हुई ब्लैक टी के मिश्रण में अपने पैर डुबाएं। ये एंटी बैक्टीरियल होती है, जो आपके पैरों में आ रहे पसीने को रोकती है। इससे पैरों में बदबू नहीं आती है।

बाल बनाए घने

ब्लैक टी बाल गिरने की समस्या से निजात दिलाती है। अगर आप अपने बालों को घना करना चाहती हैं तो उन्हें ब्लैक टी और ग्रीन टी से धोएं। वहीं ग्रीन टी बालों को बढ़ने में मदद करती है। ठंडी की हुई चाय को बालों पर डालें और उसे 10 मिनट तक रखें। इसके बाद अपने बालों को शैंपू और कंडीशनर से धो लें।

तकनीकी दक्षता कौशल ही नहीं बल्कि एक जरूरत

...तो कितने 'टैक स्मार्ट' हैं आप

आज की दुनिया का हर पहलू तेजी से इंटरनेट से जुड़ता जा रहा है। सोशल नैटवर्किंग वेबसाइट्स की लोकप्रियता भी इनमें शामिल हो चुकी है। ऐसे में कंपनियों का आधुनिक तकनीकों तथा रुझानों से भली प्रकार अवगत कर्मचारियों की तलाश करना स्वाभाविक हो गया है।

ऐसे कर्मचारियों को अधिक महत्व

जानकार कहते हैं कि इन दिनों संस्थान तकनीकी रूप से सक्षम कर्मचारियों का महत्व समझते हैं और वे अपने यहां नियुक्तियों के लिए आवेदन करने वाले कर्मचारियों में संबंधित कौशल की अपेक्षा भी रखते हैं। कंपनियां मानती हैं कि कर्मचारियों में तकनीकी समझ को ग्रहण करने की कुदरती खूबी होनी चाहिए तभी वे भविष्य में कंपनी में या कामकाज में होने वाले तकनीकी विकास के साथ कदम से कदम मिला कर कम्पनी के हित में कार्य कर सकेंगे। वैसे भी हर कंपनी अपनी प्रतियोगी कंपनी से आगे रहने की कोशिश करती है, जिसके लिए उसके कर्मचारियों में गहन तकनीकी ज्ञान होना अनिवार्य हो जाता है। इतना ही नहीं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों में तो यह कौशल और भी जरूरी है।

बेहतर ढंग से दे सकते हैं अंजाम...

आज के दौर में तकनीकी दक्षता कौशल ही नहीं, एक जरूरत बन चुकी है। यह भी माना जाता है कि आज के दौर में अच्छा प्रदर्शन तथा करियर में तरक्की के लिए तकनीकी दक्षता बेहद महत्वपूर्ण है। तकनीकी रूप से सक्षम व्यक्ति अपने काम को और अधिक बेहतर ढंग से अंजाम दे सकता है जो उसके साथ-साथ कम्पनी के लिए भी लाभदायक स्थिति साबित होती है। यह सवाल भी उठ सकता है कि भला कोई कंपनी किस तरह से किसी के टीएसक्यू का आकलन लगा सकती है। इसके लिए इंटरव्यू के दौरान पूछे जाने वाले सवालों से ही प्रार्थी की तकनीकी दक्षता तथा तकनीकों से उसके लगाव के बारे में काफी कुछ पता चल सकता है। अंत में निष्कर्ष यही निकलता है कि आज के प्रतियोगी दौर में सफल होना है तो युवाओं को नवीनतम तकनीक के प्रति सजग रहते हुए अपने 'टैक-स्मार्ट क्वोशन्ट' को उम्दा बनाए रखना चाहिए।

रेसिपी

मैंगो केक

आइए बनाएं कुकर में मैंगो केक

अब आम का सीजन है तो मैंगो केक खाने का मन तो करेगा ही। पर लाइट नहीं आ रही ओवन कैसे चलेगा। ओफ्हो परेशानी क्या है हम बताते हैं कैसे बनाएं प्रेशर कुकर में मैंगो केक।

सामग्री

एक बड़ा प्रेशर कूकर जिसमें बेकिंग पैन समा जाए, एक बेकिंग पैन, 1 बटर पेपर, मैदा 1 कप, आम की प्यूरी आधा कप सा फिर एक टेबल स्पून मैंगो सीरप, कन्डेन्स्ड मिल्क 1/2 कप, पाउडर चीनी आधा कप, दूध आधा कप, मक्खन 1/3 कप, काजू कटे हुए 2 टेबल स्पून, किशमिश 2 टेबल स्पून, बेकिंग पाउडर1छोटी चम्मच, बेकिंग सोडा 1/4 छोटी चम्मच, आप आम को काट कर उसका पल्प निकाल कर और उसे फैंट कर भी प्यूरी बना सकते हैं।

विधि

मैदा में बेकिंग पाउडर और बेकिंग सोडा डालकर मिक्स कर लीजिए और 2 बार अच्छी तरह छान लीजिए। दूसरे बड़े प्याले में मक्खन, आम का पल्प/प्यूरी और कन्डेन्स्ड मिल्क डालकर अच्छी तरह फैट कर मिक्स कर दीजिए, पाउडर चीनी मिलाकर और अच्छी तरह मिक्स कर लीजिए। काजू और किशमिश के डंठल हटाकर कपड़े से पोंछ लीजिए। जिस कन्टेनर में केक बेक उसमें बटर या घी लगाकर चिकना कर लीजिए। बटर पेपर बर्तन के तले के आकार का काट लीजिए और तले में पेपर डालकर उसके ऊपर भी थोड़ा बटर डालकर चिकना कर लीजिए। आम का पल्प, कन्डेन्स्ड मिल्क में मैदा और बेकिंग पाउडर मिश्रण को डालकर अच्छी तरह गुठलियां खत्म होने तक मिलाइए। मिश्रण में दूध भी अच्छी तरह मिला दीजिए। काजू और किशमिश भी मिला दीजिए। ग्रीज किया हुआ केक कन्टेनर लीजिए। इसमें बर्तन में थोड़ा घी डालिए। फिर थोड़ी सी मैदा डालकर बर्तन को इस तरह हिलाइए कि उसके ऊपर पतली सी मैदा की परत बन जाए। उसमें मिश्रण डालिए और खटखटा कर एक सार कर लीजिए। अब क्योंकि कुकर में केक बनाने के लिए केक कन्टेनर का तला कुकर के तले से नहीं लगना चाहिए नहीं तो केक नीचे से जल सकता है। इसके लिए कुकर के अन्दर तले में एक कटोरी नमक फैला देते है। नमक गरम होकर ओवन की तरह तापमान भी बनाए रखता है। कुकर के अन्दर एक कटोरी नमक डालने के बाद इसे तेज आग पर दो मिनट के लिए रख दीजिए और केक कन्टेनर को पहले से गरम किए हुए कुकर में रखिए। कुकर के ऊपर ढक्कन लगाकर बन्द कर दीजिए। ढक्कन पर सीटी मत लगाइए। केक को बिल्कुल धीमी आग पर 40-50 मिनट तक पकाइए। इसके बाद केक को चैक कर लीजिए। केक के अन्दर चाकू डालने से मिश्रण चाकू पर लग कर आ रहा है तो केक को और बेक कीजिए। कुछ देर बाद दोबारा टैस्ट कीजिए केक में चाकू गड़ा कर देखिए यदि चाकू से केक नहीं चिपकता तो आपका केक बन गया है। कुकर को केक कन्टेनर सहित अच्छी तरह ठंडा होने दीजिए। ठंडा होने पर केक के किनारों से चाकू घुमाकर केक को बर्तन के किनारों से अलग कर लीजिए अब हल्के से ठोक कर केक को प्लेट में निकाल लीजिए। लीजिए आपका प्रेशर कूकर मैंगो केक तैयार है।

ब्रेन फूड बनाएगा आपके दिमाग को और तेज

आमतौर पर हमेशा हमारा जोर ऐसे खाने पर रहता है, जिससे हम अपने दिमाग को और भी तेज बना सकें। ऐसे में हम ड्राई फ्रूट्स खाने पर ज्यादा जोर देते हैं। इसके अलावा दूध का भी लोग खूब इस्तेमाल करते हैं। मगर शायद आपको नहीं मालूम कि दिमाग के लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद कौन सी चीज होती है? तो आइए आज हम आपको बताते है उस ब्रेन फूड के बारे में, जिससे आप अपने दिमाग को और भी तेज बना सकते हैं।

डीजेनरेशन को कम करता है

यदि भोजन की दिखावट और यह शरीर के लिए क्या करता है, इन दोनों में कोई संबंध है तो अखरोट जिसे ब्रेन फूड कहा जाता है, वह इस मामले में सबसे पहले आता है। विशेषज्ञों के अनुसार मानवीय दिमाग को उच्च क्वालिटी फैट्स जैसे ओमेगा थ्री फैटी एसिड्स की जरूरत होती है ताकि यह सही ढंग से काम कर सके। अखरोट में नाड़ी-तंत्र की रक्षा करने वाले कई यौगिक शामिल होते हैं जैसे विटामिन ई, फोलेट, मैलाटोनिन, ओमेगा-3 फैटी एसिड्स तथा एंटी ऑक्सीडैंट्स। यह सब उम्र बढ़ने के साथ-साथ कोग्नीटिव लाइन की डीजेनरेशन को कम करने के लिए जाने जाते हैं।

बढ़ाता है मैलाटोनिन का स्तर

इनके साथ ही मैगनीका, कॉपर, आयरन, फास्फोरस, मैगनीशियम तथा कैल्शियम भी अखरोटों में पाए जाते हैं जो रक्त में मैलाटोनिन के स्तर को बढ़ाने में सहायक होते हैं। मैलाटोनिन का स्तर शरीर में निद्रा को नियंत्रित करने वाले हार्मोन्स का मुख्य कारक है। अच्छी नींद यकीनन अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। इस बारे में जानकार कहते हैं। अधिकतर मेवों की तरह अखरोट कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम करने तथा हृदय के स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक होता है। प्रतिदिन 3 या 4 अखरोटों का सेवन आपके शरीर के लिए बहुत जरूरी है। इन्हें रात भर भिगो कर रखा जाए और फिर इनका सेवन किया जाए।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए पी.जी. इंडिया लिमिटेड एमआईई, कालापहाड़, गुवाहाटी-16 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**